राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

10 विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा से मिलीं वित्त मंत्री सीतारमण...

मंकेश अबानी की भारत डील चढ़ गई परवान तो बड़े-बड़ो का बंध जाएगा बोरिया बिस्तर... 10

वर्ष : 12 | अंक : 191 | पटना, शुक्रवार, 25 अक्टूबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 32.0°C
न्यूनतम तापमान 23.0°C

बाजार

सोना 75,920

चांदी 91,900

सेंसेक्स 83,584

निफ्टी 25,698

संक्षिप्त खबरें

आपदाओं के जोखिम को कम करने के लिए टीआईएसएस से करार

पटना। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य में आपदा जोखिम को कम करने के लिए टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई के साथ करार किया है। टीआईएसएस आपदा अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान है। गुरुवार को बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और टीआईएसएस, मुंबई के बीच, आपदा जोखिम न्यूनीकरण और प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए तथा बिहार में बाढ़, बिजली गिरने, सूखा, आग और अन्य आपदाओं के जोखिम को देखते हुए आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में क्षमतावर्धन के लिए एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। प्राधिकरण के सचिव मीनेन्द्र कुमार और टीआईएसएस की प्रोफेसर जैकलीन जोसफ के बीच इस समझौता ज्ञापन का औपचारिक आदान-प्रदान प्राधिकरण के सभाकक्ष में हुआ। इस अवसर पर माननीय उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत, माननीय सदस्य श्री पी. एन राय, कौशल किशोर मिश्र, नरेंद्र सिंह, प्रकाश कुमार सहित प्राधिकरण के वरिष्ठ अधिकारी और टीआईएसएस के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।एमओयू के तहत, टीआईएसएस और बीएसडीएमए आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में ज्ञान साझा करेंगे। इसका उद्देश्य राज्य में आपदा प्रबंधन की क्षमताओं को सुदृढ़ करना और बाढ़, बिजली गिरने, सूखा, आग और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के जोखिम को कम करना है।शोध विषय बैंक का निर्माण करेंगे

टीआईएसएस और बीएसडीएमए संयुक्त रूप से शोध विषय बैंक का निर्माण करेंगे, जिसमें संबंधित शोध विषयों पर कार्य किया जाएगा। एक शिक्षण कार्यक्रम तैयार करेगा, जिसमें प्रतिभागियों को शोध के डिजाइन और कार्यान्वयन में मार्गदर्शन मिलेगा। इस समझौते के तहत समन्वय और निगरानी प्रणाली भी स्थापित की जाएगी, जिसके अंतर्गत टीआईएसएस की एक कोर टीम पटना में कार्य करेगी। यह साझेदारी राज्य में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधान और समाधान प्रस्तुत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बीएसडीएमए और टीआईएसएस का यह संयुक्त प्रयास राज्य के नागरिकों की सुरक्षा और आपदा प्रबंधन को और सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

अयोध्या से सीतामढ़ी तक 4553 करोड़ की लागत से होगा रेल लाइन का दोहरीकरण

सीएम ने पीएम का जताया आभार

नई दिल्ली/एजेंसी। अयोध्या से मॉ सीता की जन्मस्थली सीतामढ़ी तक 4553 करोड़ रुपये की लागत से लगभग 256 किलोमीटर की रेल लाइन के दोहरीकरण का फैसला केन्द्रीय कैबिनेट की बैठक में लिया गया है। इसके लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया है।

पांच वर्षों में पूरा किया जायेगा :

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने बिहार के लिए रेल मंत्रालय की 4553 करोड़ रुपये की कुल

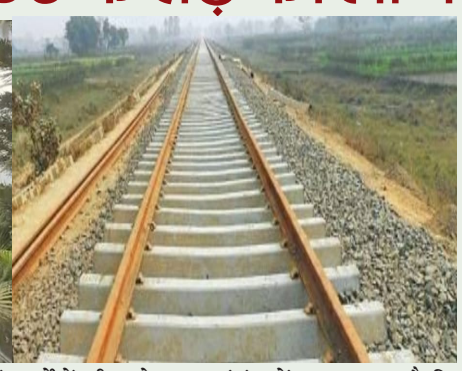

अनुमानित लागत वाली परियोजना को मंजूरी दी है। इस परियोजना के तहत नरकटियागंज-रक्सौल-सीतामढ़ी-दरभंगा और सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुर खंड का दोहरीकरण किया जायेगा, जो 256 किलोमीटर लंबा है। केंद्रीय कैबिनेट की बैठक के अनुसार इस परियोजना को पांच वर्षों में पूरी करने का निर्देश जारी किया गया है।

नेपाल, पूर्वोत्तर भारत और सीमावर्ती क्षेत्रों से परिवहन-संपर्क होगा मजबूत :

इस संबंध में बताया गया है कि नरकटियागंज-रक्सौल-सीतामढ़ी-दरभंगा और सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुर खंड के दोहरीकरण से नेपाल, पूर्वोत्तर भारत और सीमावर्ती क्षेत्रों से परिवहन-संपर्क मजबूत होगा और मालगाड़ियों के साथ-साथ यात्री रेलगाड़ियों की आवाजाही में सुविधा होगी। इसके परिणामस्वरूप, क्षेत्र का सामाजिक और आर्थिक विकास होगा। मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना दो आकांक्षी जिलों (सीतामढ़ी और मुजफ्फरपुर) में परिवहन-संपर्क सुविधा बढ़ाएगी, जिससे लगभग 388 गांवों और लगभग 9 लाख आबादी को सेवा प्राप्त होगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने प्रधानमंत्री को इसके लिए आभार जताया है।

अयोध्या से सीतामढ़ी तक रेलवे लाइन के दोहरीकरण का फैसला स्वागतयोग्य : नीतीश

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरुवार को केन्द्रीय कैबिनेट द्वारा अयोध्या से मॉ सीता की जन्मस्थली सीतामढ़ी (पुनौरा धाम) तक रेलवे लाइन के दोहरीकरण के फैसले का स्वागत किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 22 सितंबर 2024 को पत्र के माध्यम से मैंने प्रधानमंत्री से मॉ सीता की जन्मस्थली सीतामढ़ी (पुनौरा धाम) हेतु रेल सम्पर्कता के संबंध में अनुरोध किया था। अयोध्या से मॉ सीता की जन्मस्थली सीतामढ़ी तक 4,553 करोड़ रुपये की लागत से लगभग 256 किलोमीटर की रेल लाइन के दोहरीकरण का फैसला केन्द्रीय कैबिनेट की बैठक में लिया गया है। यह फैसला स्वागतयोग्य है। इस रेल मार्ग के बन जाने से श्रद्धालुओं को अयोध्या के साथ ही मॉ सीता की जन्मस्थली पुनौरा धाम आने में सुविधा होगी। इसके लिये मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त किया है।

सीएम ने पंचायती राज विभाग की विभिन्न योजनाओं का किया उद्घाटन एवं शिलान्यास

जून 2025 तक सभी पंचायतों में पंचायत सरकार भवनों का निर्माण पूरा करायें : नीतीश

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 1 अणे मार्ग स्थित 'संकल्प' में रिमोट का बटन दबाकर पंचायती राज विभाग के अंतर्गत 7160 करोड़ रुपये की लागत की 2615 पंचायत सरकार भवन एवं राज्य पंचायत संसाधन केंद्र, सोनपुर के भवन का शिलान्यास किया। साथ ही 13 जिला पंचायत संसाधन केंद्रों, 65 पंचायत सरकार भवन, ई-ग्राम कचहरी कोर्ट मैनेजमेंट सिस्टम तथा जिला परिषद् पोर्टल का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुएमुख्यमंत्री ने कहा कि बहुत खुशी की बात है कि आज 2615 पंचायत सरकार भवनों का शिलान्यास किया गया है। हमारा शुरू से ही 'पंचायत सरकार भवन' बनाने पर जोर है। हमारा कॉन्सेप्ट (विचार) है कि पंचायती राज संस्थाओं में वैसी व्यवस्था हो जो राज्य सरकार की होती है, इसलिए हमने इन भवनों को पंचायत भवन न कहकर 'पंचायत सरकार भवन' कहा है। हमने प्रत्येक ग्राम पंचायत में 'पंचायत सरकार भवन' बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने कहा कि शुरू में 330 'पंचायत सरकार भवन' बनाये गये। आज 'पंचायत सरकार भवन' के शिलान्यास के बाद राज्य के 8053 पंचायत भवनों में से 6858 भवन स्वीकृत कर दिये गए हैं। इनमें से 1548 पूर्ण हो गये हैं एवं शेष निमार्णाधीन हैं। आज के कार्यक्रम में 65 पंचायत सरकार भवनों का उदघाटन भी किया गया है। उन्होंने कहा कि अब बचे हुए 1195 पंचायत सरकार भवनों के लिए उपयुक्त भूमि की तलाश की जा रही है। जिला पदाधिकारियों को आदेश दिया गया है कि संबंधित ग्राम पंचायत के किसी भी गांव में उपयुक्त भूमि चिन्हित कराकर वहां पंचायत सरकार भवन का निर्माण तुरंत शुरू करायें। पंचायत सरकार भवन में केवल पंचायत से जुड़ा काम ही नहीं होता है बल्कि दूसरे विभागों का भी काम होता है। पंचायत सरकार भवन बन जाने से लोगों को काफी सहूलियत होगी। पंचायत सरकार भवनों की छत पर सोलर प्लेट लगवाएं इससे बिजली के खर्च में बहुत बचत होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जून, 2025 तक सभी पंचायतों में 'पंचायत सरकार भवनों का निर्माण पूर्ण करायें। सभी पंचायत सरकार भवन का रख-रखाव बेहतर ढंग से किया जाए। जिला स्तर पर भी आज 13 जिला पंचायत संसाधन केन्द्रों का उद्घाटन किया गया है। सोनपुर में राज्य स्तरीय संसाधन केन्द्र का शिलान्यास भी किया गया है। उन्होंने कहा कि सात निश्चय-2 के तहत अनेक योजनाओं का काम जारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में सोलर स्ट्रीट लाईट लगाने का काम वर्ष 2021 से ही तेजी से चल रहा है। अनेक वार्डों में सोलर स्ट्रीट लाईट लग गई है। हर वार्ड में औसतन 10-10 सोलर स्ट्रीट लाईट लगाई जा रही है। बड़े वार्ड एवं सार्वजनिक स्थलों हेतु आवश्यकता होने पर हर पंचायत में 10 के अतिरिक्त सोलर लाईट लगाने की व्यवस्था की गयी है। सोलर स्ट्रीट लाईट से गाँव में रातभर रोशनी मिलती रहेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरे राज्य में 109321 वार्ड है जिसमें 1175740 स्ट्रीट लाईट लगाने का लक्ष्य है। आज 3 लाख 75 हजार सोलर स्ट्रीट लाईटों का लोकार्पण किया जा रहा है। अब शेष बचे 8,00,740 स्ट्रीट लाईट लगाने का काम किया जा रहा है जिसे मार्च, 2025 तक पूरा करें। पहले की सरकार में कुछ नहीं किया गया। हमने बिजली के क्षेत्र में काफी काम कराया है। हर घर तक बिजली पहुंचा दी गई है और लोगों को इसका लाभ मिल रहा है।

सोलर स्ट्रीट लाईट लगाने का काम मार्च 2025 तक पूरा करें

मुख्यमंत्री ने कहा कि त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत जिला परिषद के तहत जिला परिषद अध्यक्ष एवं जिला परिषद के सदस्यों द्वारा तथा प्रखंड स्तर पर, पंचायत समिति के तहत प्रखंड प्रमुख एवं पंचायत समिति सदस्यों द्वारा एवं पंचायत स्तर पर ग्राम पंचायत के तहत मुखिया एवं वार्ड सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रकार के सुझाव एवं समस्याओं के बारे में सूचना हमारे पास पहुंची है। इन सुझावों एवं समस्याओं की समीक्षा कर आवश्यक कार्य करने का निर्देश दिया गया है। आज सभी पंचायत प्रतिनिधियों से अनुरोध करता हूँ कि सभी पंचायत सरकार भवन एवं सोलर स्ट्रीट लाईट को मार्च 2025 तक पूरा करने में आप सहयोग देंगे। सभी पंचायत प्रतिनिधियों को राज्य सरकार का पूरा सहयोग मिलता रहेगा। आपकी समस्याओं एवं सुझावों पर राज्य सरकार गौर करेगी। इस अवसर पर पंचायती राज विभाग को विशेष तौर पर बधाई देता हूं। कार्यक्रम के दौरान पंचायती राज विभाग के कार्यों पर आधारित एक लघु वृत्त चित्र प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री को पंचायती राज विभाग के अपर मुख्य सचिव मिहिर कुमार सिंह ने हरित पौधा भेंटकर उनका स्वागत किया।

ये रहें मौजूदः

कार्यक्रम को उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, पंचायती राज मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता, भवन निर्माण मंत्री जयंत राज एवं पंचायती राज विभाग के अपर मुख्य सचिव मिहिर कुमार सिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, विकास आयुक्त प्रत्यय अमृत, शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के सचिव अनुपम कुमार, भवन निर्माण विभाग के सचिव कुमार रवि, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग के सचिव दिवेश सेहरा, पंचायती राज विभाग के निदेशक आनंद शर्मा, पंचायती राज विभाग की अपर सचिव प्रीति तोगडिया उपस्थित थीं जबकि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सांसदगण, विधायकगण, त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था के जनप्रतिनिधिगण, थे।

एशियन डेवलपमेंट बैंक से वित्तपोषित योजनाए ससमय पूर्ण हों : विजय

भूमि अधिग्रहण एवं वन क्षेत्र में निर्माण का शीघ्र होगा समाधान

प्रात : किरण

पटना। उप मुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री विजय कुमार सिन्हा को एशियन डेवलपमेंट बैंक के प्रतिनिधि जागीर कुमार ने बिहार में प्रगतिशील योजनाओं की स्थिति से अवगत कराया। बैठक में अभियंता प्रमुख एवं बीएसआरडीसीएल के मुख्य महाप्रबंधक उपस्थित रहे। उप मुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री द्वारा प्रत्येक प्रगतिशील परियोजनाओं की समीक्षा की गई और योजनाओं को ससमय पूर्ण करने का निदेश दिया गया। बिहार नई गंगा पुल परियोजना के अन्तर्गत आनेवाली सभी योजनाओं को जुन-2025 तक पूर्ण करने का निदेश दिया गया है। एशियन डेवलपमेंट बैंक के प्रतिनिधि द्वारा निविदा की एक नई प्रणाली की जानकारी उप मुख्यमंत्री -सह- पथ निर्माण मंत्री को दी गई, जो अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है। जून-2025 तक पटना से राघोपुर, मेहनार से चकसिंकदर, चकसिंकदर के पास आरओबी का निर्माण आदि योजनाओं को पूर्ण करने का निदेश दिया गया है। एसएच-98 अन्तर्गत कटिहार से बलरामपुर तक पथ निर्माण में 43 किलोमीटर की भूमि में भूमि अधिग्रहण की समस्या से उप मुख्यमंत्री को अवगत कराया गया। उप मुख्यमंत्री ने बताया कि कुछ योजनाऐं भूमि अधिग्रहण की समस्या एवं वन क्षेत्र में आने के कारण समय पर पूर्ण नही पा रही है। इस संबंध में राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग तथा वन एवं पर्यावरण विभाग के साथ समन्वय स्थापित कर कार्य किया जायेगा। उप मुख्यमंत्री ने बताया कि एशियन डेवलपमेंट बैंक को प्रतिनिधि मंडल नवम्बर माह में बिहार का भ्रमण करेगा। प्रतिनिधि मंडल के साथ आगामी योजनाओं पर चर्चा की जायेगी। उप मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य में सुगत यातायात हमारी प्राथमिकता है और इसके हर संभव प्रयास किये जा रहे है।

तीन राज्यों पर ध्वस्तीकरण संबंधी आदेश की अवमानना के आरोप वाली याचिका पर सुनवाई से न्यायालय का इनकार

नई दिल्ली/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को उस याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया जिसमें उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के प्राधिकारियों पर संपत्तियों के ध्वस्तीकरण संबंधी उसके आदेश की अवमानना का आरोप लगाया गया था। न्यायमूर्ति बी आर गवई, न्यायमूर्ति पी के मिश्रा और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि वह याचिकाकर्ता की याचिका पर विचार करने की इच्छुक नहीं है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कथित कृत्य से जुड़ा नहीं है। पीठ ने कहा, हम भानुमती का पिटारा नहीं खोलना चाहते। अदालत ने कहा कि वह संपत्तियों के ध्वस्तीकरण से प्रभावित लोगों की सुनवाई करेगी। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया कि हरिद्वार, जयपुर और कानपुर में प्राधिकारियों ने उच्चतम न्यायालय के उस आदेश की अवमानना करते हुए संपत्तियों को ध्वस्त कर दिया, जिसमें कहा गया था कि उसकी अनुमति के बिना ध्वस्तीकरण नहीं किया जाएगा। शीर्ष अदालत ने इससे पहले कई याचिकाओं पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था, जिसमें यह दलील दी गई थी कि कई राज्यों में अपराध के आरोपियों की संपत्तियों सहित अन्य संपत्तियों को ध्वस्त किया जा रहा है। उच्चतम न्यायालय ने 17 सितंबर के अपने आदेश में प्राधिकारियों को उसकी इजाजत के बिना आपराधिक मामलों में आरोपियों की संपत्ति समेत अन्य संपत्तियों को एक अक्टूबर तक ध्वस्त नहीं करने का निर्देश दिया था। शीर्ष अदालत ने कहा था कि यह रोक तब तक जारी रहेगी जब तक वह मामले में निर्णय नहीं करती। हालांकि उसने स्पष्ट किया था कि उसका आदेश सार्वजनिक सड़कों, फुटपाथों, रेलवे लाइन या जलाशयों जैसे सार्वजनिक स्थानों पर बने अनधिकृत ढांचों पर लागू नहीं होगा।

सुरक्षाबलों के वाहन पर आतंकी हमलाः दो जवान बलिदान, दो पोर्टर की मौत

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उत्तरी कश्मीर में उड़ी सेक्टर के अंतर्गत गुलमर्ग में गुरुवार को आतंकियों ने सेना के वाहन पर हमला कर दिया। हमले में चार जवान घायल हुए थे। इनमें से दो जवान बलिदान हो गए जबकि दो पोर्टरों की भी मौत हुई है। घटना के बाद से सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी और आतंकियों की तलाश में सर्च ऑपरेशन चलाया हुआ है। एक ही दिन में यह दूसरा आतंकी हमला है। इससे पहले पुलवामा जिले के त्राल इलाके में सुबह आतंकवादियों ने उत्तर प्रदेश के एक मजदूर को गोली मारकर घायल कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि बिजनौर निवासी प्रीतम सिंह को बटागुंड गांव में आतंकवादियों ने गोली मार दी, मजदूर के हाथ में गोली लगी है। प्रीतम सिंह को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती है। पिछले एक सप्ताह में कश्मीर में गैर-स्थानीय मजदूरों पर लगातार हमले हो रहे है। गांदरबल में सुरंग बना रही कंपनी के कैंप पर हमला

इससे पहले, गांदरबल में श्रीनगर-लेह हाईवे पर सोनमर्ग के पास गगनगीर इलाके में जेड मोड़ सुरंग निर्माण कर रही कंपनी में कार्यरत प्रवासी मजदूरों पर रविवार की रात आतंकियों ने हमला कर एक डॉक्टर और छह मजदूरों की हत्या कर दी थी।

मारे गए मजदूरों में कश्मीरी और गैर कश्मीरी दोनों हैं। प्रवासी मजदूरों पर हाल के वर्षों का सबसे बड़ा हमला बताया जा रहा है। आतंकी दो बताए जा रहे हैं। यह वारदात शोपियां में बिहार के मजदूर अशोक चौहान के आतंकी हमले में मारे जाने के एक दिन बाद हुई है।

कश्मीर में बड़ी संख्या में हैं बाहरी मजदूर बता दें कि कश्मीर के अलग-अलग जिलों में चलने वाली तमाम बड़ी परियोजनाओं में प्रवासी मजदूर काम करते हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब के मजदूर कश्मीर में सेब के बगीचों और इसकी पैकिंग में काम करते हैं। निर्माण कंपनियों के विभिन्न प्रोजेक्ट में ये काम करते हैं। यहां तक कि कश्मीर में स्थानीय स्तर पर फल-सब्जी बेचने वालों में भी इनकी बड़ी संख्या है। रेलवे की योजनाओं में भी इन मजदूरों से काम लिया जाता है।

जानकारी के अनुसार, आतंकियों ने 2021 में भी इसी तरह प्रवासी मजदूरों पर आतंकी हमले किए थे। 16 और 17 अक्तूबर, 2021 को बिहार एवं यूपी के चार मजदूरों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। तब घाटी से बड़े स्तर पर प्रवासी मजदूरों ने पलायन किया था। अब फिर कश्मीर में वैसा ही माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है।

उत्तरी कश्मीर में उड़ी सेक्टर के अंतर्गत गुलमर्ग में गुरुवार को आतंकियों ने सेना के वाहन पर हमला कर दिया। हमले में दो जवान घायल हैं। सेना और आतंकियों के बीच गोलीबारी जारी है।

अलर्ट भारतीय नौसेना स्थिति पर कड़ी निगरानी रख रही है और हाई अलर्ट पर है

चक्रवाती तूफान दाना के गंभीर होने की आशंका, सशस्त्र बलों ने की तैयारी

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। ओडिशा व पश्चिम बंगाल के तट पर चक्रवाती तूफान दाना के गंभीर प्रभाव की आशंका है। ऐसे में भारतीय नौसेना मानवीय सहायता और आपदा राहत अभियान चलाने की तैयारी कर चुकी है। पूर्वी नौसेना कमान ने आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में नौसेना के प्रभारी अधिकारियों के साथ समन्वय में यह आपदा प्रतिक्रिया तंत्र सक्रिय किया है। समुद्र से भी राहत प्रयासों के लिए, पूर्वी बेड़े के दो जहाज आपूर्ति, बचाव और गोताखोर टीमों के साथ तैनात किए गए हैं। भारतीय नौसेना स्थिति पर कड़ी निगरानी रख रही है और हाई अलर्ट पर है। भारतीय नौसेना का

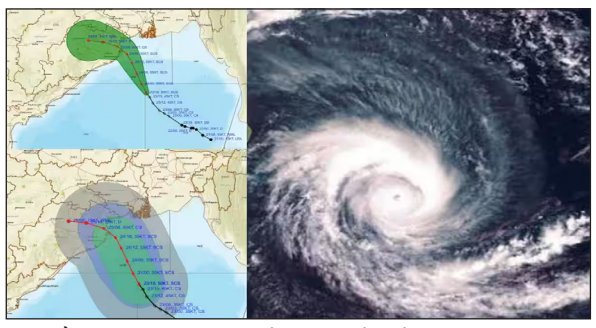

कहना है कि वह चक्रवात दाना से प्रभावित लोगों को व्यापक मदद देने के लिए तैयार है। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, प्रभावित होने की आशंका वाले क्षेत्रों में लोगों को मेडिकल सहायता उपलब्ध कराने की भी व्यवस्था की गई है। राज्य प्रशासन द्वारा मांगे जाने पर चिकित्सा सहायता प्रदान की जाएगी। इसके लिए नौसेना की कमांड बेस यार्ड (बीवीवाई), मटेरियल ऑर्गनाइजेशन और नौसेना अस्पताल आईएनएचएस कल्याणी जैसी इकाइयों के साथ मिलकर काम कर रही है। नौसेना ने अपनी इस तैयारी में आवश्यक कपड़े, पीने का पानी, भोजन, दवाएं और आपातकालीन राहत सामग्री की व्यवस्था की है। हजार्ड इवेंट डिजास्टर रिस्पांस पैलेट को उन क्षेत्रों में सड़क मार्ग व प्रमुख स्थानों पर तैनात किया गया है, जहां चक्रवात से नुकसान होने की संभावना है। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, जरूरत पड़ने पर समन्वित बचाव और राहत कार्यों में सहायता के लिए बाढ़ राहत और गोताखोर टीमें जुटाई जा रही हैं। चक्रवाती तूफान ह्यदानाह्व के 24 व 25 अक्टूबर के बीच पश्चिम बंगाल और ओडिशा के तटों से टकराने की आशंका है। तूफान की आशंका को देखते हुए भारतीय वायु सेना व तटरक्षक बल (आईसीजी) ने भी इस क्षेत्र में कई एहतियाती उपाय किए हैं। समुद्र में जान-माल की सुरक्षा के लिए ये उपाय किए गए हैं। रक्षा मंत्रालय का कहना है कि नौसेना, वायुसेना व आईसीजी स्थिति पर नजर रख रहे हैं। चक्रवात से उत्पन्न होने वाली किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए गए हैं। पश्चिम बंगाल और ओडिशा में समुद्री जहाजों, विमानों और रिमोट ऑपरेटिंग स्टेशनों को एक्टिव किया गया है। भारतीय वायु सेना ने चक्रवात दाना की तैयारी के लिए 150 एनडीआरएफ कर्मियों और 25 टन राहत सामग्री को भुवनेश्वर पहुंचने का काम किया है। इसके लिए यहां वायु सेना के आईएल- 76 और एक एएन-32 विमान को तैनात किया गया है।

दिवाली-छठ पूजा पर चलेंगी 7000 स्पेशल ट्रेन

नई दिल्ली/एजेंसी। दिवाली और छठ पर घर जाने वाले बिहार, झारखंड, पूर्वांचल और पूर्वी भारत के लोगों को अब ट्रेनों का टिकट बुक कराने में दिक्कत नहीं होगी। भारतीय रेलवे ने दिवाली और छठ पूजा पर दूसरे प्रदेशों से घर जाने वाले लोगों को त्योहारी तोहफा देते हुए करीब 7000 स्पेशल ट्रेन चलाने का फैसला किया है। गुरुवार को इस बात की जानकारी देते हुए केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि दीपावली और छठ पूजा के लिए इस साल 7000 स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी। सरकार की ओर से अनुमान लगाया गया है कि 7000 स्पेशल ट्रेनों को चलाने के बाद करीब 2 लाख से अधिक लोग सफर कर सकेंगे। सबसे बड़ी बात यह है कि भारतीय रेलवे पिछले साल 2023 के मुकाबले इस साल 2024 में दिवाली और छठ पूजा के लिए अधिक स्पेशल ट्रेन चलाने जा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

नशाखुरानी का शिकार दो युवकों को पुलिस ने पहुंचाया अस्पताल

फतुहा। थाना क्षेत्र के नयका रोड के समीप नशा खुरानी का शिकार दो युवक सड़क पर गिरे हुए थे। दोनों बेहोशी के हालत में थे। ग्रामीणों की सूचना पर डायल 112 की टीम दोनों को सड़क पर से उठाकर दनियावां पीएचसी में भर्ती कराया। कुछ देर बाद जब दोनों को कुछ होश आया तो दोनों ने अपना नाम क्रमशः दिलीप यादव व प्रेमजीत यादव बताया। दोनों धनबाद से एक पिकअप वैन पर सवार होकर पटना की ओर जा रहे थे। वह दोनों नशाखुरानी का शिकार कहां व कैसे हो गये, यह स्पष्ट नही हो सका। फिलवक्त दनियावां पीएचसी में उसकी इलाज जारी है।

21 वर्षीय युवती दानापुर स्टेशन से रहस्मय ढंग से लापता

दानापुर खगौल। रेल थाना के अंतर्गत एक 21 वर्षीय युवती दानापुर स्टेशन से रहस्मय ढंग से लापता हो गई। जो रानी कमला पति स्टेशन से हाजीपुर के लिए निकली थी घर नहीं पहुंचने पर परिजन किसी अनहोनी की आशंका से दानापुर जीआरपी में लिखित आवेदन देकर खोजबिन करने की गुहार लगाया है। भैसमारा, सारण निवासी लापता युवती की बड़ी बहन संतोष कुमार गिरी की पत्नी अराधना कुमारी ने लिखित आवेदन में बताया है कि उसकी बहन रोशनी कुमारी विगत 21 अक्टूबर को ट्रेन संख्या 11663 एक्सप्रेस से रानी कमलापति स्टेशन से हाजीपुर के लिए निकली। आरा स्टेशन पर पानी लेने के लिए ट्रेन से उतरी मगर ट्रेन छूट गई। फिर वह दिल्ली से पटना आने वाली समर स्पेशल ट्रेन पकड़ कर वह दानापुर पहुंची जहां उसने एक महिला से फोन लेकर दानापुर उतरने को सूचित किया। मगर बात होने के बाद वह सारण नहीं पहुंची। दानापुर स्टेशन से ही वह लापता हो गई। दो दिन हो जाने के बाद भी उसका कहीं पता नहीं चला। इस संबंध में जीआरपी प्रभारी सुधीर कुमार सिंह ने बताया के मामले की छानबीन के साथ युवती की तलाश की जा रही है।

जिलाधिकारी के निर्देश पर दीघा-नहर मार्ग पर बेल्डोजर चलाया

दानापुर। नगर के अंतर्गत गुरुवार को जिलाधिकारी के निर्देश पर नगर परिषद दीघा-नहर मार्ग पर व्याप्त अतिक्रमण पर बेल्डोजर चलाया। नहर किनारे अवैध रूप से अतिक्रमण किये लोगो को उखाड़ फेका। जिलाधिकारी डा.चंद्रशेखर सिंह, आयुक्त व वरीय पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्र छठ को लेकर होने वाले मुख्यमंत्री के दौरा का ध्यान में रखते हुए नासरीगंज से विशेष जहाज द्वारा गंगा घाट का निरीक्षण करने को लेकर नासरीगंज घाट पहुंचे। वहा पहुंचते ही उन्होने अनुमंडलाधिकारी व नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी को नहर मार्ग पर व्याप्त अतिक्रमण हटाने को निर्देश दिया। जिसके बाद कार्यपालक पदाधिकारी पंकज कुमार दलबल के साथ दीघा-नहर मार्ग पर अतिक्रमण हटाने पहुंच गये। इस दौरान अनुमंडलाधिकारी दिव्या शक्ति भी पहुंची और अतिक्रमण के विरूद्ध चलाये जा रहे कार्य को देखा। गुरुवार को अतिक्रमण हटाओ दस्ता दीघा से रूपसपुर तक सड़क व नहर किनारे व्याप्त अतिक्रमण हटाया। कार्यपालक पदाधिकारी ने बताया कि जिलाधिकारी के निदेर्शानुसार दीघा-रूपसपुर नहर मार्ग पर व्याप्त स्थायी व अस्थायी अतिक्रमण को हटाया गया। जिसमें नगर प्रबंधक अमरेन्द्र कुमार ब्रजेश सिंह व सफाई निरीक्षक रंजीत कुमार समेत कर्मी उपस्थित थे। पंकज कुमार ने बताया कि आगे भी कार्रवाई जारी रहेगी।

गेसिंग व लूट में तीन गिरफ्तार

पटना सिटी (प्राकि)। आलमगंज थाना की पुलिस ने गेसिंग कूपन में दो और अगमकुआं थाना की पुलिस ने लूट के मामले में फरार एक को गिरफ्तार किया है। एएसपी अतुलेश झा के नेतृत्व में आलमगंज थाना क्षेत्र के चैलीटाल स्कूल के पास में छापेमारी कर गेसिंग कूपन के धंधे से जुड़े दो लोगों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने गिरफ्तार दोनों के पास से गेसिंग कूपन के रसीद और दो हजार 775 रुपया बरामद किया है। वहीं अगमकुआं थाना की पुलिस ने लूट में फरार चल रहे को गिरफ्तार किया है।

छठ महापर्व की तैयारी को लेकर उलार सूर्य मन्दिर परिसर में एसडीएम की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं को जुटने के आसार, तैयारियों की हुई समीक्षा

- मंदिर व तालाब के आसपास नहीं लगेंगे झूले, श्रद्धालुओं का आवासन सहित अन्य सुविधाओं को लेकर दिए निदेश

प्रात :किरण संवाददाता

दुल्हिनबाजार : प्रखंड क्षेत्र के उलार स्थित ऐतिहासिक सूर्य मन्दिर में हर वर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालु भगवान भास्कर को अर्घ्य देने पहुंचते हैं` इसबार आगामी 5 नवंबर से शुरू होकर 8 नवंबर तक छठ महापर्व मनाया जाना है, वहीं इस महापर्व को लेकर जिला प्रशासन प्रशासनिक तैयारियों में जुटी गई है ` इधर गुरुवार को उलार सूर्य मन्दिर परिसर में पालीगंज अनुमण्डल पदाधिकारी अमनप्रीत सिंह की अध्यक्षता में अध्यक्षता समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गयी` बैठक में प्रशासनिक पदाधिकारियों एवं उलार सूर्य मंदिर न्यास समिति के सदस्यों के अलावे कई जन प्रतिनिधि व पत्रकार भी मौजूद थे। मौके पर श्रद्धालुओं के लिए शुद्ध पेयजल, साफ-सफाई, रौशनी, शौचालय, सुरक्षा व्यवस्था, आवासन आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गयी।

वहीं अनुमण्डल पदाधिकारी ने कहा कि यह लोक एवं पर्व अस्था का महापर्व है, उलार मंदिर परिसर में लाखों की संख्या में श्रद्धालु भगवान भास्कर को अर्घ्य देते हैं, ऐसे में उनकी सुविधाओं व व्यवस्थाओं को लेकर अनुमंडल प्रशासन पूर्णतः तैयार है, श्रद्धालुओं के सुविधाओं का हर सम्भव ख्याल रखा जाएगा, प्रयाप्त संख्या में पुलिस बल व दंडाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की जाएगी। विदित हो कि छठ महापर्व को लेकर पालीगंज अनुमण्डल के दुल्हिनबाजार प्रखण्ड- अन्तर्गत उलार सूर्य मंदिर तालाब, ईचीपुर पुनपुन घाट वहीं बिक्रम प्रखण्ड अन्तर्गत असपुरा लख, कनपा पुल सूर्य मंदिर, बेरर सोन घाट तो पालीगंज प्रखण्ड अन्तर्गत पालीगंज मिल्की नहर, अख्तियारपुर नहर, बउआँ पुनपुन, उदयपुर सोनघाट, समदा पुनपुन घाट, चन्ढोस मठिया पुनपुन घाटों पर छठव्रति एवं श्रद्धालु सूर्य देवता को अर्घ्य देने हेतु एकत्रित होते हैं, जिसमें दुल्हिनबाजार प्रखण्ड अन्तर्गत उलार सूर्य मंदिर तालाब घाट पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं, गत वर्ष की आकलन के अनुसार लगभग तीन से चार लाख श्रद्धालु व छठव्रतियों ने भगवान भास्कर को अर्घ्य दिया था । गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष अधिक श्रद्धालु आने की उम्मीद है, इसबार लगभग पाँच से छः लाख श्रद्धालुओं की भीड़ की संभावना आंकी गयी है । प्रशासनिक दृष्टिकोण से उलार सूर्य मंदिर तालाब घाट को अतिसंवेदनशील के श्रेणी में रखा गया है। अंचलाधिकारी एवं थानाध्यक्ष, दुल्हिन बाजार को निदेशित किया गया कि उलार तालाब के चारो तरफ छठव्रति का आवासन नहीं होगा तथा तालाब एवं मंदिर के ईर्द-गीर्द कोई भी झुला, ठेला या दुकान आदि नहीं लगेगा यह सुनिश्चित करायेगें।

समरस समाज निर्माण के लिए प्रासंगिक है सद्गुरु कबीर की वाणी : मंहत ब्रजेश मुनि महाराज

प्रात :किरण संवाददाता

फतुहा। कबीरपंथी आश्रम मीठापुर स्थित कबीर साई मंदिर में साप्ताहिक सत्संग का आयोजन मंहत ब्रजेश मुनि महाराज जी के पावन सानिध्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सद्गुरु कबीर का जीवन दर्शन वर्तमान में जाति धर्म के भेदभाव से मुक्त समरस समाज निर्माण के लिए प्रासंगिक और व्यावहारिक है इसलिए कबीर दर्शन का अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए। सद्गुरु कबीर साहेब ने अंधविश्वास आडम्बर को मिटाकर सत्य नाम को धारण करके धर्म इहलोक और परलोक को सुधारने की सीख देने की, जीवन जीने की राह बताता है। कबीर साहेब ने कहा था कि दूसरों के दुगुर्णों को नहीं देखना चाहिए सबमें सद्गुण ही देखना चाहिए। बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलाया कोई, जो दिल खोजा अपना मुझसा बुरा न कोई। इस अवसर पर सत्संग में उपस्थित कबीर साईं डेन्टल हास्पिटल के डॉ. इंद्रजीत कुमार एवं डॉ. कुणाल कुमार ने कहा कि मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए हमेशा मुंह को साफ करना चाहिए। खाना खाने के बाद भी ब्रश करना चाहिए। स्वस्थ व्यक्ति ही समाज को सुधार सकता है। मौके पर रूबी प्रधान, चन्द्रेश्वर गजेंद्र झा, कमलेश पासवान ने भजन गाकर श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। तत्पश्चात आरती कर महाप्रसाद का वितरण किया गया।

पालीगंज में भाकपा माले ने बदलो बिहार न्याय यात्रा निकाली

प्रात :किरण संवाददाता

पालीगंज 24 अक्टूबर 2024: बिहार में न्यायपूर्ण शासन और विकास की माँग को लेकर आज भाकपा (माले) द्वारा पालीगंज में ह्यबदलो बिहार न्याय यात्राह्ल का आयोजन किया गया। यह पदयात्रा पालीगंज के महाबलीपुर से शुरू होकर पालीगंज बाजार होते हुए दुल्हिनबाजार तक निकाली गई। इस यात्रा का नेतृत्त्व पालीगंज के विधायक डॉ. संदीप सौरभ ने किया, जिसमें सैकड़ों नेता और कार्यकर्ता शामिल थे। यात्रा के दौरान जनता के ज्वलंत मुद्दों को उठाते हुए नारे लगाए गए और पूरे जोश के साथ आगे बढ़ा गया। विधायक संदीप सौरभ ने कहा, यह यात्रा बिहार के हाशिये पर पड़े लोगों के हक और न्याय की आवाज है। भूमिहीनों को 5 डिसिमल जमीन, गरीबों को पक्का मकान, और सरकार द्वारा वायदा किए गए 2-2 लाख रुपये की राशि की माँग को लेकर हम सड़क पर उतरे हैं। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि हाशिये के लोगों को उनका हक मिले और बिहार में हर वर्ग को न्याय मिले। इसके साथ ही हम दलितों, महिलाओं, और मुसलमानों पर बढ़ते हिंसा और उत्पीड़न के खिलाफ भी आवाज बुलंद कर रहे हैं। वृद्धा, विकलांग और विधवा पेंशन को बढ़ाकर 3000 रुपये करने की हमारी माँग है, जिसे सरकार को जल्द से जल्द पूरा करना चाहिए। संदीप सौरभ ने भाजपा सांसद गिरिराज सिंह की सांप्रदायिक यात्रा को भी खारिज किया। उन्होंने कहा, ह्लहमारी यात्रा बिहार में एकता और न्याय की यात्रा है, जबकि गिरिराज सिंह जैसे नेता समाज में विभाजन और सांप्रदायिकता का जहर घोलने का काम कर रहे हैं। ऐसी सांप्रदायिक यात्राओं को बिहार की जनता पूरी तरह से खारिज करती है। बिहार में अमन, शांति और न्याय की जरूरत है, न कि सांप्रदायिक उन्माद की। यात्रा में विधायक संदीप सौरभ के साथ पालीगंज मुखिया संघ के अध्यक्ष आनंद यादव, पालीगंज माले सचिव सुरेंद्र पासवान, दुल्हिनबाजार माले सचिव अमरसेन दास, विनेश चौधरी, मंगल यादव, आशा देवी, राजेश कुमार, अविनाश कुमार, कृष्णनंदन, उमेश माँझी, नागो देवी और अरविंद पासवान सहित कई अन्य प्रमुख नेता शामिल थे। इस पदयात्रा का विभिन्न जगहों पर भव्य स्वागत किया गया और कई गांवों में जनसभाएँ भी आयोजित की गईं। यात्रा के दौरान भूमिहीनों को 5 डिसिमल जमीन, गरीबों को पक्का मकान, और सरकार द्वारा वायदा किए गए 2-2 लाख रुपये की राशि प्रदान करने की माँग उठाई गई। बदलो बिहार न्याय सम्मेलन यह न्याय यात्रा 27 अक्टूबर 2024 को पटना के मिलर हाईस्कूल ग्राउंड में आयोजित होने वाले ह्यबदलो बिहार न्याय सम्मेलनह्ल की ओर अग्रसर होगी, जिसमें बिहार के लोगों के हक और न्याय की लड़ाई के मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

आरटीई की बकाया राशि का जल्द होगा भुगतान, एसोसिएशन पदाधिकारियों ने रखी मांग

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर : निजी विद्यालयों की सभी समस्याओं और मांगों को लेकर बिहार पब्लिक स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन का एक प्रतिनिधिमंडल ने बुधवार को शिक्षा विभाग के प्राथमिक शिक्षा निदेशक से निजी विद्यालयों की समस्याओं को रखा, बता दें कि बुधवार को सचिवालय स्थित शिक्षा विभाग के प्रधान कार्यालय में संगठन के पदाधिकारियों की एक बैठक आयोजित की गई. जिसमें बिहार पब्लिक स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन के उपाध्यक्ष डॉ. एस. एम. सोहेल, सचिव प्रेम रंजन, मनन कुमार सिंहा एवं अश्दर इमाम ने विद्यालयों की सभी मांगों को रखा ` इस दौरान उन्होंने ज्ञानदीप पोर्टल को पुनः खोलना, लंबित क्यू आर कोड, लंबित यू डाइस, आरटीई की लंबित राशि का शीघ्र भुगतान एवं ईझशिक्षाकोष में आ रही समस्याओं आदि पर विस्तार से चर्चा किया। संगठन के द्वारा निजी विद्यालयों के प्रांगण में आधार कार्ड का कैंप लगाए जाने की भी मांग की गई। निदेशक के द्वारा आश्वासन दिया गया कि हर क्षेत्र में संगठन के साथ मिलकर विद्यालयों को चिन्हित करके कैंप लगाने का पहल किया जाएगा। वहीं प्राथमिक निदेशक ने कहा कि आरटीई की सभी लंबित राशि का वित्तीय वर्ष 2024-25 तक अगले एक माह के अंदर भुगतान किए जाने की तैयारी है। उन्होंने कहा ज्ञानदीप पोर्टल को भी कुछ तकनीकी प्रक्रिया के बाद पुनः खोलने की व्यवस्था की जा रही है। सभी लंबित क्यू आर कोड को अविलंब जारी किया जाएगा। जिला शिक्षा कार्यालय स्तर पर लंबित यू डाइस कोड को भी जारी करने की व्यवस्था की जा रही है। जिन विद्यालयों के द्वारा पिछले वर्ष ईझ संबंधन पोर्टल पर आवेदन किया गया था और उनका निबंधन अब तक किसी भी कारण से लंबित है, उनके आवेदन की जांच की जाएगी और उस पर पुनः विचार किया जाएगा।

पंचायत समिति की बैठक प्रखंड प्रमुख की अध्यक्षता में आयोजित की गई

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। नगर के अंतर्गत प्रखंड कार्यालय के सभाकार में गुरुवार को पंचायत समिति की बैठक प्रखंड प्रमुख वंदना राय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में शिक्षा, स्वास्थ्य, आंगनबाड़ी, मनरेगा, आपूर्ति, आवास योजना, नल जल सहित अन्य कल्याणकारी योजनाओं पर समीक्षा के साथ चर्चा हुआ। बैठक के दौरान पंचायतों के मुखिया एवं पंचायत समिति सदस्यों ने पंचायत एवं लोगों की समस्या से अवगत कराया। जिसमें शिकारपुर में स्वास्थ्य भवन निर्माण कराने के साथ दियारा क्षेत्र में बाढ़ के कारण रोगों के रोकथाम हेतु ब्लिचिंग पाउडर का छिड़काव कराने का अनुरोध किया गया।वहीं पंचायत पुरानी पानपुर स्वास्थय केन्द्र में चिकित्सक की प्रतिनियुक्ती कराने पर विचार किया गया। इसके अलावा हेतनपुर, रघुरामपुर, कोथवां एवं गंगाहारा पंचायत में उत्पन्न पेयजल की समस्या को तत्काल निदान करने का भी संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया। वहीं लखनीबिगहा पंचायत में चार माह से कुड़ा उठाव नहीं होने से लगी गंदगी के अंबार का मुद्दा जोरो से उठाया गया। जिसकों लेकर प्रखंड विकास पदाधिकारी विशेष आनंद व स्वच्छता समन्वय पदाधिकारी प्रमोद पाण्डेय ने जल्द कर्मी को बहाल कर कुड़ा उठाव करने की बात कही। इस मौके पर दियारा क्षेत्र में छठ घाट को लेकर प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि आम जन के सहयोग से छठ घाटों को दुरूस्त व सफाई की जाएगी। किसी भी छठ व्रति को कठानाईयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। बैठक में अंचलाधिकारी चंदन, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी रश्मी, कल्याण पदाधिकारी उपेन्द्र कुमार, नाजिर नारायण प्रसाद गुप्ता, प्र. परियोजनापदाधिकारी, पंच सदस्य संतोष राय के अलावा पंचायत समिति सदस्य व मुखिया मौजूद थे।

ब्रेस्ट कैंसर जानलेवा नहीं, गांठ दिखते चिकित्सक से मिलें : डॉ अनिता

एनएमसीएच में ब्रेस्ट कैंसर मरीज को भर्ती कर जांच व इलाज के रहे हैं सुखद परिणाम

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल में ब्रेस्ट कैंसर पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन गुरुवार को किया गया। इस दौरान कॉलेज की प्राचार्य डॉप्रो उषा कुमारी एवं अधीक्षक डॉप्रो बिनोद कुमार सिंह ने कहा कि यह विभाग लगातार प्रगति करता गया है और इस विभाग की प्रमुख एसोसिएट प्रोफेसर डॉ अनिता कुमारी ने बेहतर काम किया है। उन्होंने मरीजों का विश्वास जीत अस्पताल का भी मान बढ़ाया है। यही कारण है कि गरीब और मध्यम आय वर्ग के कैंसर से पीड़ित मरीज स्वस्थ भी हुए हैं और इलाजरत भी हैं। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप जला और बैलून उड़ा कर नालंदा मेडिकल कॉलेज की प्राचार्य डॉप्रो उषा कुमारी, अधीक्षक डॉप्रो बिनोद कुमार सिंह, उपाधीक्षक डॉ सरोज कुमार एवं अन्य अतिथियों ने किया। इस दौरान अतिथियों के द्वारा कैंसर से ठीक हुईं एवं उससे लड़ रहीं महिला मरीजों को सम्मानित किया गया। टीएमसी के चिकित्सकों एवं स्टाफ के द्वारा कैंसर पर एक नाटक की प्रस्तुति भी दी गई, जो काफी ज्ञानवर्धक के साथ ही रोचक भी था। पटना के विभिन्न सरकारी और निजी अस्पतालों से कैंसर विशेषज्ञों के द्वारा मरीजों के द्वारा अक्सर पूछे जाने वाले सवालों पर पैनलिस्ट चर्चा की गई। इसमें मैक्स पटना के डॉ विनीता त्रिवेदी मॉडरेटर रहीं। इसकी अध्यक्षता मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो अजय कुमार सिन्हा, सर्जरी के विभागाध्यक्ष डॉप्रो पीडी वर्मा, स्त्री व प्रस्तुति विभाग की विभागाध्यक्ष डॉप्रो दीप्ति राय, डॉ मिथिलेश प्रताप सिंह, डॉ इंदु कुमारी और डॉप्रो सीपी जायसवाल ने किया। पैनलिस्ट में महावीर कैंसर संस्थान की डॉ मनीषा सिंह, डॉ रीता रानी, सवेरा कैंसर अस्पताल के डॉ बीपी सिंह और डॉ अमृता राकेश, आईजीआईएमएस की डॉ सीमा देवी रहीं। इसके बाद केस बेस्ड पैनल चर्चा की गई। इसकी मॉडरेटर मेदांता अस्पताल की डॉ निहारिका राय रहीं। इसकी अध्यक्षता पैथोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो सीपी जायसवाल, ईएनटी के विभागाध्यक्ष डॉप्रो सत्येंद्र कुमार शर्मा, डॉ विनीत सिंह, डॉ अभिलाषा शांडिल्य, सर्जरी के डॉ एम अहसन ने की। पैनल लिस्ट में मगध कैंसर अस्पताल के डॉ रिदू कुमार, पारस अस्पताल के डॉ शेखर केसरी, आईजीआईएमएस से डॉ शारदा राज, एनएमसीएच से डॉ मधुकर दयाल, डॉ रीना, महावीर कैंसर संस्थान से डॉ ऋचा चौहान, मेदांता से डॉ अमरेंद्र और आंको सर्जन डॉ आरके गोस्वामी रहे। विभाग के अन्य चिकित्सकों एवं स्टाफ का भी इस कार्यक्रम की सफलता में खासा योगदान रहा। आयोजन में शिशु रोग विभाग से डॉप्रो अलका सिंह, निश्चेतना के डॉ मोतीलाल दास, डॉ रूपम, डॉ सोनाली, डॉ वंदना, डॉ श्वेता, डॉ मसरूर, टीएमसी के डॉ मेघा, डॉ संतोष आदि रहे। आयोजन के दौरान अधीक्षक डॉप्रो बिनोद कुमार सिंह ने कहा कि कोविड के समय जजों के लिए छह बेड सुरक्षित रखा गया था। बाद में वह अन्यत्र सुरक्षित हो गया। कोविड के समाप्त होने के बाद यही छह बेड कैंसर मरीजों के भरती और इलाज के लिए दे दिया गया। जो भी सपोर्टिंग सिस्टम था, वह सब इंस्टॉल करा दिया गया और इसके बाद मरीज की भर्ती के साथ ही इलाज का सिलसिला शुरू हो गया। इसका परिणाम आज आप सबों के सामने है।

बार एसो. के पूर्व अध्यक्ष व जुझारू अधिवक्ता स्वर्गीय राजेश्वर राज को किया याद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अनुमंडल व्यवहार न्यायालय के बार एसोसिएशन के पूर्व महासचिव एवं पूर्व अध्यक्ष रहे स्व राजेश्वर प्रसाद राज की आज चौथी स्मृति दिवस पर याद किया गया। इस दौरान बिहार बार काउंसिल के अध्यक्ष रामाकांत शर्मा, बार काउंसिल के सदस्य अधिवक्ता जयप्रकाश सिंह एवं अधिवक्ता सह विधायक रामानुज प्रसाद और विधायक सह पूर्व सांसद राजवंशी महतो ने स्व राजेश्वर प्रसाद के तैलचित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने पटना सिटी व्यवहार न्यायालय में अधिवक्ताओं को बैठने के लिए बार भवन की स्थापना में उनका महत्वपूर्ण योगदान को याद किया। राजेश्वर प्रसाद राज के संघर्ष के कारण ही पटना सिटी व्यवहार न्यायालय में एडीजे कोर्ट की स्थापना हुई। वे समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के लोगों को निःशुल्क कानूनी सहायता दिया करते थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता रंजीत कुमार बिमल और संचालन अधिवक्ता मनोहर लाल मेहता और अधिवक्ता विजय कुमार ने स्व राज के जीवनी के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश महासचिव सह पार्षद प्रदीप मेहता उपस्थित थे। कार्यक्रम में अतिथियों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। साथ ही व्यवहार न्यायालय पटना सिटी के वरिष्ठ अधिवक्ता रामबाबू मेहता, रामाशीष सिंह एपीपी, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष नवीन कुमार सिन्हा, रामेश्वर प्रसाद, गोपाल सिंह, कृष्णानंद मिश्रा, दीपक कुमार गुप्ता, कुलबंत सिंह, अशोक दास, रामबाबू आदि को भी अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। स्व राजेश्वर प्रसाद की पुत्री अधिवक्ता नीलम कुमारी ने कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

50 हजार का इनामी अंतरराज्यीय अपराधी मो चांद सहित पांच गिरफ्तार

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

लोगों से रंगदारी की मांग करना, फायरिंग कर उसे डराना और उसके कारखाना, प्रतिष्ठान से लेकर क्लीनिक में घुस कर धमकी देना मो चांद उर्फ आफताब के लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। इस साल 25 फरवरी से लेकर 22 अक्टूबर, 24 तक उसने पांच लोगों से रंगदारी की मांग की। गोलीबारी कर डराने और धमकाने का भी काम भी किया। पुलिस उस पर पहले 50 हजार का इनाम घोषित कर रखा था। बाद में दो लाख के इनाम का प्रस्तावत दिया गया था। उक्त अपराधी को अंततः गिरफ्तार करने में पटना पुलिस और एसटीएफ सफल रही। मो चांद के चार गुर्गे भी पुलिस के हत्थे चढ़े हैं। उन सबों के पास से पुलिस ने दो पिस्तौल, दो रिवाल्वर, 22 कारतूस एक मोबाइल और 59 हजार रुपया नगद बरामद किया है। इस संबंध में सिटी एसपी ईस्ट शुभंकर मिश्रा ने प्रेस कांफ्रेंस के दौरान बताया कि मोहम्मद चांद उर्फ आफताब शातिर दिमाग का अपराधी है। वह बिहार के विभिन्न जिलों के अलावा महाराष्ट्र, दिल्ली, कोलकाता, जमशेदपुर सहित अन्य शहरों में भी अपराध की घटनाओं को अंजाम दिया है। इसका भी पुलिस के द्वारा पता लगाया जा रहा है। मोहम्मद चांद खाजेकलां थाना क्षेत्र के होदा साहेब का फाटक कंघैया टोला में चांद ग्लास ट्रेडर्स के पास दो अपराधियों के द्वारा रंगदारी को लेकर गोली चलाया था। इस संबंध में पीड़ित मो चांद के द्वारा 25 फरवरी, 24 को कांड 87 दर्ज कराया गया था। इसके बाद कंघैया टोला के ही मो एहतेशाम अहमद पिता सगीर अहमद से इसी साल एक अप्रैल को 10 लाख की रंगदारी मांगी थी। इस संबंध में भी खाजेकलां थाना में चार अप्रैल को कांड 156/24 दर्ज कराया गया। इसके बाद हजारी मोहल्ला के रहने वाले निखिल राज पिता हीरालाल रजक के यहां भी फायरिंग की घटना को अंजाम देकर रंगदारी की मांग की थी। इस संबंध में तीन जुलाई को कांड 266/24 दर्ज किया गया। मामला यहीं नहीं रुका। लोदीकटरा के रहने वाले नदीम आलम पिता नसीम आलम के घर पर भी गोलीबारी की घटना को अंजाम दिया गया। इस संबंध में 18 अगस्त को पीड़ित के द्वारा खाजेकलां थाना में कांड 346/24 दर्ज किया गया। इसके बाद चौक थाना क्षेत्र के नाला पर स्थित कुमार डेंटल क्लीनिक में घुस कर हथियारबंद दो अज्ञात अपराधियों के द्वारा डॉ प्रणव कुमार से रंगदारी की मांग की गई। रंगदारी नहीं देने पर जान से मारने की धमकी दी गई। इस संबंध में पीड़ित के द्वारा चौक थाना में 22 अक्टूबर को कांड 499/24 दर्ज कराया गया। इस सारी स्थितियों को देखते हुए पुलिस ने उसे पर 50 हजार का इनाम जारी करते हुए फेसबुक पर फोटो जारी भी किया था। बाद में उस पर दो लाख का इनाम प्रस्तावित किया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसएसपी के द्वारा टीम का गठन किया गया। इसमें सिटी एसपी ईस्ट शुभंकर मिश्रा के निर्देशन में सहायक पुलिस अधीक्षक-1 सदर एवं सिटी डीएसपी-2 डॉ गौरव कुमार के नेतृत्व में छापामारी टीम का गठन किया गया। इस टीम ने कार्रवाई करते हुए 50 हजार के इनामी एवं दो लाख के इनाम के प्रस्तावित अपराधी मोहम्मद चांद उर्फ आफताब तथा उसके गिरोह के 50 हजार के इनामी अपराधी के अतिरिक्त मो चांद उर्फ आफताब के गिरोह के चार अन्य गुर्गों को अवैध आग्नेयास्त्र, कारतूस, नगद और मोबाइल के साथ गिरफ्तार किया गया।

कन्या मवि बेगमपुर का छात्र कुंदन राज्यस्तरीय कराटे में गोल्ड जीता

पटना सिटी (प्राकि)। किलकारी बाल केंद्र कन्या मध्य विद्यालय, बेगमपुर का छात्र कुंदन कुमार स्कूल खेल प्रतियोगिता कराटे में अंडर 14 में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। बाहरी बेगमपुर के रहने वाले अशोक साहू के पुत्र कुंदन करने में स्वर्ण पदक जीतने के बाद अब वह बिहार से नेशनल खेलने के लिए जाएगा। छात्र कुंदन की उपलब्धि पर विद्यालय के शिक्षकगण भी फूले नहीं समा रहे हैं। शिक्षक संजय पासवान, धर्मवीर सिंह, प्रमोद कुमार, बिजेंदर पासवान, ओम प्रकाश, संतोष कुमार शर्मा, सरिता शर्मा पिंगला ने छात्र कुंदन की इस उपलब्धि पर आशीष दिया है। साथ ही राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भी उसकी सफलता की कामना की है। इधर जनप्रतिनिधि भी कुंदन की उपलब्धि से खुश हैं। स्थानीय विधायक सा बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव वार्ड 62 की पार्षद तारा देवी ने कुंदन की कराटे में शानदार उपलब्धि पर शाबाशी दी है। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

असरगंज में तीर्थयात्री शेड एवं कैफेटेरिया होगा उपलब्ध : मंत्री

सुल्तानगंज-बाबाधाम मार्ग पर श्रद्धालुओं की होगी सुविधा

- पर्यटन विभाग द्वारा 14,88,65000 की मिली प्रशासनिक स्वीकृति

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

सुल्तानगंज-बाबाधाम मार्ग पर श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु असरगंज में तीर्थयात्री शेड एवं कैफेटेरिया निर्माण होगा पर्यटन विभाग द्वारा इस हेतु 14,88,65000 की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। इस योजना के अन्तर्गत मुख्य भवन (जी+1), कैफे भवन (0-1), चहारदिवारी, लैण्डस्केमिंग, जेनरेटर सेट, इन कैम्पस स्ट्रीट लाईट, सोलर पावर जेनरेशन, थीमेटिक गेट एवं पार्किंग इत्यादि कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इस योजना की कार्यकारी एजेंसी बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम है। योजना को औपचारिक प्रक्रियाओं के उपरांत आगामी 18 माह में पूर्ण किया जायेगा। पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने बताया कि पवित्र श्रावण मास व अन्य अवसरों पर प्रतिवर्ष बाबा धाम जाने वाले करोड़ों शिवभक्त कांवड़ियों की सुविधा के दृष्टिगत श्रद्धालुओं के आवासन एवं भोजन हेतु एक स्थायी व्यवस्था की आवश्यकता थी। इसे दृष्टिगत रखते हुए पर्यटन विभाग द्वारा मुंगेर जिलान्तर्गत असरगंज में तीर्थयात्री शेड एवं कैफेटेरिया निर्माण हेतु 14,88,65000 की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। उन्होंने बताया कि निश्चित ही आने वाले समय में प्रतिवर्ष श्रावण मास व अन्य अवसर पर सुल्तानगंज से बाबा धाम की यात्रा करने वाले कांवड़ियों व श्रद्धालुओं को सुल्तानगंज-बाबाधाम मार्ग पर असरगंज में एक गुणवत्तापूर्ण व बेहतर सुविधायुक्त तीर्थयात्री शेड एवं कैफेटेरिया उपलब्ध होगा जिससे सभी शिवभक्तों की यात्रा सुलभ व आरामदायक हो सकेगी।

नफरत फैलाने वाली शक्तियों को दिया जा रहा बढ़ावा : एजाज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि जदयू प्रवक्ता नीरज कुमार को सच और सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए कि जहां जाएंगे वहां दारू उपलब्ध होगा यह हर लोग अब कहने लगे हैं। जबकि उत्पाद और निषेध मंत्री भी स्वीकार कर रहे हैं कि होम डिलिवरी हो रहा है दारू और शराब का। अब तो जहरीली शराब से मौतें भी हो रही है लेकिन सरकार पूरी तरह से मौन और विचार शून्य हो चुकी है। एजाज ने आगे कहा कि राजद के संबंध में बोलने से पहले अगर नीरज कुमार जी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वक्तव्य को देख लिए होते जिसमें उन्होंने जदयू का मतलब बताया था और कहा था जनता का दमन और उत्पीड़न। और आज वह डबल इंजन सरकार में भाजपा और जदयू मिलकर जनता का दमन भी कर रही है उत्पीड़न भी कर रहे हैं। आगे कहा कि जहां जनता दल यू अपने विचारों को शून्य कर लिया है। वही नफरत फैलाने वाली शक्तियों को बढ़ावा देने का काम कर रही है, जिसके कारण आज बिहार और देश में नफरत का माहौल खड़ा हो गया है, और कहीं ना कहीं आम लोगों का उन्माद की राजनीति के सहारे उत्पीड़न हो रहा है और शराबबंदी के बाद भी शराब पीने के नाम पर गरीबों को प्रताड़ित किया जा रहा है जबकि शराब माफिया को सरकार द्वारा संरक्षित किया जा रहा है। बिहार में डबल इंजन सरकार किस तरह से कार्य कर रही है यह पूरा बिहार देख रहा है। एजाज ने आगे कहा कि लालू प्रसाद और तेजस्वी ने सामाजिक न्याय और आर्थिक न्याय के माध्यम से जो कार्य किए हैं उससे हर वर्गों को मान -सम्मान हक और अधिकार मिला है, उससे सभी वर्ग के लोग खुश हैं। साथ ही साथ 2016 में महागठबंधन सरकार ने गरीबों के घरों में शराबबंदी करके जो खुशहाली लाई और उनके पारिवारिक स्थिति और माहौल को ठीक किया। उसको पुनः कहीं ना कहीं माफिया का संरक्षण दिए जाने के कारण ही अब जहां जाइए दारू उपलब्ध हो रहा है यह बिहार सरकार के मंत्री भी मानते हैं।

विकास की नयी उचाईयों को छुएगा चंपारण : जायसवाल

- कहा- चंपारण की जनता के तरफ से पीएम नरेन्द्र मोदी को आभार

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पश्चिम चंपारण के सांसद एवं लोकसभा में भाजपा के प्रमुख व्हिप एवं भाजपा बिहार के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल ने बेतिया एवं चंपारण की जनता के तरफ से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विभिन्न परियोजनाओं से लाभान्वित करने के लिए आभार व्यक्त किया है" डॉ संजय जायसवाल ने बताया की प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने 6,798 करोड़ की लागत वाली दो परियोजनाओं को मंजूरी दी है" चंपारण क्षेत्र से दो रेलवे परियोजनाओं मुजफ्फरपुर-गोरखपुर रेलखंड का विद्युतीकरण, वाल्मीकिनगर-मुजफ्फरपुर एवं वाल्मीकिनगर-गोरखपुर रेलखंड का दोहरीकरण जिसी परियोजनाओं की मंजूरी से चम्पारण के क्षेत्र में विकास की गंगा बहेगी" सीतामढ़ी-दरभंगा के इन परियोजनाओं से जुड़े होने की वजह से नेपाल, पूर्वोत्तर भारत के रेल यात्रियों को तो लाभ होगा ही साथ-साथ 31 एमटीपीए अतिरिक्त माल ढुलाई से व्यापार का एक मजबूत स्ट्रक्चर विकसित होगा एवं 106 लाख मानव दिवसों का प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे 5600 करोड़ रूपए की लागत से बन रहे पटना-बेतिया फोरलेन सड़क को चंपारण को वरदान बताते हुए उन्होंने कहा की बन जाने से बेतिया के लाखों लोग सीधे राज्य की राजधानी से जुड़ जायेंगे" डॉ संजय जायसवाल ने बताया की मैंने प्रधानमंत्री जी से आग्रह किया था की बेतिया बिहार का एक साधारण हिस्सा भर नहीं है, बल्कि बिहार के विकास की संभावनाओं को मजबूत करने वाला सीमान्त इलाका है जो हमें पूर्वोत्तर भारत एवं नेपाल से सीधे जोड़ता है और आज जो सौगात बेतिया को मिला है उसके लिए मैं प्रधानमंत्री जी के हृदय से धन्यवाद देता हूँ" चंपारण की जनता ने भाजपा को जो विश्वास दिखाया है उसी का प्रतिफल है की आज मेरे लोकसभा क्षेत्र सहित चंपारण के अन्य क्षेत्रों में आम लोग अपने पांच वर्षों में सीधे फोरलेन सड़क से पटना से जुड़ जायेंगे और इसके साथ ही मुजफ्फरपुर से वाल्मीकिनगर एवं गोरखपुर तक रेल की यात्रा सुखद एवं समयबद्ध होने लगेगी" सांसद ने कहा की विकास भाजपा एवं नरेन्द्र मोदी जी की प्राथमिकता रही है और इन परियोजनाओं के जमीन पर आने से पूर्वोत्तर भारत सहित नेपाल के साथ व्यापार सुगम होगा और चंपारण की जनता विशेष तौर पर इससे लाभान्वित होगी"

छठ पूजा के अवसर पर निर्बाध होगी विद्युत आपूर्ति

छठ घाटों पर अस्थाई 24.7 नियंत्रण कक्ष स्थापित किए जाएंगे

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा के शुभ अवसर पर निर्बाध, गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए दोनों वितरण कंपनियों द्वारा आवश्यक तैयारियों का कार्य तेजी से प्रगति पर है। विद्युत संरचनाओं के सुदृढ़ीकरण का कार्य युद्धस्तर पर जारी है ताकि पूजा के दौरान किसी प्रकार की असुविधा न हो। बिजली आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए पॉवर सब स्टेशन, 33 केवी/11 केवी लाइनों की मरम्मत का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है, और डिस्ट्रीब्यूशन सब स्टेशन का समुचित निरीक्षण एवं मरम्मती कार्य भी तेजी से किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, संबंधित शक्ति उपकेन्द्र के 33 केवी एवं 11 केवी ब्रेकरों का एमआरटी.टीम द्वारा निरीक्षण कर उन्हें कार्यरत कर दिया गया है। छठ घाट पर सुरक्षा के दृष्टिकोण से जर्जर विद्युत लाइनों को बदला जा रहा है। पहुंच पथ में गुजरने वाली 11 केवी की बेयर कंडक्टर लाइनों को कवर्ड कंडक्टर में बदला जा रहा है अथवा उनमें सुरक्षा हेतु गार्ड वायर लगाए जा रहे हैं। भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में लोहे के विद्युत पोलों पर स्पर्षाघात से बचाव के लिए डायलेक्ट्रिक पेंट अथवा

तैयारियों की सीएमडी ने की समीक्षा

पॉलीथीन शीट लगाया जा रहा है, और नंगे तारों को एबी केबल से बदलने का कार्य किया जा रहा है। भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में स्थित ट्रांसफार्मरों की सुरक्षा के लिए फेंसिंग का कार्य भी तीव्र गति से किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, छठ पूजा के दौरान विद्युत आपूर्ति में किसी भी प्रकार की समस्या आने पर तुरंत समाधान हेतु आवश्यक सामग्री और ट्रांसफार्मर की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की गई है।

बिहार स्टेट पावर होल्डिंग कंपनी लिमिटेड के सीएमडी पंकज कुमार पाल ने बताया कि मुख्यालय स्तर पर 24७7 नियंत्रण कक्ष स्थापित किया जाएगा ताकि आपूर्ति की निगरानी की जा सके और किसी भी आपातकालीन स्थिति का त्वरित समाधान हो सके। जिला और विद्युत प्रमंडल स्तर पर अधिकारी और कर्मियों की प्रतिनियुक्ति की जाएगी। ट्रांसफार्मर खराब होने की स्थिति में त्वरित बदलाव के लिए पर्याप्त संख्या में ट्रांसफार्मर क्षेत्रीय स्तर पर उपलब्ध हैं। सुरक्षा के प्रति सजगता रखते हुए, छठ घाट और पहुँच पथ पर आयोजकों द्वारा लगाए जाने वाले अस्थाई विद्युत संयोजनों के लिए पंडाल संचालकों को निर्देशित किया गया है कि वे एमसीबी के माध्यम से अस्थायी विद्युत संयोजन प्रदान करें। साथ ही, लाईटों के लिए सही ऊंचाई बनाए रखने और कनेक्शन तारों में उचित टेपिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

राज्य में कुल 5,597 छठ घाट हैं जिसमें 2,381 घाट एसबीपीडीसीएल एवं 3,216 घाट एनबीपीडीसीएल अंतर्गत है। अब तक 3,000 से अधिक घाटों के विद्युत संरचना का रखरखाव कार्य पूरा कर लिया गया है। इस अवसर पर सीएमडी श्री पंकज कुमार पाल ने अधिकारियों को सभी संबंधित विभागों से आवश्यक समन्वय बनाए रखने और छठ पूजा के दौरान निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के एमडी महेंद्र कुमार, नॉर्थ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के एमडी डॉ निलेश देवरे सहित अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

झारखंड में बनेगी एनडीए की सरकार : श्रवण

ग्रामीण विकास मंत्री ने झारखंड में यदयू प्रत्याशी के पक्ष में जनसभा को किया संबोधित

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने कहां है कि झारखंड में एनडीए की सरकार बनेगी । वर्तमान सरकार से जनता का मोह भंग हो चुका है। वर्तमान सरकार ने केवल चेहरा चमकाने का काम किया है। सरकार को जनता के हित से कोई मतलब नहीं रहा इसलिए जनता ने ठान लिया है कि इस बार एनडीए की सरकार बनाएंगे। मंत्री गुरुवार को झारखंड में हो रहे विधान सभा आम चुनाव में तमार विधानसभा क्षेत्र से एनडीए समर्थित जनता दल यू के प्रत्याशी गोपाल कृष्ण पातर उर्फ राजा पीटर के बुंडू अनुमंडल कार्यालय में नामांकन के बाद वहां आयोजित जनसभा में भाग लिया। इस सभा में एनडीए घटक दल यथा - जनता दल यूनाइटेड, भारतीय जनता पार्टी, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के कई नेता उपस्थित थे। जनसभा को संबोधित करते हुए श्रवण कुमार ने कहा कि झारखंड में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। यहां की वर्तमान सरकार केवल अपना नाम चमकाने में लगी हुई है। जनता के विकास एवं कल्याण से उन्हें कोई मतलब नहीं है।

मंत्री ने उपस्थित जन समुदाय से अपील किया कि आप इस आम चुनाव में एनडीए समर्थित जनता दल यूनाइटेड के प्रत्याशी राजा पीटर के पक्ष में मतदान कर यहां एनडीए की सरकार बनाएं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तथा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बिहार प्रदेश एवं देश आगे बढ़ रहा है। एनडीए की सरकार के गठन के उपरांत यहां उत्तरोतर प्रगति होगी तथा सभी क्षेत्रों में सरकार द्वारा व्यापक कार्य किए जाएंगे।

इस सभा में मध्य प्रदेश भाजपा नेता सह बीज निगम के अध्यक्ष, लोजपा नेता, शैलेंद्र महतो, त्रिनयन कुमार, शालिनी पटेल, सागर, चंद्र मोहन पटेल, मिथिलेश सिंह, आनंद महतो के अतिरिक्त अन्य कई कार्यकर्ता उपस्थित थें।

झारखंड में हर हाल में बनेगी एनडीए की सरकार : चिराग

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

झारखंड के चतरा विधानसभा सीट से लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) से एनडीए के उम्मीदवार जनार्दन पासवान ने गुरूवार अपना नामांकन दाखिल किया । अनुमंडल पदाधिकारी चतरा के समक्ष झारखंड के लोजपा (रा) प्रभारी सह जमुई सांसद अरुण भारती और अपने हजारों एनडीए के समर्थकों के साथ जनार्दन नामांकन दाखिल करने पहुंचे।

नामांकन के पश्चात चतरा के सदर थाना मैदान में आयोजित विशाल जनसभा में लोजपा (रा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्र सरकार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान शामिल हुए। चिराग ने अपने संबोधन में प्रदेश की भ्रष्ट तथा निरंकुश सरकार के मुखिया हेमंत सोरेन और इंडी गठबंधन पर जोरदार हमला बोलते हुए कहा कि झारखंड में एनडीए के पक्ष में ऐतिहासिक जनादेश के साथ सशक्त सरकार का बनना तय है। श्री चिराग ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के परिकल्पना में डबल इंजन की सरकार के साथ विकसित और समृद्ध झारखंड की जरूरत पर बल देते हुए चतरा की जनता से लोजपा (रा) के उम्मीदवार तथा पूर्व में दो बार विधायक रहे जनार्दन पासवान के पक्ष में आगामी 13 नवंबर को हेलिकॉप्टर छाप पर मुहर लगा कर जीत सुनिश्चित करने की अपील की है।

चतरा में केंद्रीय मंत्री चिराग के संबोधन के बीच में मूसलाधार बारिश के बावजूद जनसैलाब की शक्ल में उमड़ी भीड़ टस से मस नहीं हुई। बारिश में भीगते हुए भी चिराग पासवान और एनडीए के लिए अभूतपूर्व जनसमर्थन देखने को मिला

श्री चिराग पासवान ने झारखंड में महिला, किसान, नौजवान और संविधान के संरक्षण के अपने संकल्प को दोहराते हुए कहा कि झारखंड में एनडीए के शासन में विकास के रोडमैप को अगले पांच वर्ष में सुदृढ़ तथा समावेशी बनाया जाएगा ताकि वंचित वर्ग के साथ सभी वर्गों का कल्याण हो सके।

श्री चिराग ने आज चतरा और सिमरिया में दो सभाओं को संबोधित कर एनडीए के पक्ष में जनता से उनका आशीर्वाद मांगा ।नामांकन कार्यक्रम में लोजपा (रा) के झारखंड प्रभारी सह जमुई सांसद अरुण भारती, चतरा सांसद कालीचरण सिंह, लोजपा के प्रदेश अध्यक्ष बीरेंद्र प्रधान, भाजपा के चतरा जिलाध्यक्ष रामदेव सिंह भोक्ता, राष्ट्रीय प्रवक्ता धीरेंद्र कुमार मुन्ना सहित भाजपा, लोजपा, जदयू और आजसू के वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति रही।

कॉ योगेश्वर गोप की मनाई गयी 17 वीं पुण्यतिथि

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। क्रांतिकारी मजदूर आंदोलन के महानायक कॉ योगेश्वर गोप की 17 वीं पुण्यतिथि गुरुवार को पुनाईचक स्थित महासंघ (गोप गुट) राज्य कार्यालय में मनाई गयी।इस अवसर पर महासंघ (गोप गुट) के पटना जिला का 22 वां सम्मेलन भी आयोजित किया गया। कॉ योगेश्वर गोप की 17 वीं पुण्यतिथि एवं 22 वें पटना जिला सम्मेलन के अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए गोप गुट के सम्मानित अध्यक्ष कॉ रामबली प्रसाद व ऐक्टू राष्ट्रीय सचिव रणविजय कुमार ने कॉ गोप के जीवनी पर प्रकाश डालते हुए विस्तार से चर्चा किया और उपस्थित साथियों को कॉमरेड गोप के जीवन से प्रेरणा लेकर मजदूर-कर्मचारियों खासकर निजीकरण -ठीकाकरण के दौर में बड़े पैमाने पर सामने आए ठीका-संविदा ,आउटसोर्स एवं स्कीम वर्कर के अधिकार की रक्षा करने का संकल्प लेने का आह्वान किया ' आगे कहा कि मजदूर-कर्मचारियों की मांगों पर समझौताहीन संघर्ष संगठित कर सरकारों को झुकाकर मांगे हासिल करने का नाम योगेश्वर गोप है, इसी व्यक्तिव के कारण कॉ० योगेश्वर गोप मजदूर आंदोलन के क्रांतिकारी आंदोलन के महानायक बने रहेंगे।

द्वय नेताओं ने कहा कि महासंघ गोप गुट आज दिवंगत गोप जी के रास्ते पर आगे बढ़ते हुए आधुनिक गुलामी की ठीका- मानदेय,आउटसोर्स प्रथा की समाप्ति तथा मोदी-नीतीश सरकार द्वारा ह्यन्यू पेंशन स्कीमह्व व ह्यजबरन सेवानिवृत्तिह्व,जैसे अन्य काले आदेश के जरिए सरकारी कर्मचारियों के अधिकारों में किए जा रहे कटौती के खिलाफ संघर्ष को आगे बढ़ा रहा है। नेताओं ने इन काले आदेशो को रद्द कराने के लिए सरकार के खिलाफ खड़ा हुए आंदोलन को मजबूती प्रदान करने का आह्वान कर्मचारियों-मजदूरों से किया। सीपीआईएम नेता कॉ रासबिहारी सिंह ने कॉ गोप के पुरे सांगठनिक जीवन के साथ - साथ पारिवारिक जीवन में बेहतर तालमेल बैठाने की प्रेरणा लेने की बात कही। इस अवसर पर कॉ गोप के दो पुत्र संजय कुमार एवं विजय गोप तथा उनके दामाद रासबिहारी सिंह, उनके नतिनी सहित परिवार के कई अन्य लोग भी शामिल हुए ' कार्यक्रम की शुरूआत पटना जिला अध्यक्ष प्रिय रंजना पंजीयार द्वारा झंडोतलन कर किया गया एवं अध्यक्ष सहित सभी आये अतिथियों, प्रतिनिधियों, प्रेक्षकों द्वारा शहीद वेदी पर पुष्पांजलि अर्पित किया गया ' तत्पश्चात मीटिंग हॉल में सभी सम्मानित लोगों को बैठने के बाद कॉ योगेश्वर गोप के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत हुआ।

भवन निर्माण विभाग

बिहार सरकार

विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, पटना

पून: अल्पकालीन ई–निविदा आमंत्रण सूचना सं0–22 वर्ष 2024–25

(Single Bid System)

Sl. No.	Name of Work.	Estimated cost (In Rs.)	Bid Security 2% (EMD In Rs.)	Cost of Bidding Document (In Rs.)	Bid Processing Fee	Time of Completion (In Month)
1	2	3	4	5	6	7
1.	Renovation to E/W & E/I in Jail ward, superintendent office, Doctors Chamber & Male, Female Barrack at Sub Jail Patna city Distt Patna.	24,83,928.00	49,700.00	5000.00	As per Online requirement	One Months

1. विज्ञापन दाता का पदनाम एवं पता :– विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2 भवन निर्माण विभाग, पटना।
2. निविदा आमंत्रण की तिथि :– दि0–23.10.2024
3. निविदा कागजात प्राप्त करने का (डाउनलोड करने) की अंतिम तिथि एवं समय :– दि0–15.11.2024 को 15.00 बजे अपराह्न तक
4. निविदा जमा करने (अपलोड करने) की अंतिम तिथि एवं समय :– दि0–16.11.2024 को 15.00 बजे अपराह्न तक
5. प्री–बीड बैठक तिथि एवं समय :– दि0–11.11.2024 को 03.00 बजे अपराह्न विद्युत अधीक्षण अभियंता, विद्युत कार्य अचंल, दक्षिण बिहार, पटना, भवन निर्माण विभाग के कार्यालय मे।
6. निविदा की राशि का 2% EMD एवं हार्ड कॉपी (मूल में) जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय :– दि0–18.11.2024 को 15.00 बजे अपराह्न तक
7. ई–निविदा की खोलने की तिथि एवं समय :– दि0–19.11.2024 को 15.00 बजे अपराह्न तक
8. परिमाण विपत्र बिक्री स्थान :– केवल वेवसाइट (www.eproc2.bihar.gov.in
9. निविदा प्राप्ति का स्थान :– केवल वेवसाइट (www.eproc2.bihar.gov.in
10. निविदा वैधता की अवधि :– 120 दिन

विस्तृत जानकारी state.bihar.gov.in/prdbihar से प्राप्त की जा सकती है।

विद्युत कार्यपालक अभियंता
विद्युत कार्य प्रमंडल, सख्या–2, पटना

PR- 011186 (BCD) 2024-25

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार।

बदलाव की नई इबारत लिखने के लिए आतुर है बेलागंज : उमेश

पटना। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने गुरुवार को बेलागंज विधानसभा उप-चुनाव की एनडीए समर्थित जदयू प्रत्याशी मनोरमा देवी के आशीर्वाद सभा सह नामांकन समारोह में शामिल हुए। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष ने विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए स्थानीय मतदाताओं से आगामी 13 नवंबर को चुनाव चिन्ह तीर छाप पर वोट करने की अपील की। श्री कुशवाहा ने कहा कि बेलागंज में विकास बनाम विनाश के बीच की लड़ाई है। एक ओर हमारा एनडीए गठबंधन है जिसने बिहार में विकास के नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, वहीं दूसरी ओर 15 वर्षों तक सरकारी खजाने लूटकर बिहार को विनाश की ओर धकेलने वाली राजद जैसी नकारात्मक शक्तियां हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि बेलागंज की जनता 33 वर्षों के बाद बदलाव की नई इबारत लिखने के लिए आतुर है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार को विकास की नई उड़ान मिली है। सामाजिक न्याय के मूलमंत्र को अपनाते हुए हमारे नेता ने समावेशी विकास का नया मॉडल प्रस्तुत किया है। वहीं, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी विकसित भारत के संकल्प को मूर्त रूप देने की मुहिम में जोर-शोर से जुटे हुए हैं। देश व प्रदेश का सर्वांगीण विकास डबल इंजन की एनडीए सरकार का एकमात्र लक्ष्य है। श्री कुशवाहा ने कहा कि लोकतंत्र का उज्ज्वल भविष्य परिवारवादी राजनीति से नहीं बल्कि जनसेवा की नीति से तय होगा। आगे उन्होंने कहा कि बेलागंज की जनता विपक्ष के विकास विरोधी मंसूबे को ध्वस्त करने का मन बना चुकी है और 23 नवंबर को यहाँ सुशासन का नया सूर्योदय होगा, जो आने वाली पीढ़ियों की भविष्य के विकास को नई रौशनी देगा।

पटना में दिनदहाड़े बेखौफ अपराधियों ने युवक को गोलियों से भूना

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राजधानी में एक बार फिर बेखौफ अपराधियों का तांडव देखने को मिला है। पुलिस को खुली चुनौती देते हुए अपराधियों ने बड़ी घटना को अंजाम दिया है। दिनदहाड़े अपराधियों ने एक युवक पर ताबड़तोड़ गोली बरसा दी है। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। आनन-फानन में घायल को अस्पताल लेकर जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। दरअसल, पूरा मामला पटना के फुलवारी शरीफ थाना क्षेत्र के बिस्किट फैक्ट्री मोड़ का है। जहां गुरुवार को दिनदहाड़े एक बाइक पर सवार तीन की संख्या में आए अज्ञात अपराधियों द्वारा युवक पर ताबड़तोड़ गोलियों की बौछार कर उसे मौत के घाट उतार दिया है। मृतक की पहचान सुरेंद्र सिंह का पुत्र 36 वर्षीय अमित सिंह के रूप में हुई है। मृतक फुलवारी शरीफ के बिस्कुट फैक्ट्री मोड़ का रहने वाला हैं। इस पूरे मामले की जानकारी देते हुए फुलवारी शरीफ श्स्त्रिङ्क2 सुशील कुमार ने बताया कि घटना की जानकारी मिलते ही फुलवारी शरीफ थाने की पुलिस घटनास्थल पर पहुंचे घायल को एम्स अस्पताल ले गए वहीं एम्स अस्पताल के डॉक्टरों ने उसे को मृत घोषित कर दिया है। पुलिस घटना स्थल पर लगे तमाम सीसीटीवी कैमरा को खंगाल रही है। वहीं घटना स्थल पर एफएसएल टीम को भी बुलाया गया है। मिली जानकारी के अनुसार पुलिस ने घटना स्थल से कई खोखे और एक मैगजीन बरामद किया है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ये हत्या जमीनी विवाद में की गई है। फिलहाल पुलिस मामले की तहकीकात में जुटी है।

चक्रवाती तूफान दाना : सूबे के कई जिलों में बारिश की संभावना

पटना। बंगाल की खाड़ी से उठा चक्रवाती तूफान दाना का असर पश्चिम बंगाल सहित बिहार के 19 जिलों में देखने को मिलेगा। मौसम केंद्र के अनुसार लैंडफॉल प्रोसेस 5 घंटे चलेगी। 120 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से तूफान ओडिशा के उत्तरी हिस्से से गुजरने की संभावना जतायी जा रही है। तटीय इलाकों में ज्यादा बारिश हो सकती है। इसे लेकर ओडिशा, पश्चिम बंगाल और बिहार में अलर्ट जारी किया गया है। बिहार के 19 जिलों में तेज हवा और भारी बारिश की संभावना जतायी गई है। पटना, रोहतास, औरंगाबाद, गया, बक्सर, अरवल, जहानाबाद, नालंदा, भोजपुर, नवादा, बेगूसराय, खगड़िया, लखीसराय, मुंगेर, जमुई, भागलपुर, बांका,भभुआ, शेखपुरा जिलों में तेज आंधी-पानी को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। बिहार के इन 19 जिलों में 30-40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा चलने और वज्रपात की संभावना जतायी गयी है।वही भुवनेश्वर और कोलकाता एयरपोर्ट पर 16 घंटे यानी आज शाम 5 बजे से लेकर अगले दिन 25 अक्टूबर की सुबह 9 बजे तक तक 300 फ्लाइट्स रद्द रहेगी। वहीं 552 ट्रेनें को भी रद्द किया गया है। अलर्ट जारी होने के बाद ओडिशा में एनडीआरएफ और एसडीआरएफ और फायर बिग्रेड की 288 टीमों की तैनाती की गयी है। वही तूफान प्रभावित इलाकों में 25 अक्टूबर तक स्कूल और कॉलेज बंद रहेंगे। इस दिन सराकरी कर्मचारियों की छुट्टियों को रद्द कर दिया गया है।

पावरग्रिड POWERGRID

सूचना

1. विद्युत अधिनियम, 2003 की धारा 79(1)(घ) के साथ पठित धारा 62 और केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग (व्यवसाय का संचालन) विनियम, 2023 के विनियम 15(1)(क) और विनियम 23 के साथ पठित केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग (टैरिफ विनियम के नियम व शर्तें) 2024 के अंतर्गत उत्तरी, पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्र में **''बाढ़ ट्रांसमिशन सिस्टम'' के तहत परिसंपत्तियों के लिए टैरिफ के निर्धारण हेतु याचिका।**
2. उपरोक्त वर्णित ट्रांसमिशन सिस्टम के लाभार्थी हैं: (i) बिहार स्टेट पावर (होल्डिंग) कंपनी लि., (ii) पश्चिम बंगाल राज्य विद्युत वितरण कंपनी लि., (iii) ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ उड़ीसा लि., (iv) दामोदर वैली कॉर्पोरेशन, (v) विद्युत विभाग, सिक्किम सरकार ,गंगटोक, (vi) झारखंड बिजली वितरण निगम लि., (vii) महाराष्ट्र राज्य विद्युत वितरण कंपनी लि., (viii) गुजरात ऊर्जा विकास निगम लि., (ix) विद्युत विभाग–गोवा, (x) डीएनएचडीडी पावर डिस्ट्रीब्यूशन कॉर्पोरेशन लि., (xi) छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, (xii) महाराष्ट्र राज्य विद्युत वितरण कंपनी लि., (xiii) अजमेर विद्युत वितरण निगम लि., (xiv) जयपुर विद्युत वितरण निगम लि., (xv) जोधपुर विद्युत वितरण निगम लि., (xvi) पंजाब स्टेट इलेक्ट्रिसिटी कॉरपोरेशन लिमिटेड, (xvii) हरियाणा पावर परचेज सेंटर, (xviii) जम्मू एंड कश्मीर पावर कॉरपोरेशन लि, (xix) उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लि., (xx) बीएसईएस यमुना पावर लि., (xxi) बीएसईएस राजधानी पावर लि., (xxii) टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लि., (xxiii) चंडीगढ़ विद्युत विभाग, (xxiv) उत्तरांचल पावर कॉर्पोरेशन लि., (xxv) उत्तर मध्य रेलवे, (xxvi) नई दिल्ली नगरपालिका परिषद और (xxvii) हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड।
3. **टैरिफ विवरण:**

क) 2019–24 ब्लॉक

परिसंपत्ति विवरण	ई–सीओडी	31.03.2024 को पूर्णता लागत	टैरिफ	2019–20	2020–2021	2021–22	2022–23	2023–24
परिसंपत्ति–1	21.12.2010	264368.51	ट्रूइंग अप पर आधारित संशोधित एएफसी	34668.37	33229.71	32791.87	33411.70	24388.56
परिसंपत्ति–2	25.12.2010	134538.90		17618.95	16820.31	16332.68	16195.75	10570.38

ख) 2024–29 ब्लॉक

परिसंपत्ति विवरण	31.03.2029 को पूर्णता लागत	टैरिफ	2024–25	2025–26	2026–27	2027–28	2028–29
परिसंपत्ति–1	264477.51	एएफसी	24595.89	24484.75	24369.46	24305.46	24412.33
परिसंपत्ति–2	134609.91		10422.55	10351.01	10276.49	10205.44	10178.66

4. टैरिफ के निर्धारण हेतु किए गए आवेदन की एक प्रति आवेदक की वेबसाइट **www.powergridindia.com** पर प्रकाशित की गई है।
5. आवेदन में निहित टैरिफ के निर्धारण हेतु प्रस्तावों पर लाभार्थी सहित किसी व्यक्ति द्वारा सुझाव और आपत्तियां, यदि कोई हों, आवेदक को उसके कारपोरेट कार्यालय के पते पर एक प्रति सहित, सचिव, केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग, तीसरा एवं चौथा तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, जनपथ, नई दिल्ली–110001 (या अन्य पते पर जहां आयोग का कार्यालय स्थित है) को इस सूचना के प्रकाशन के 30 दिनों के अंदर प्रस्तुत की जा सकती हैं।

स्थान: गुड़गांव **हस्ता./–**

तिथि: 24.10.2024 **महाप्रबंधक (वाणिज्यिक)**

PG/CC/Notice-108/Advt-140/2024-25/VIVID

पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

कॉर्पोरेट कार्यालय: ''सौदामिनी'', प्लॉट नं. 2, सैक्टर–29, गुरूग्राम–122001, (हरियाणा), फोन: 0124–2571700–719

पंजीकृत कार्यालय: बी–9, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–110016,

फोन: 011–26560112, 26560121 www.powergrid.in, **CIN : L40101DL1989GOI038121**

एक महारत्न पीएसयू

संक्षिप्त खबरें

चूल्हे की चिंगारी से जला घर

कल्याणपुर, समसतीपुर। प्रखंड क्षेत्र के खरसंड पश्चिमी पंचायत वार्ड 13 में खाना बनाने के क्रम में चूल्हे की चिंगारी से घर में लगी आग जलकर राख हो गया। जिसमें घर में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया। स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से आग पर काबू पाया गया। ग्राम पंचायत राज के मुखिया शोभिता देवी, पैक्स अध्यक्ष सुनील कुमार राय, अंचल पदाधिकारी शशि रंजन कुमार को आग लगने की सूचना दी। सूचना मिलते ही अंचल पदाधिकारी ने हल्का कर्मचारी फारुख अंसारी को जायजा के लिए भेजा। हल्का कर्मचारी के प्रतिवेदन आने के बाद अग्नि पीड़ित किशोर पंडित की पत्नी शकुंती देवी को आपदा से मिलने वाली 12000 राशि की चेक प्रदान की गई। मौके पर अंचल के सहायक प्रशासी पदाधिकारी मनोज कुमार झा, अंचल नाजिर रणधीर राम, कमल किशोर सहनी, राज नारायण महतो मौजूद थे।

बच्चे के अपहरण मामले में महिला गिरफ्तार

मधुबनी जयनगर पुलिस ने दशहरा के वक्त दो वर्षीया बच्चे प्रियांश के लापता की गुथ्थी सुलझा लिया है। तथा मंगलवार की रात बच्चे को लदनिया से बरामद कर आरोपित महिला को गिरफ्तार किया है प्रभारी थानेदार गोपाल कृष्ण ने बताया कि गुप्त सुचना मिली कि दशहरा में जयनगर से लापता बच्चे महुलिया में है। सुचना पर पुलिस लदनिया थाने के महुलिया पहुंचकर लापता बच्चे को बरामद किया है। इस मामले में पुलिस ने बच्चे के अपहरण किये जाने का खुलासा किया है। गिरफ्तार अपहर्ता महुलिया निवासी बबिता देवी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। दशहरा के समय थाना में बच्चे के पिता के बयान पर गुमशुदगी एफआईआर दर्ज हुआ था।

विधायक ने दोनों मृतक के स्वजनों से मिलकर दी सांत्वना

विभूतिपुर/समस्तीपुर प्रखंड के भूसवर पंचायत वार्ड 11 सुरौली निवासी पिंटू झा के पुत्र शिवम कुमार का शव अखिलेश ईसर के घर फांसी के फंदे से लटका मिला था। वहीं गंगौली मंदा पंचायत निवासी जितेश साह के पुत्र रामदेव साह 11 वर्ष की मौत पानी में डूबने से हो गया था। गुरुवार को स्थानीय विधायक अजय कुमार ने दोनों मृतक के घर पहुंच कर स्वजनों से मिलकर सांत्वना दिया। मौके पर विश्वनाथ महतो, पवन सिंह, शिवम कुमार, केशव झा, अंजनी भूषण, मुखिया मनोज यादव, बबलू कुमार आदि मौजूद थे।

हत्या की प्राथमिकी दर्ज, आधा दर्जन नामजद

विभूतिपुर/समस्तीपुर थाना क्षेत्र के शाहपुर वार्ड 11 निवासी रामाश्रय झा का पुत्र पिन्टू झा ने अपने पुत्र शिवम कुमार 18 वर्ष की हत्या मामले को लेकर स्थानीय थाना में प्राथमिकी दर्ज कराया है। जिसमें गांव के ही अखिलेश ईसर, अखिलेश ईसर की पत्नी, अखिलेश ईसर की पुत्री शालू कुमारी, उनके भांजा खम्हार निवासी निवासी राजीव कुमार, लूटन ईसर के पुत्र संतोष ईसर, मन्टून ईसर के पुत्र प्रिंस कुमार को नामजद व अज्ञात को आरोपित किया है। दर्ज प्राथमिकी में बताया है कि मेरे पुत्र शिवम कुमार को भूसवर पंचायत के वार्ड 12 निवासी अखिलेश ईसर और उनकी पत्नी बुलाकर साजिश के तहत हत्या करवा दी है। हत्या की सूचना पुलिस द्वारा हमें 23 अक्टूबर की रात्रि लगभग 2:40 बजे दी गई। शिवम का शव हमें अखिलेश ईसर के बीच वाले कमरे में मिला। घटना से पूर्व अखिलेश ईसर, उनका भांजा खम्हार निवासी राजीव कुमार, एवं संतोष ईसर द्वारा घर पर आकर परिवार को जान से मारने की धमकी भी दिया गया था। थानाअध्यक्ष आनंद कुमार कश्यप ने बताया कि पीड़ित परिवार के आवेदन के आधार पर प्राथमिकी दर्ज की गई है। आगे की कारवाई जारी है।

मुख्यमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से किया पंचायत सरकार भवन का शिलान्यास व उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पंचायती राज विभाग अंतर्गत 7,160 करोड़ रुपये की लागत से 2615 पंचायत सरकार भवन एवं राज्य पंचायत संसाधन केंद्र सोनपुर के भवन का शिलान्यास एवं 13 जिला पंचायत संसाधन केन्द्रों, 65 पंचायत सरकार भवन का उद्घाटन किया ।

पंचायती राज विभाग अंतर्गत ई-ग्राम कचहरी ऑनलाइन पोर्टल एवं राज्य के सभी जिला परिषदों का पोर्टल का लोकार्पण किया गया। दरभंगा जिला के 115 पंचायत सरकार भवनों का शिलान्यास जिनमें बेनीपुर प्रखंड अंतर्गत 09 , केवटी प्रखंड अंतर्गत 15 , मनीगाछी 11 , बिरौल प्रखंड अंतर्गत 13 , गौड़ाबौराम प्रखंड अंतर्गत 06 , हनुमाननगर प्रखंड अंतर्गत 08 , दरभंगा सदर,हायाघाट, सिंहवाड़ा प्रखंड अंतर्गत 04-04 , बहेड़ी प्रखंड अंतर्गत 11 , तारडीह प्रखंड अंतर्गत एक , अलीनगर प्रखंड अंतर्गत 05 , बहादुरपुर प्रखंड अंतर्गत 07 , कुशेश्वरस्थान, कुशेश्वरस्थान पूर्वी किरतपुर प्रखंड अंतर्गत 02-02 , जाले प्रखंड अंतर्गत 11 पंचायत सरकार भवन शामिल है। अलीनगर प्रखंड अंतर्गत नरमा नवानगर पंचायत सरकार भवन नरम नवानगर का उद्घाटन किया गया। उल्लेखनीय है कि एक पंचायत सरकार भवन के लिए 50 डिसमिल जमीन एवं तीन करोड़ 5 लाख रुपए की लागत से निर्माण होता है।

मुख्यमंत्री के द्वारा आज दरभंगा जिले को पंचायत विभाग के द्वारा बहुत बड़ी सौगात दी गई है। पंचायत में यह मिनी सचिवालय के रूप में कार्य करेगा जहां सभी विभागों के अधिकारी और कर्मी उपस्थित होकर आम जनता की समस्याओं का समाधान करेंगे। इस अवसर पर समाहरणालय अवस्थित बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर सभागार में जाले विधायक जीवेश कुमार मिश्रा, अलीनगर विधायक मिश्री लाल यादव, उप विकास आयुक्त चित्रगुप्त कुमार, अपर समाहर्ता विधि व्यवस्था राकेश रंजन, उप निदेशक जन-संपर्क सत्येंद्र प्रसाद, जिला पंचायती राज पदाधिकारी प्रशांत कुमार, रविंद्र कुमार कार्यपालक अभियंता भवन आदि पदाधिकारी एवं कर्मी गण उपस्थित थे।

बरही पंचायत मे चल रहे विकास योजना का निरीक्षण किया गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर प्रखंड़ विकास पदाधिकारी राजीव रंजन के द्वारा जयनगर के दुल्ली पट्टी एवं बरही पंचायत मे चल रहे विकास योजना का निरीक्षण किया , तथा आवश्यक निर्देश भी दिये। उन्होने निरीक्षण में नल जल का योजना में अधिकतम वार्ड में नल जल छोटी छोटी समस्याओ के कारण विगत कई माह से बंद पाया गया। कई वार्ड में टंकी नही है कई वार्ड में मोटर खराब होने के कारण नल में पानी नही आने के कारण संबंधित अधिकारी को पीएचडी विभाग से समन्वय स्थापित करते हुए जल्द से जल्द सभी समस्याओ का समाधान का निर्देश भी दिये। प्रत्येक वार्ड के प्रति घर में नल जल का पानी देना सुनिश्चित करने का निर्देश भी दिये बीडीओ ने कहा कि सरकार के द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओ का लाभ हर हाल में लोगो को मिलना चाहिए इसमें लापरवाही करने वालो पर ठोस कानूनी कार्रवाई की जाएगी निरीक्षण के दौरान पंचायत के जन प्रति निधि के साथ समीक्षात्मक बैठक कर विकास योजनाओ की जानकारी लेते हुए लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अंतर्गत सभी पंचायत में कचरा का उठाव सुचारू रूप से संचालन करने हेतु पंचायत मुखिया सहित सभी वार्ड सदस्यो को निर्देश दिये इस दौरान उनके साथ पंचायत सचिव सहित अन्य अधिकारी लोग उपस्थित रहे।

नगर पंचायत बोर्ड की बैठक में सीसीटीवी सहित अन्य सुविधा को लेकर पांच लाख की स्वीकृति

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर नगर पंचायत की साधारण बोर्ड की सभागार में बैठक मुख्य पार्षद कैलाश पासवान की अध्यक्षता में हुआ कार्यपालक पदाधिकारी हिमानी कुमारी ने बताया की बैठक में शहर के विकास योजनाओ को पर चर्चा किया गया। जिसके तहत साफ सफाई लाइट नाला एवं सड़क निर्माण पर सभी वार्ड सदस्यो से विचार लिया गया। बैठक में गत बैठक की संपुष्टि प्रदान करना वित्तीय वर्ष 2024 एवं 25 के वसूली लक्ष्य को 75 लाख से घटकर 63 लख रुपए करना अगामी छठ पर्व को लेकर घाट की सफाई तोरण द्वार अस्थाई शौचालय सीसीटीवी कैमरा सहित अन्य सुविधा को लेकर पांच लाख की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान करने जल जमाव निकासी को लेकर पांच लाख शहर के मुख्य मार्ग पर बने डिवाइडर के रंग रोहन वार्ड तीन में नए चबूतरा निर्माण करने वार्ड 13 में पीसीसी सड़क एवं नाला निर्माण करने शहर के मुख्य चार जगह पर पीने के पानी के लिए आरो मशीन लगाने तिरंगा लाइट लाइट लगाने नल योजना को लेकर मिस्त्री संविदा के आधार पर रखने को लेकर प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। बैठक में वार्ड सदस्यो के द्वारा अपने अपने वाडो में डेवलपमेट को लेकर चर्चा की गई। शहरी क्षेत्र के वार्ड एक से लेकर वार्ड 14 तक विभिन्न योजनाओ पर वार्ड सदस्यो ने बैठक में विचार रखे। बैठक मे उपमुख्य पार्षद माला देवी वार्ड सदस्य शिवजी पासवान हनुमान मोर सभी वार्ड सदस्य मौजूद थे।

तस्करी कर ले जा रहे भैंस को किया बरामद

कल्याणपुर, प्रात :किरणसंवाददाता

थाना क्षेत्र के बरहेता बैजलपुर सब्जी मंडी के समीप स्थानीय लोगों ने एक छह चक्का कंटेनर ट्रक पर तिरपाल से ठक कर तस्करी की भैंस को बरामद कर लिया। ओर पुलिस के हवाले कर दिया। भैंस के चारों पैरों को रसी से बांध कर ट्रक पर दोतह ट्रक में बांस का तह खाना बना कर लाद कर लेजाते हुए देखा। भैंस को देखते हुए ही स्थानीय लोगों ने रोक कर देखा तो भैंस से लदी ट्रक को रोक लिया। उसके बाद स्थानीय ऐनिमल वेलफेयर फाउंडेशन ट्रस्ट के सचिव संजीव देव व बरहेता पंचायत के पुर्व मुखिया रायबहादुर सहनी ने पहल करते हुए थाना अध्यक्ष विकास केशव को सुचना दी गई। सुचना पर पहुंचे कल्याणपुर थाने के एएसआई हरेंद्र तिवारी ने दलबल के साथ पहुंचकर कर भैंस लोड ट्रक को कब्जे में लेकर थाने ले आया। इस की सुचना थाना अध्यक्ष सह प्रशिक्षु डीएसपी विकास केशव के द्वारा वरिय पदाधिकारी को देते हुए जप्त पशुओं को श्री गौशाला समस्तीपुर के उप शाखा मधुवन में सहायक प्रबंधक शिव नाथ पासवान को सौंप दिया गया है। जिसमें लगभग 40 भैंस पाया गया। वही ट्रक पर सवार अन्य भैंस तस्कर मौके से फरार हो गया। वही पुलिस ट्रक चालक को गिरफ्तार कर लिया। जिसका पहचान सुपौल जिला के त्रिवेणीगंज थाना क्षेत्र के सिमरिया पीप गांव के, कन्नौज राम का पुत्र सुबोध कुमार राम के रूप में पहचान हुई। चालक ने बताया कि पटना जिले के नगर नौश से लोड कर फारबिसगंज जाना था। इस संबंध में थाना अध्यक्ष सह प्रशिक्षु डीएसपी विकास केशव ने बताया कि ट्रक चालक व पशु तस्कर के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज करते हुए पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई है।

समाजसेवी विश्वनाथ चौधरी उर्फ तूफान ने किया मृतक के स्वजनों को आर्थिक सहयोग

प्रात :किरणसंवाददाता

विभूतिपुर/समस्तीपुर प्रखंड के चोरा टभका वार्ड 05 निवासी उपेन्द्र राय के पुत्र मुकेश कुमार राय की मौत, पानीपत में छत से गिरने के कारण हो गया था। घटना सूचना मिलते ही बृहस्पतिवार को समाजसेवी विश्वनाथ चौधरी उर्फ तूफान ने मृतक के घर पहुंच कर मृतक के स्वजनों को ढांढस बढ़ाते हुए सांत्वना दिया एवं अपने निजी कोष से आर्थिक सहयोग किया।मौके पर रंजीत शर्मा ,महेश कुमार ,जगबली राय, रामबाबू राय, समाजसेवी पंचायत अध्यक्ष दिनेश कुमार सिंह ,विनोद साह आदि मौजूद थे।

फोन कॉल कर बुलाकर मारा था गोली, एक गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी बेनीपट्टी के धनोज के रहने वाले हरिमोहन झा को पहले फोन कॉल कर चौक पर बुलाया गया था उसके बाद गोली मारा था घटना का हुआ है खुलासा घटना के बाद उन्हें आनन-फानन में पुलिस प्रशासन और स्थानीय लोगो के सहयोग से बेनीपट्टी अनुमंडल अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां उनकी मौत हो गया। इस घटना के बाद दहशत फैल गया था। दूसरी ओर पुलिस एक्टिव होकर अपराधियो के पते पर छापे मारने लगे। इसी क्रम में पुलिस टीम द्वारा मोबाइल नंबर ट्रैक कर अर्जुन यादव के ठिकाने पर छापेमारी कीया गया मौके से गिरफ्तार कर लिया गया। परिजनों का आरोप है कि हत्या वाले घटनास्थल पर इसी ने हरि मोहन को बुलाया था।प्रशासन ने बताया कि आरोपी अर्जुन यादव ने इस बात को स्वीकारा है कि वो अपने साथी मनोज यादव बॉबी मिश्रा हैप्पी मिश्रा मिथुन गिरी और मुकेश यादव के साथ शराब का धंधा करता था। हरिमोहन झा बार बार व्यवधान उत्पन्न करते थे। इसी वजह से उन लोगो ने बीते 21 तारीख को हरि मोहन को गांव के चौक पर बुलाकर गोली मारा।घटना का सफल खुलासा पुलिस बल के कुंदन बास्की हरे राम पासवान मुकेश कुमार रणजीत कुमार मिथिलेश कुमार और अश्विन निराला के द्वारा मिल कर किया गया।

चेक बाउंस मामले में दो वर्ष की कारावास व पचास हजार रुपये अर्थदण्ड की सजा

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा(आससे)। सिविल कोर्ट दरभंगा के अपर मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी नवम आरती कुमारी की कोर्ट ने एन आई ऐक्ट (चेक बाउंस)के एक आपराधिक मामले में गुरुवार को बिरौल थानाक्षेत्र के बैरमपुर गांव के स्वर्गीय गोपाल चौधरी के पुत्र रामनरेश चौधरी को दो वर्ष की कारावास और पचास हजार रुपये अर्थदण्ड की सजा सुनाई है। वहीं कम्पनसेशन के लिये अठारह लाख रुपये पीड़ित वादी को हस्तगत कराने का भी निर्णय सुनाई है। वादी का वकील पंकज कुमार सिंह ने बताया कि बहेड़ी थाना क्षेत्र के पबरा गांव के निवासी गणेश प्रसाद सिंह ने बैरमपुर गांव के रामनरेश चौधरी को 18 जुलाई 2017 तक 945639 रुपये का मुर्गी का चूजा और दाना की आपूर्ति किया। जिसमें से चौधरी ने 45639 रुपये नगद भुगतान किया । वहीं शेष बकाया राशि कि दो चेक क्रमशः 5 लाख और 4 लाख का दिया। मूर्गी के चूजा और दाना आपूर्तिकर्ता ने दोनों चेक को बैंक में जमा किया। गत 2 नवम्बर 2018 को चेक बाउंस हो जाने पर चौधरी को बिधिक नोटिस किया गया। फिर भी 9 लाख रुपये भुगतान नहीं करने पर गणेश प्रसाद सिंह ने दिसम्बर 2018 में नालिसी संख्या 1655 सीजेएम दरभंगा की कोर्ट में संस्थित कराया। अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी आरती कुमारी की कोर्ट ने मुकदमा के ट्रायल पश्चात 24 अक्टूबर को चेक बाउंस केस के आरोपी रामनरेश चौधरी को दोषी करार दिया और कम्पनसेशन 18 लाख रुपये भुगतान करने की निर्णय सुनाई है। वहीं दो साल की कारावास की सजा के साथ ही 50 हजार रुपये अर्थदण्ड की सजा सुनाई है।अब बैंक खाते में जमा राशि कम रहने पर अधिक राशि का चेक प्रदान करने वालों की खैर नहीं है।

समस्तीपुर की बेटियां कला में उड़ान भरने के लिए हो रही है तैयार, मन में हो तमन्ना तो पा सकते हैं मंजिल

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

आरसेटी में 30 दिवसीय मिथिला पेंटिंग प्रशिक्षण के 25 वां दिन प्रशिक्षुओं ने चीनी मिल चौक स्थित नाबार्ड संपोषित मिथिला ग्राम नाबार्ड रुरल मार्ट का अवलोकन किया। अनमोल उपहार सेवा फाउंडेशन के मिथिला पेंटिंग कलाकार प्रेरणा कुमारी एवं गायत्री कुमारी ने मार्ट संचालन, मिथिला कला, उत्पादों की विपणन, कच्चा माल की आपूर्ति, नए-नए एवं विभिन्न तरह के उत्पादों पर मिथिला कला के बारे में जानकारी दी। उन्होंने अन्य राज्यों में लगाए गए प्रदर्शनी के बारे में जानकारी देते हुए अपना अनुभव भी साझा की। आरसेटी के निदेशक ने कहा कि सभी प्रशिक्षणार्थी को अपने उत्पाद की विपणन हेतु एक प्लेटफॉर्म मिल गया है। सभी इस कला को सीख कर उड़ान भरने के लिए तैयार हो रही है। सभी को अपना स्वरोजगार स्थापित कर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। औसेफा के निदेशक देव कुमार ने कहा कि मिथिला कला के क्षेत्र में स्वर्णिम अवसर है। सभी प्रशिक्षु कलाकार अपने उत्पादों की विपणन इस रुरल मार्ट के माध्यम से कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अपने कला के इस हुनर को निरंतर अभ्यास से निखार सकते हैं। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की। मौके पर वरीय संकाय श्रवण कुमार झा, औसेफा के सचिव ललित कुमार, सेल्सपर्सन राम कुमार, खुशबू कुमारी, पूजा कुमारी, पिंकी देवी, प्रीति कुमारी, साक्षी कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, तनु श्री, अनामिका कुमारी आदि थे। दूसरी ओर आरसेटी में अगरबत्ती प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन भी की गयी।

सरदार पटेल की 149 वीं जयंती पर आयोजित होगा व्याख्यान

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। भारत के पहले गृहमंत्री लौह पुरुष सरदार पटेल की 149 वीं जयंती पर सरदार पटेल की नजर में राष्ट्रीय एकीकरण विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना एवं राजनीति विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होगा। संभावित तिथि 30 अक्टूबर, बुधवार को आयोजित होने वाले व्याख्यान संबंधित जानकारी साझा करते हुए विभागाध्यक्ष सह व्याख्यान के प्रेसीडेंट प्रो मुनेश्वर यादव ने बताया कि राजनीति विज्ञान विभाग अपने छात्र-छात्राओं व शोधार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिये प्रतिबद्ध है। समय दर समय विभाग में संगोष्ठी, विचार -गोष्ठी, परिचर्चा व व्याख्यान का आयोजन किया जाता है जिससे राजनीति शास्त्र के विद्यार्थियों और अध्येताओं को राष्ट्रीय नीति, अंतरराष्ट्रीय संबंधों, राजनीतिक विधि प्रणाली व विभिन्न वादों और विचारधाराओं का बोध हो सके। सरदार पटेल की जयंती पर आयोजित इस व्याख्यान में स्वागत संबोधन रसायन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सोनू राम शंकर का होगा।बीज वक्तव्य वरीय शिक्षक डॉ. मुकुल बिहारी वर्मा और वक्ता डॉ. मनोज कुमार होंगे। मुख्य वक्ता के रूप में सामाजिक विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो. प्रभाष चंद्र मिश्रा विषय पर अपना बौद्धिक प्रस्तुत करेंगे।

पंचायत सरकार भवन से गांधी के ग्राम सुराज का सपना हो रहा साकार : सांसद

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।भारतीय लोकतन्त्र की आत्मा गाँव में बसती हैं। इसलिए गांव का विकास किए बिना प्रदेश और देश का विकास संभव नहीं है। वास्तविकता यहीं है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जिस ग्राम सुराज की कल्पना की थी उसे देश के पीएम नरेन्द्र मोदी तथा बिहार के सीएम नीतीश कुमार साकार कर रहे। दरभंगा जिला में 7160 करोड़ की लागत से 115 पंचायत सरकार भवन के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के द्वारा वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम शिलान्यास होने के बाद उपरोक्त विचार व्यक्त किए। सांसद डा ठाकुर ने 115 पंचायत सरकार भवन को दरभंगा के विकास में मील का पत्थर बताते हुए कहा कि पंचायत के अंदर आम लोगों को हर तरह की समस्याओं का समाधान एक क्षत के अंदर समाधान होने अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। सांसद डा ठाकुर ने पंचायतों सरकार भवन को मिनी सचिवालय बताते हुए कहा कि एनडीए सरकार में गांव के अंदर ही हर विभाग के अधिकारी और कर्मी ससमय उपस्थित होकर जनता की समस्याओं को प्राथमिकता के तहत निदान करेंगे। सांसद डा ठाकुर ने जिले में एक साथ 115 पंचायत सरकार भवन के शिलान्यास करने के लिए बिहार के सीएम नीतीश कुमार उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी, शी विजय सिन्हा तथा अन्य मंत्रियों को साधुवाद देते हुए कहा कि देश के साथ साथ बिहार में भी चतुर्दिक विकास की गंगा बह रही है।

सरदार पटेल की 149 वीं जयंती पर आयोजित होगा व्याख्यान

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। भारत के पहले गृहमंत्री लौह पुरुष सरदार पटेल की 149 वीं जयंती पर सरदार पटेल की नजर में राष्ट्रीय एकीकरण विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना एवं राजनीति विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होगा। संभावित तिथि 30 अक्टूबर, बुधवार को आयोजित होने वाले व्याख्यान संबंधित जानकारी साझा करते हुए विभागाध्यक्ष सह व्याख्यान के प्रेसीडेंट प्रो मुनेश्वर यादव ने बताया कि राजनीति विज्ञान विभाग अपने छात्र-छात्राओं व शोधार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिये प्रतिबद्ध है। समय दर समय विभाग में संगोष्ठी, विचार -गोष्ठी, परिचर्चा व व्याख्यान का आयोजन किया जाता है जिससे राजनीति शास्त्र के विद्यार्थियों और अध्येताओं को राष्ट्रीय नीति, अंतरराष्ट्रीय संबंधों, राजनीतिक विधि प्रणाली व विभिन्न वादों और विचारधाराओं का बोध हो सके। सरदार पटेल की जयंती पर आयोजित इस व्याख्यान में स्वागत संबोधन रसायन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सोनू राम शंकर का होगा।बीज वक्तव्य वरीय शिक्षक डॉ. मुकुल बिहारी वर्मा और वक्ता डॉ. मनोज कुमार होंगे। मुख्य वक्ता के रूप में सामाजिक विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो. प्रभाष चंद्र मिश्रा विषय पर अपना बौद्धिक प्रस्तुत करेंगे।

वर्चुअल माध्यम से किया गया पंचायत सरकार भवन का शिलान्यास

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा बिहार के पंचायत सरकार भवन का वर्चुअल माध्यम से शिलान्यास किया गया मधुबनी में भी 65 पंचायत भवन का वर्चुअल माध्यम से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार शिलान्यास किये 6 से 9 महीना के अंदर जिले के 65 पंचायत भवन का भवन का निर्माण कार्य पूर्ण होगा भवन निर्माण विभाग के एक्सक्यूटिव इंजीनियर विजय कुमार ने जानकारी देते हुए बताया की सरकार के निदेर्शानुसार कार्य गुणवत्तापूर्ण एवं तेजी से कराया जाएगा।

शिक्षा के बिना किसी समाज या राष्ट्र का निर्माण संभव नहीं : प्रो विनय चौधरी

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)।विधायक प्रो विनय कुमार चौधरी ने कहा कि समुचित शिक्षा के बगैर किसी समाज या राष्ट्र का निर्माण संभव नहीं है ।विद्या से हीन मनुष्य पशु के समान होता है ।शिक्षा के बिना मनुष्य विवेकशील और शिष्ट नहीं बन सकता है ।विवेक से ही मनुष्य में सही और गलत का चयन करने की क्षमता आती है । वे बुधवार को प्रखंड क्षेत्र के सज्जनपुरा पंचायत अंतर्गत कन्हौली गांव में मध्य विद्यालय का नवनिर्मित भवन का लोकार्पण करते हुए उक्त बातें कही ।इस दौरान उन्होंने आम लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक होने की अपील करते हुए कहा कि शिक्षा के बिना यह जीवन व्यर्थ है और इसमें सहयोग के लिए सरकार पूर्ण तत्पर है ।वह समय बीत चुका है जब लोग समाज में कहा करते थे कि आधी पेट खाकर के भी बच्चे को शिक्षा अवश्य दें। लेकिन अब सरकार आपके बच्चों के शिक्षा के लिए कृत संकल्पित है ।खासकर बिहार के लोकप्रिय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शिक्षा के क्षेत्र में अलख जगाने के लिए एक से एक अभिनव प्रयोग किया है । जिसमें पोशाक , पाठ्य पुस्तक, मध्याह्न भोजन ,छात्रवृत्ति के साथ-साथ छात्र के अनुपात में शिक्षक एवं सभी सुविधा से पूर्ण विद्यालय भवन का निर्माण करवा रही है ।जिससे कि आपके बच्चे इस देश के भविष्य निमार्ता बन सके । विधायक श्री चौधरी ने महिला शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि सरकार ने बिहार में महिला शिक्षा को बढ़ावा देकर बेटियों को नई उड़ान भरने की अवसर और क्षमता दी है ।बिहार एक ऐसा प्रदेश है जहां महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त पोशाक ,छात्रवृत्ति और साइकिल योजना लाकर एक नई दिशा देने का काम किया है ।साथ ही बिहार ऐसा पहला प्रदेश है जहां महिलाओं को 35 प्रतिशत फीसदी आरक्षण देकर आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया है ।इस अवसर पर विधायक श्री चौधरी ने उपस्थित जनसमूह से अपने बच्चों को निश्चित रूप से विद्यालय भेजने का अनुरोध किया और शिक्षा के लिए अपने आप को समर्पित करने का आह्वान किया ।उन्होंने कहा कि विकास योजनाएं ऐसे ही बनती रहेगी और पूर्ण होती रहेगी ।लेकिन शिक्षा का कोई दूसरा विकल्प नहीं है और यह सर्वोपरि है जिसे सभी को आत्मसात कर अपने बच्चों के प्रति समर्पित होना होगा ।विधायक श्री चौधरी आज के इस लोकार्पण कार्यक्रम में विधायक कम और एक सफल शिक्षक के रूप में देखने को मिले जब उनके आह्वान और अनुरोध को लोगों ने भूरी भूरी प्रशंसा की । इस अवसर पर प्रखंड प्रमुख चौधरी मुकुंद राय,जेडीयू के पूर्व उपाध्यक्ष शम्भूनाथ झा, मुखिया कुंदन सिंह ,जदयू के प्रखंड अध्यक्ष कीर्ति मोहन झा,जेडीयू यूथ अध्यक्ष रामशंकर सिंह,संचालक पप्पू सिंह,शशिकांत साह ,बीरबल राय,संजय मिश्रा पप्पू, रीतेश सिंह, पूर्व मुखिया राधेश्याम मंडल,सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

दरभंगा एवं दौराई अजमेर के मध्य चलेगी पूजा स्पेशल ट्रेन

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर। यात्री सुविधा को देखते हुए दरभंगा एवं दौराई (अजमेर) के बीच 05273/05274 दरभंगा-दौराई-दरभंगा छठ पूजा स्पेशल ट्रेन (दो फेरा) का परिचालन किया जायेगा । गाड़ी संख्या 05273 दरभंगा-दौराई स्पेशल दरभंगा से 26 अक्टूबर एवं 02 नवंबर को 13.15 बजे प्रस्थान कर अगले दिन रविवार को 22.30 बजे दौराई पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 05274 दौराई-दरभंगा पूजा स्पेशल दौराई से 27 अक्टूबर एवं 03 नवम्बर को दौराई से 23.45 बजे खुलेगी । यहां से यह गाड़ी विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन मंगलवार को 06.50 बजे दरभंगा पहुंचेगी । अप एवं डाउन दिशा में यह ट्रेन सीतामढ़ी, बैरगनिया, रक्सौल, नरकटियागंज, कप्तानगंज, गोरखपुर, खलीलाबाद, बस्ती, गोंडा, मथुरा जं., जयपुर, अजमेर सहित अन्य स्टेशनों पर रूकते हुए चलेगी । इस स्पेशल ट्रेन में शयनयान श्रेणी के 10 एवं साधारण श्रेणी के 06 कोच होंगे ।

संक्षिप्त खबरें

बाइक चोरी की प्राथमिकी दर्ज

जमुई [झाझा] घर पर लगी बाइक चोरी हो जाने के बाद बाइक मालिक ने थाना में अज्ञात चोर के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। इस संदर्भ में लक्ष्मीपुर मटिया क रहने वाले नरेश कुमार ने बताया कि सिचाई विभाग के नजदीक एक मकान में किराए पर रहता हूं। पेट्रोल पंप से बाइक में तेल भरवाने के बाद अपने घर के पास बाइक लगाकर घर के अंदर चला गया और जब बीस मिनट के बाद घर से बाहर निकला तो बाइक गायब था।

5 लोगों पर बिजली चोरी का प्राथमिकी हुई दर्ज

जमुई [झाझा] बिजली चोरी करने वालों के खिला विद्युत विभाग के द्वारा चलाए जा रहे छापेमारी अभियान के तहत अलग अलग जगहों से पांच लोगों को बिजली चोरी करते पकड़ने के बाद उनलोगों के खिलाफ थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। कनीय विद्युत अभियंता आदित्य कुमार के द्वारा दर्ज करवाए गए आवेदन में बताया गया कि बोसबगान में राबड़ी देवी, जगदीश यादव, सुनीता कुमारी तथा सुंदरनगर मे बेरोनिका मुर्मू और नीतू देवी को अपने अपने घर में अवैध तरीके से बिजली चोरी करते पकड़ा है। उक्त सभी पकड़े गए लोगों ने विभाग को 101904 रुपए की राजस्व क्षति पहुंचाया है।

प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम का एडीएम ने किया शुभारम्भ

समस्या निवारण के लिए सभी विभागों का लगाया गया स्टाल, सभी विभागों में आये 200 आवेदन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई प्रखंड अंतर्गत इंदपै पंचायत के प्रांगण में जिलाधिकारी अभिलाषा शर्मा की अध्यक्षता में ह्लप्रशासन आपके द्वारह्व कार्यक्रम की शुरूआत फीता काट कर एवं दीप प्रज्वलित कर की गई। सर्वप्रथम जिलाधिकारी श्रीमती अभिलाषा शर्मा ने बताया कि ह्लप्रशासन आपके द्वारह्व कार्यक्रम में जिला स्तरीय पदाधिकारी द्वारा बारी बारी से राज्य सरकार के संचालित सभी लोक-कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को देते हुए चर्चा की गई है। साथ ही जिलाधिकारी महोदया ने बताया कि राज्य सरकार कृत संकल्पित हैं जिसके लिए फ्लैक्स के माध्यम से जगह-जगह पर लोक कल्याणकारी योजनाओं का प्रचारझ्रप्रसार तीव्र गति से किया जा रहा है। जिलाधिकारी श्रीमती शर्मा ने आमजनों की समस्या के त्वरित निवारण हेतु सभी जिला एवं प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी को निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी महोदया द्वारा राज्य सरकार के विभिन्न तरह की संचालित लोक कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई ' सभी ने संबोधन को ध्यान पूर्वक सुनने के लिए सभा स्थल पर उपस्थित रहें और अंत तक सुने। जिलाधिकारी महोदया द्वारा सभी विभागों के पदाधिकारियों को आमजनों की समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहने का निदेश दिया गया। ह्लप्रशासन आपके द्वारह्व कार्यक्रम में आमलोगों की उपस्थिति काफी अधिक थी। जिला पदाधिकारी महोदया ने उपस्थित सभी ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि संबंधित विभाग मध निषेध, आईसीडीएस, समाज कल्याण विभाग, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, योजना विभाग,परिवहन विभाग, उद्योग विभाग श्रम विभाग इत्यादि के द्वारा लगाए गए स्टालों पर जाकर अपना आवेदन का निष्पादन करवा सकेंगे। जिलाधिकारी महोदया द्वारा बताया गया कि समेकित बाल विकास सेवा अंतर्गत दी जाने वाली सेवाएं एवं राष्ट्रीय पोषण मिशन अभियान अंतर्गत एनीमिया, वृद्धि निगरानी, पूरक पोषाहार, ह्लपोषण भी पढ़ाई भीह्व, पर्यावरण संरक्षण तथा सेवाओं की गुणवत्ता के वृद्धि एवं पारदर्शिता लाने हेतु तकनीक का उपयोग व पोषण को प्रभावित करने वाले क्षेत्र आदि विषयों पर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जिलाधिकारी महोदया द्वारा सभी सीडीपीओ को निदेशित किया कि वे प्रखंड के प्रत्येक आंगनबाड़ी केंद्रों पर प्रतिदिन औचक निरीक्षण करने को कहा। साथ ही एनीमिया जांच हेतु स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से एनीमिया जांच कैंप लगाकर एनीमिया की जांच करने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी महोदया द्वारा उक्त शिविर में बच्चे का अन्नप्राशन कराया गया। इस अवसर पर अनुमंडल पदाधिकारी अभय कुमार तिवारी मध निषेध अधीक्षक सुभाष कुमार, सिविल सर्जन जमुई तथा जिला जनसंपर्क पदाधिकारी शशांक कुमार सहित सभी जिला व प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे।

दीपावली मनाने की तारीख को लेकर बैठी मंडली, 31 अक्टूबर को मनेगी दीपावली

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। इस बार दीपावली मनाने की तारीख को लेकर भारी संयम से व्याप्त है। कोई 31अक्टूबर तो कोई एक नवंबर को दीपावली होने की बात कह रहा है। दीपावली मनाने के लिए तिथि पर चल रहे संशम की स्थिति को लेकर गिद्धौर के ब्राह्मणों की विद्वत मंडली ने स्थिति स्पष्ट करते हुए हर हाल में 31 अक्टूबर को ही दीपावली मनाने को शुभ बताया है। अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के सदस्य पंडित विमल मिश्रा ने जानकारी देते हुए कहा है कि 31 अक्टूबर को ही दीपावली मनाई जाएगी।बाबा बूढ़ानाथ मंदिर के पंडित कपूरी पंडित ने कहा कि कार्तिक मास के मुख्य पर्व,त्यौहार पर विद्वतजनों द्वारा शास्त्रीय मंथन एवं बनारस पंचांगों के आधार पर निर्णय लिया गया है। इस मौके पर ब्राह्मण महासभा के सदस्य सच्चिदानंद मिश्रा ने बताया कि कार्तिक माह के मुख्य पर्व को जनहित में जानकर हेतु प्रकाशित किया गया है बनारस का पंचांग के अनुसार 29 अक्टूबर मंगलवार को धनतेरस(धनत्रयोदशी) 30 अक्टूबर बुधवार को देव का दीया(छोटी दीपावली) और 31 अक्टूबर गुरुवार को दोपहर 3:00 बजे के बाद प्रदोष काल से दीपावली पूजा शुरू होगी और रात 3 बजे तक सिंह लग्न तक जारी रहेगी। 2 नवंबर शनिवार को अन्नकूट,गोवर्धन पूजा,3 नवंबर को भैया दूज,चित्रगुप्त पूजा 5 नवंबर को छठ का नहाए खाय होगा। 6 नवंबर को खरना, 7 नवंबर को उपवास पहला अर्ध्य और 8 नवंबर को छठ का पारण होगा। 10 नवंबर को अक्षय नवमी,भुआ दान होगा। प्रतिप्रदा में न मनाएं दीपावली ब्राह्मणों की विद्वत मंडली ने तर्क देते हुए बताया कि मुख्यतः दीपावली कार्तिक माह के अमावस्या के दिन होता है। जिसमें प्रदोषकाल से रात भर अमावस्या होती है। इस बार 31 अक्टूबर 2024 गुरुवार की रात अमावस्या बीत रहा है। यह चित्रा एवं प्रीति योग में होगा। दूसरे दिन अमावस्या दिन में सिर्फ शाम 6:12 तक है और फिर प्रतिपदा शुरू हो जाता है। प्रतिपदा में दीपावली नहीं होती है।

शिक्षा-दीक्षा : 22 से 24 तक होगी ऑनलाइन परीक्षा 10 से 20 नवंबर के बीच एडमिट कार्ड होगा डाउनलोड

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। जिले के वैसे छात्र-छात्रा जो टैलेंट सर्च टेस्ट इन साइंस ऑनलाइन प्रतियोगिता परीक्षा के लिए आवेदन नहीं कर सके हैं,उनके लिए अच्छी खबर है। अब 30 अक्टूबर तक ऑनलाइन आवेदन किया जा सकेगा। राष्ट्रीय गणित दिवस 2024 एवं राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित होने वाले श्रीनिवास रामानुजन टैलेंट सर्च टेस्ट इन मैथमेटिक्स एवं सर सीवीरमन टैलेंट सर्च टेस्ट इन साइंस ऑनलाइन प्रतियोगिता परीक्षा के लिए 30 अक्टूबर तक आवेदन किया जा सकता है। छात्रों का मुक्त ऑनलाइन पंजीकरण 30 अक्टूबर तक होगा। एडमिट कार्ड डाउनलोड करने की तिथि 10 से 20 नवंबर निर्धारित की गई है। जबकि ऑनलाइन परीक्षा 22 से 24 नवंबर तक आयोजित की जाएगी। वहीं परिणाम की घोषणा 12 दिसंबर को होगा। छात्रों को ँ३३स्र/ ू२३ल्लश्ल्लिेिङ्क.ल्ल पोर्टल पर अपना पंजीकरण करना होगा। कक्षा 6 से 12वीं तक के विद्यार्थी होंगे शामिल परीक्षा का आयोजन ऑनलाइन होगा। प्रतियोगिता परीक्षा को लेकर शिक्षा विभाग के विज्ञान,प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विभाग के निदेशक सह विशेष सचिव उदयन मिश्रा ने जिला शिक्षा पदाधिकारी को पत्र लिखा है। बता दें की प्रतियोगिता परीक्षा में कक्षा 6 से 12वीं तक के छात्र शामिल होंगे। पत्र के अनुसार राष्ट्रीय गणित दिवस 2024 व राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित होने वाले श्रीनिवास रामानुजन टैलेंट सर्च टेस्ट इन मैथमेटिक्स एवं सर सीवी रमन टैलेंट सर्च टेस्ट इन साइंस ऑनलाइन प्रतियोगिता परीक्षा आयोजन कराने का निर्णय लिया गया है। एक घंटे की होगी परीक्षा,रहेगी नेगेटिव मार्किंग परीक्षा से पूर्व छात्रों को मॉक टेस्ट के लिए लिंक प्रदान किया जाएगा। परीक्षा का आयोजन राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय या पॉलिटेक्निक संस्थान में होगा। परीक्षा में सरकारी व निजी विद्यालय के छात्र शामिल हो सकते हैं। प्रतियोगिता परीक्षा चार शिफ्ट में सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजित की जाएगी। परीक्षा का समय 60 मिनट होगी। जिसमें कुल 25 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। सभी प्रश्नों के लिए चार अंक निर्धारित है। गलत उत्तर देने पर 0.25 अंक की कटौती की जाएगी। गणित व विज्ञान के लिए अलग-अलग प्रश्न पत्र होंगे। प्रश्न पत्र हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों माध्यम में होंगे।

अवैध बालू लोड ट्रैक्टर जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर) ।संग्रामपुर थाना क्षेत्र के विभिन्न बालू घाटों पर अवैध बालू के उठाव एवं परिवहन को लेकर की गई छापेमारी अभियान के तहत गुरुवार की सुबह थाना क्षेत्र के बढोनिया हाई स्कूल के समीप अवैध बालू लोड ट्रैक्टर को जप्त कर थाना लाया गया। इस दौरान पुलिस वाहन को देखते ही ट्रैक्टर चालक ने ट्रैक्टर पर लोड बालू को ट्रैक्टर के डाला से गिराकर मौके से फरार हो गया। थाना अध्यक्ष ने जानकारी देते हुए बताया कि अवैध बालू लोड ट्रैक्टर को जब्त कर अग्रतर कार्यवाही हेतु जिला खनन पदाधिकारी को इसकी सूचना दे दी गई।

5.4 लीटर देसी महुआ शराब के साथ दो कारोबारी गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर) ।अवैध शराब के निर्माण सेवन और परिवहन को लेकर की गई छापेमारी अभियान के तहत बुधवार की देर शाम थाना क्षेत्र के चंदनिया गांव में अवैध देसी महुआ शराब के साथ दो कारोबारी को गिरफ्तार कर मध्य निषेध अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर न्यायिक हिरासत में मुंगेर भेज दिया गया थाना अध्यक्ष तारकेश्वर कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि गिरफ्तार शराब कारोबारी चंदनिया गांव निवासी देव कुमार सहित एक महिला कारोबारी लाल परी देवी को न्याय हिरासत में मुंगेर भेज दिया गया है गिरफ्तार दोनों शराब कारोबारी के पास से 5.4 लीटर देसी महुआ शराब बरामद किया गया इधर शराब के नशे में शोर शराबा कर रहे संग्रामपुर निवासी ब्रह्मदेव तांती को संग्रामपुर पुलिस ने गिरफ्तार कर थाना लाया गया जिसे ब्रेथ एनालाइजर से जांच में शराब पीने की पुष्टि होने के बाद न्यायिक हिरासत में मुंगेर भेज दिया गया।

मध्याह्न भोजन डिप्टी डायरेक्टर बिहार ने किया दर्जनों विद्यालयों का औचक निरीक्षण

● डिप्टी डायरेक्टर ने शिक्षकों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व मध्याह्न भोजन मेन्यु अनुसार संचालन करने तथा विद्यालय परिसर को साफ सफाई का दिया कड़ा निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। शिक्षा विभाग के निर्देश पर गुरूवार को मध्याह्न भोजन डिप्टी डायरेक्टर बिहार बालेश्वर यादव ने प्रखंड के मडैया पंचायत अवस्थित दर्जनों स्कूलों का औचक निरक्षण किया।मडैया पंचायत के राजकीये बुनियादी मध्य विद्यालय नवकाडीह, उत्क्रमित मध्य विद्यालय धरवा,उच्च विद्यालय हिरम्बा,नवीन प्राथमिक विद्यालय बेला का औचक निरीक्षण करते हुए शिक्षा का स्तर व मध्याह्न भोजन का जायजा लिया और विधि व्यवस्था को लेकर कई निर्देश दिए। विद्यालय परिसर में शौचालय की साफ-सफाई, शुद्ध पेयजल का समुचित व्यवस्था,मध्याह्न भोजन,एफ.एल.एन.किट एवं टीएलएम का नियमित उपयोग,वर्ग कक्ष,उपस्थित पंजी,शिक्षक उपस्थिति पंजी,चावल का स्टॉक,रंग-रोगन की जाँच की गई और कड़े निर्देश दिये गये। निरीक्षण के दौरान पाठशाला में मध्याह्न भोजन के साप्ताहिक पोषण चार्ट की जांच की गई। उन्होंने मध्याह्न भोजन डिप्टी डायरेक्टर नही एक शिक्षक के भांति बच्चों को हिन्दी व गणित से आरोही-अवरोही के बारे में बताया एवं उससे संबंधित प्रश्न पूछे जिसका जवाब बच्चों ने बखूबी दिया।मध्याह्न भोजन डिप्टी डायरेक्टर बालेश्वर यादव ने भविष्य के कल्पना को साकार करने के लिए बच्चों को कई गुरुमंत्र दिए।डिप्टी डायरेक्टर बालेश्वर यादव ने स्कूली बच्चों से कहा कि यदि ईमानदारी पूर्वक लक्ष्य निर्धारित किया जाए एवं अभी से ही नियमित पढ़ाई की जाए तो निश्चित रूप से लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। उन्होंने बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि पढ़ाई में दिक्कत हो तो बेहिचक अपने शिक्षकों से जानकारी लेनी चाहिए। मौके पर डिप्टी डायरेक्टर ने शिक्षको को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व मध्याह्न भोजन मेन्यु अनुसार संचालन करने तथा विद्यालय परिसर को साफ सफाई को लेकर कड़े निर्देश दिये। इस मौके पर जमुई डीपीएम दीपक कुमार लक्ष्मीपुर प्रखंड साधन सेवी मध्याह्न भोजन राजीव मिश्रा नवीन प्राथमिक विद्यालय बेला के प्रधानाध्यापिका पुनम कुमारी,पुष्पा कुमारी,नेहा,नरेन्द्र यादव,सीता कुमारी,राजेश कुमार,सुरेन्द्र कुमार ताँती,किशोर कुमार,प्रवीण कुमार उपस्थित थे।

गिद्धौर बाजार के व्यवसाईयों ने डीएम से नो एंट्री लगाने कि लगाई गुहार

गिद्धौर बाजार के सकरी सड़कों पर बालू लाद फरार्टा भरते है मालवाहक ट्रक

● हर वक्त सड़क दुर्घटना का बना रहता है खतरा

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। गिद्धौर बाजार के व्यवसाईयो ने दिन में बाजार कि तंग सड़को से बालू लाद निकल रहे ट्रको के आवागमन पर रोक लगाने कि मांग जिले कि डीएम अभिलाषा शर्मा से की है।बताते चलें की गिद्धौर बाजार होकर कोल्हुआ,दाबिल,गरसंडा होकर जमुई को जोड़ने वाली बायपास सड़क है। महीनो पूर्व से इस बायपास सड़क पर गिद्धौर बाजार होकर बानपुर,दाबिल व चांगोडीह व कोल्हुआ गांव में बने बालू डंप यार्ड पर सैंकड़ो की संख्या में बालू लादने मालवाहक ट्रक पहुंचते हैं। और खनन विभाग स्थानीय प्रशासन द्वारा इन्हे खुली छूट भी दे दी गई है।दिन में हो रहे मालवाहक ट्रको के परिचालन से गिद्धौर बाजार में पूरे दिन अफरा तफरी का माहौल बना रहता है।और हर वक्त बाजार से बालू लाद आ जा रहे सैंकड़ो ट्रकों से दुर्घटना की संभावना बनी रहती है।जिसे लेकर अब गिद्धौर बाजार के दुकानदारों ने जमुई डीएम से सुबह नौ बजे से लेकर रात्रि के दस बजे तक मालवाहक ट्रको के परिचालन पर नो एंट्री लगाने की मांग की है। व्यवसाई संगठन के किशन वर्णवाल,प्रकाश मोदी,सुरेश मोदी, पंकज कुमार,गोपाल कुमार,सुखदेव वर्णवाल,सुबोध वर्णवाल,पप्पू कुमार आरटीआई कार्यकर्ता विमल कुमार मिश्रा ने कहा कि पिछले दो महीने से जिला प्रशासन से दिन में हो रहे बालू लदे ट्रको के परिचालन पर रोक लगाने की गुहार हम दुकानदारों द्वारा लगाई जा रही है। लेकिन जिला प्रशासन और स्थानीय प्रशासन कान में तेल डाल कर अब तक सोया हुआ है। हर रोज कोल्हुआ बायपास सड़क से बालू लाद दिन में हो रहे ट्रकों के परिचालन से गिद्धौर बाजार सहित लार्ड मिंटो टावर चौक के समीप जाम ही जाम लगा रहता है।लेकिन अब तक जिला प्रशासन द्वारा इस गंभीर समस्या पर विचार नही किया जा रहा है। कहा कि जिस प्रकार बालू लदे ट्रको से मोटी रकम उगाही के चक्कर में दिन में भी बालू ढुलाई के लिए संवेदको को हरी झंडी दे दी गई है। उससे किसी भी वक्त गिद्धौर बाजार में अनियंत्रित बालू लदे ट्रकों के चपेट में आ कर किसी भी वक्त स्थानीय दुकानदार सहित अन्य ग्रामीणों की जान जा सकती है।व्यवसाई संगठन के सदस्यो ने जमुई डीएम अभिलाषा शर्मा से दिन दहाडे बालू लदे ट्रकों के धड़ल्ले से हो रहे परिचालन पर रोक लगाने की गुहार लगाई है।

भाजपा एमएलसी ने चरघरा में पार्टी के पदाधिकारियों के साथ कि बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] बुधवार की देर शाम चरघरा में भाजपा एमएलसी लालमोहन गुप्ता भाजपा नेता शैलेश कुमार के आवास पर पहुंचकर स्थानीय लोगों से मुलाकात करते हुए लोगों के साथ बैठक किया। जिसमें क्षेत्र में पार्टी के विस्तार को लेकर लोगों से चर्चा किया। एमएलसी ने इस क्षेत्र का भ्रमण के बारे में बताया कि पार्टी की ओर से दो सितंबर से शुरू है और यह अंतिम पड़ाव पर है 23-25 तक मेघा सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। उसी क्रम में मेरा प्रवास इस क्षेत्र के लिए हुआ है। उन्होनें कहा कि एक करोड़ के लक्ष्य है और लक्ष्य के करीब पार्टी पहुंच चुकी है। इस दौरान उन्होनें कहा कि पार्टी का नारा है कांग्रेस मुक्त भारत और इससे अनुमान लगाया जा सकता है हरियाणा में भी इसका नजारा सामने आया भी है। वही झारखंड और महाराष्ट्र में होने वाले विधानसभा चुनाव पर उन्होनें कहा कि चुनाव लड़ने लिए भाजपा हमेशा तैयार रहती है और दावा के साथ यह कहता हूं कि दोनो राज्यों में भारी बहुमत के साथ भाजपा की सरकार बनेगी। अगले वर्ष बिहार में होने वाले चुनाव को लेकर उन्होनें कहा कि बिहार में फिर से डबल इंजन यानि एनडीए की सरकार बनेगी। इस बार भी विकास का मुदा है और जनता विकास चाहती है। जन स्वराज पार्टी के बारे में एमएलसी ने कहा कि जन स्वराज पार्टी का कोई भविष्य नही है और बिहार की जनताएनडीए और महागठबंधन दो ग्रुप में बंट चुकी है। एमएलसी ने विपक्ष पर हमला करते हुए कहा कि नीतीश कुमार बिहार के सीएम है और एनडीए के मुखिया है उसके नेतृत्व में चुनाव लड़ा जाएगा। बिहार के चुनाव होने के बाद नीतीश कुमार के सीएम बनने पर उन्होनें कहा कि नीतीश कुमार का यह फैसला होगा। एमएलसी ने कहा कि भविष्य में भाजपा का मुख्यमंत्री बनेगा या नही यह अभी नही कहा जा सकता है फिलहाल हमलोगों का मुखिया सीएम नीतीश कुमार है। बैठक में परमेश्वर यादव, नगर अध्यक्ष सूरज सिंह, प्रशांत सुल्तानियां सहित कई लोग मौजूद थे।

जिलाधिकारी ने एशियन हॉकी चैंपियनशिप 2024 ट्रॉफी का किया भव्य स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

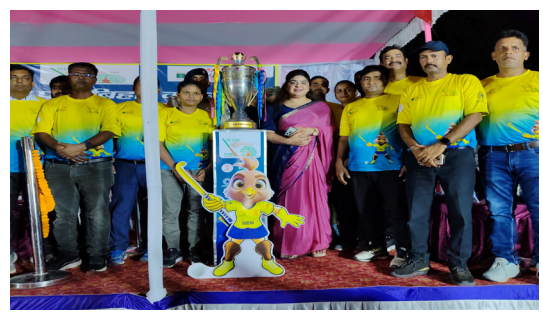

जमुई जिले के श्री कृष्ण सिंह स्टेडियम में एशियन हॉकी चैंपियनशिप (महिला) 2024 ट्रॉफी का भव्य स्वागत जिलाधिकारी श्रीमती अभिलाषा शर्मा की अध्यक्षता में सभी पदाधिकारियों एवं जिला वासियों के द्वारा की गई । जिलाधिकारी श्रीमती शर्मा ने कहा कि खेल का हमारे जीवन में अहम भूमिका है ' जिसे लेकर राज्य सरकार भी कृत संकल्पित है । इसी क्रम में उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण का एक अच्छा उदाहरण है तो हमारी यह टीम है । खेल में अक्सर यह देखा जाता है कि टीम एकता के साथ खेलते हैं और लक्ष्य को प्राप्त करते हैं । जिलाधिकारी महोदया ने कहा कि यह बहुत गर्व की बात है कि राजगीर, बिहार में पहली बार एशियन हॉकी चैंपियनशिप (महिला) 2024 दिनांक 11 नवंबर से 20 नवंबर तक किया जा रहा है, जिसमें एशिया के विभिन्न देशों के टीम हिस्सा लेंगे। जिलाधिकारी महोदया द्वारा बताया गया कि जमुई जिले के हर पंचायतों में एक खेल के मैदान बनाया जाएगा। फिलहाल कई पंचायतों में यह प्रक्रियाधीन है। उन्होंने कहा कि परिवार में अगर महिला पढ़ती है आगे बढ़ती है तो पूरा परिवार आगे बढ़ता है। बच्चियों को संदेश दिया कि आगे बढ़ते रहिए सरकार एवं प्रशाशन आपके साथ है परिवार आपके साथ है लक्ष्य को हासिल करना है रुकना नहीं बढ़ते रहना है। उक्त कार्यक्रम में जिला स्तरीय पदाधिकारी, हॉकी चैंपियनशिप विजेता (महिला), गणमान्य लोग, स्कूली बच्चे तथा अन्य लोग उपस्थित रहे।

ग्रामीणों को सुरक्षित करने के लिए रेलवे ने लगाया वैरियर

बरियारपुर (मुंगेर)। ऋषि कुण्ड हाल्ट के पहुंच पथ में रेल प्रशासन के द्वारा बैरियर लगाई जाने से रतनपुर पंचायत निवासियों को परेशान का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि यातायात के लिए कोई फूल साधन नहीं होने के कारण हम लोग रेल पटरी पार कर इस पार से उस पर आते और जाते हैं रेलवे द्वारा बैरियर लगाने से कोई भी यात्रियों के साथ अगर लैगेज रहने से आर-पार होना कठिनाई के सामना करना पड़ रहा हैं।

फुटबॉल तीरंदाजी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए 18 खिलाड़ी पूर्णिया हुए रवाना

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] पूर्णिया में होने वाले राज्य स्तरीय एकलव्य खेलकूद प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए गुरूवार को वनवासी कल्याण आश्रम की ओर से जिला से अंडर 17 फुटबॉल टीम और अंडर 19 तीरंदाजी की टीम से कुल 18 खिलाड़ी झाझा से पूर्णिया के लिए रवाना हुए। इस दौरान वनवासी कल्याण आश्रम के नगर समिति के पदाधिकारी कालिका प्रसाद , अध्यक्ष राजकिशोर सिंह, उपाध्यक्ष सत्यनारायण वर्मा, सचिव भक्तिनाथ झा, कोषाध्यक्ष बमशंकर बररवाल एवं संरक्षक ओमप्रकाश पासवान, जितेंद्र ने प्रतियोगिता में फुटबॉल और तीरंदाजी प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन बढ़ाते हुए विजय प्राप्ति की शुभकामनाएं दिया। मौके पर जिला सचिव रूपल सिंह एवं आश्रम के जिला संगठन मंत्री शिवलाल हांसदा ने कहा कि प्रत्येक वर्ष खेलकूद का कार्यक्रम आयोजित होते आ रहा है। इस बार पूर्णिया में जो भी टीम का चयन होगा उसे राष्ट्रीय स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता के लिए रायपुर छतीसगढ़ के लिए भेजा जाएगा।

पैसरा गांव के ग्रामीणों को मिला जिला प्रशासन का साथ

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर । जिला प्रशासन मुंगेर एवं सीआरपीएफ के समेकित प्रयास से बुधवार को धरहरा प्रखंड के बी 215 एफओबी सीआरपीएफ कैम्प पैसरा में सुशासन एवं समावेशी विकास कैंप का आयोजन जिलाधिकारी मुंगेर अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर सीआरपीएफ डीआईजी संदीप सिंह, एसएसबी के समादेष्टा मनीष कुमार, पुलिस अधीक्षक सैयद इमरान मसूद, उप विकास आयुक्त अजीत कुमार सिंह सहित प्रखंड के अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एएसपी अभियान कुणाल कुमार कर रहे थे। कैम्प में उपस्थित पैसरा गांव के सैकड़ों ग्रामीण महिलाओं के बीच जहां किचेन सेट, साड़ी, कंबल, किशोरियों के बीच हाइजीन किट, युवाओं के बीच खेल सामग्री तथा बच्चों के बीच स्कूल बैग आदि का वितरण किया गया। ग्रामीणों के स्वास्थ्य जाँच के लिए चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया जहां ग्रामीणों को निःशुल्क चिकित्सा सेवा तथा जरूरी दवाएँ भी दी गई। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन एवं सीआरपीएफ के इस प्रयास की सराहना करते हुए सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया। पदाधिकारियों को अपनी समस्याओं से भी ग्रामीणों ने अवगत कराया, जिस पर जिलाधिकारी ने उनकी सभी समस्याओं पर संबंधित अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। वहीं जीविका परियोजना द्वारा कुल 167 समूहों एवं ग्राम संगठन के वित्त पोषण मद में दो करोड़ चार लाख 50 हजार रुपए का चेक भी वितरित किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने सभी ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि आज हमलोगों का आपके बीच उपस्थित होने की सबसे बड़ी वजह अपलोगों के बीच सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना है, ताकि आप सभी सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का शत प्रतिशत लाभ उठा सकें। साथ ही आपकी हर समस्याओं को सुन कर उस पर त्वरित कार्रवाई भी स्थानीय पदाधिकारियों द्वारा किया जाएगा। उन्होंने उपस्थित किशोरियों और युवाओं से कहा कि आप सभी देश के भविष्य हैं। आप के लिए सरकार ने स्कूलों में समुचित शिक्षा की व्यवस्था कर रखी है, इस लिए आप खुद को हर हाल में शिक्षित बनाएं। आप में ही से कोई आईएएस आइपीएस अधिकारी भी बन सकते हैं और भी कई पदों पर नौकरी पा सकते हैं। इसके लिए आप का शिक्षित होना आवश्यक है। सरकार उच्च शिक्षा के उच्चतर शिक्षा के लिए भी योजना चला रखी है। बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना के माध्यम से उच्च शिक्षा के राज्य सरकार द्वारा चार लाख की राशि दी जाती है, जिससे आप उच्च शिक्षा के साथ ही नौकरी भी पा सकते हैं। आप खुद को साबित करें और सरकार की सभी योजनाओं का लाभ उठाएं। महिलाओं को नौकरी में भी राज्य सरकार एक तिहाई का आरक्षण दे रही है और यही वजह है कि आज बिहार सरकार के विभिन्न विभागों में महिलाएं नौकरी कर रही हैं। आप की रुचि यदि खेल में है ।

छात्र के साथ मारपीट में दो शिक्षक पर प्राथमिकी हुई दर्ज

जमुई [झाझा] नगर क्षेत्र स्थित महात्मा गांधी प्लस टू उच्च विद्यालय में बुधवार को दशवीं कक्षा के छात्र के साथ शिक्षकों के द्वारा मारपीट किए जाने के मामलें में छात्र मो. आसीफ की मां बैजलपुरा गांव की रहने वाली सहिया खातुन ने थाना में दो शिक्षक के खिलाफ आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज कराई है। दर्ज आवेदन में छात्र की मां ने बताया कि मेरे बेटे को स्कूल में शिक्षक ने कुछ काम करने के लिए बोला जिसपर मेरा बेटा काम नही किया तो प्रिंसिपल डॉ. राजाराम नागमणि और एक अन्य शिक्षक संजीव कुमार ने बेरहमी से मारपीट करते हुए घायल कर दिया।

विद्यालय परिसर मे किया पौधारोपण कार्यक्रम

जमुई [झाझा] गुरू पुष्य नक्षत्र के पावन अवसर पर प्रखंड क्षेत्र स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय बेनीबांक पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किय गया जिसमें एसबीआई के एजीएम जेपी सिंह, चीफ ऑडिटर दिलीप कुमार, पूर्व शाखा प्रबंधक सह समाजसेवी शैलेश कुमार, मिथलेश कुमार, चीफ मैनेजर ग्रामीण बैंक रोहन राज, विद्यालय की प्रभारी प्रधानाध्यापिका बिंदु कुमारी एवं अन्य लोगों के द्वारा धरती को हराभरा रखने को लेकर कई फलदार एवं छायेदार पौधा लगाया। एजीएम, पूर्व शाखा प्रबंधक, प्रभारी प्रधानाध्यापिका सहित अन्य बैंक के अधिकारियों ने ग्रामीणों, छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह जीवन को जीने के लिए भोजन पानी की आवश्यकता है ठीक उसी तरह सबसे महत्वपूर्ण चीज ऑक्सीजन है। ऑक्सीजन हमे शुद्ध वातावरण से मिलता है लेकिन आज के बढ़ते प्रदूषण और धरती पर पेड़ पौधा की कमी होने के कारण शुद्ध वातावरण नही मिल पा रहा है जिसके कारण मानव जाति के साथ धरती पर रहने वाले जीव जंतु पर इसका गहरा असर पड़ रहा है। शुद्ध, संतुलित वातावरण के लिए हमलोगों को धरती पर अधिक से अधिक पेड़ पौधा लगाना आवश्यक है और उसका ख्याल रखना हमलोगों की जिम्मेवारी है।

आत्महत्याएं एक त्रासदी ?

मानव हताशा व निराशा के भंवर से मुकाबला करने के बजाए मौत ही आखिरी विकल्प ढूंढ रहा है। जबकि दुनिया में कोई भी चीज असंम्भव नहीं है। हताशा के अन्धेरे में दीये बूझ रहे हैं। इन बूझते दीयों को बचाने के लिए समाज को एक रूपरेखा तैयार करनी होगी। ताकि इस भयानक प्रवृति पर विराम लग सके। समाज में टूटते परिवार, बेरोजगारी, गरीबी, व अशिक्षा, तनाव के मुख्य कारण हैं। आज के युवा कैरियर को लेकर भी परेशान है। मनमाफिक रोजगार न मिलने के कारण तनावग्रस्त रहते है। प्रेम में असफलता, परीक्षा मे फेल होने, कर्ज न चुकाने, के कारण भी मौत को गले लगा रहा है। युवा वर्ग में यह प्रवृति बडे पैमाने पर बढती जा रही है। यदि इस पर संज्ञान न लिया तो भविष्य में मुशिकलें पैदा होगी। भारत एक ऐसा देश है जहां सबसे अधिक आत्महत्याएं होती है। प्रतिदिन आत्महत्याओं की खबरें सुर्खियां बनती है। इंसान खुद तो मर जाता है लेकिन पीछे तडफने के लिए पूरा परिवार छोड देता है। दहेज के कारण भी आत्महत्याएं बढ रही है। देश के अन्नदाता कहलाने वाले किसान का आत्महत्या करने का कारण कभी सरकारी नीतियां बनती है। तो कभी मौसम की बेरूखी। पिछले पन्द्रह सालों में एक लाख से भी अधिक किसान आत्महत्या कर चुके है। आज तक किसी किसान ने अकाल, बाढ, भूखमरी के कारण आत्महत्या तक नहीं की लेकिन सरकारी नीतियां ही इसका कारण बन रही हैं। लोगों ने अपनी जीवन लीलाएं खत्म की है। आत्महत्याओं के औसतन तीन सौ मामले प्रतिदिन सामने आते है। भारत के परिपेक्ष्य मे आत्महत्या के तरीकों में फांसी लगाना, आग लगाना, तथा जहरीला पदार्थ निगलना, मुख्य है, देश मे घटित इन मामलों से भविष्य की भयानक तस्वीर दिख रही है। समाजशास्त्री कहते हैं कि सामाजिक सुरक्षाबोध, पारिवारिक जुडाव, और तनाव से दूरी ही आत्महत्याओं पर अंकुश लगा सकती है। हताशा के कदम रोकने के लिए सामूहिक प्रयास करने होगें। ताकि समाज से इस प्रवृति को दूर किया जा सके। देश के युवाओं की नकारात्मक सोच को सकारात्मक बनाना होगा। सामजिक परिदृश्य को बदलना हर नागरिक का कर्तव्य है। समाज के बुध्दिजीवी लोगों को इस पर मनन करना चाहिए। युवा देश के कर्णधार होते हैं जो देश की दिशा बदल सकते हैं। इन्हे दिगभ्रमित होने से बचाना जरूरी है। युवाओं का मार्गदर्शन करना होगा ताकि निराशा व हताशा से दूर रह सके। यह देश हित व जनहित के लिए बेहद लाजिमी है। सरकारों को भी इन घटनाओं को अनदेखा नहीं करना चाहिए। यदि अब भी इन घटनाओं के प्रति कदम न उठाये तो अनमोल जिंदगियां। भौतिकवादी सोच ने समाज में कई तरह के पतन पैदा किए है। पैसे की भूख व अतिवादी सोच ने उपहार में लोगों को एकाकी जीवन व तनाव दिया है। आज मानव जीवन में तनाव इतना अधिक बढ गया है। कि बच्चे से लेकर जवान व बूढे, शिक्षित से लेकर अशिक्षित, छात्र से लेकर उच्च अधिकारी, किसान, गरीब से लेकर अमीर सभी तनाव से ग्रस्त है। मानसिक तनाव के कारण देश में सामूहिक आत्महत्याओं की प्रवृति बेतहाशा बढती जा रही है। ऐसा क्यों यह एक यक्ष प्रश्न बनता जा रहा है 'देश में बढती आत्महत्याएं एक गंभीर चिन्ता का विषय बनता जा रहा है। आज युवा में बढती कुंठा, असहनशीलता, और असफलता आत्महत्याओं का कारण बन रहे है। यह आंकड़ा बड़े पैमाने बढ़ता ही जा रहा है यह बहुत ही चिंतनीय है समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को इस पर चिंतन मनन करना होगा ' ताजा घटनाक्रम मे 25 जुलाई को मंडी के लाल बहादुर शास्त्री मेडिकल कॉलेज मे एम बी बी एस के एक प्रशिक्षु छात्र ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली यह छात्र राजस्थान का रहने वाला था फरवरी मे भी ऐसा ही एक मामला एम्स बिलासपुर में घटित हुआ था जहाँ एक एमबीबीस छात्र ने तीसरी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली थी ' ऐसे आत्महत्या के मामले बहुत ही दुखद है ' युवा हताश होता जा रहा है और सहनशक्ति खोता जा रहा है और आत्महत्या जैसे कदम उठा रहा है ' देश मे छात्रों द्वारा आत्महत्या के बहुत मामले हो चुके हैं और यह निरंतर बढ़ते ही जा रहे हैं '2021से लेकर अक्टूबर 2024 तक असंख्य लोग अपनी जीवन लीला समाप्त कर चुके हैं यह मामले बढ़ते ही जा रहे हैं इन मामलों को रोकना होगा 'आत्महत्याओं के मामले रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं।

मणिपुर की जातीय हिंसा, अधिकारियों की अग्नि परीक्षा

मणिपुर में जातीय हिंसा ने गहरे जड़ें जमा चुके सांप्रदायिक संघर्षों से निपटने में भारत की प्रशासनिक प्रणाली की कमजोरी को उजागर कर दिया है। हालाँकि यह स्थिति अखिल भारतीय सेवाओं की अखंडता के लिए गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है, यह संघर्ष-ग्रस्त क्षेत्रों में शासन के दृष्टिकोण पर पुनर्विचार और सुधार करने का एक अनूठा अवसर भी प्रदान करती है। क्षमता निर्माण, अनुसंधान और नवीन नीति उपायों पर ध्यान केंद्रित करके, आईएएस और अन्य सेवाएँ संकट को एक सीखने के अनुभव में बदल सकती हैं जो भविष्य के संघर्षों में स्टील फ्रेम के लचीलेपन को मजबूत करती है।

प्रियंका सौरभ
लेखक

हिंसा और जातीय विभाजन के कारण एस्प्रिट डे कॉर्प्स (अधिकारियों के बीच एकता और आपसी सम्मान) तनाव में है, जिससे अधिकारियों के बीच सहयोग और विश्वास कमजोर हो रहा है। संघर्ष ने एआईएस अधिकारियों के बीच पारस्परिक सम्बंधों पर गहरा प्रभाव डाला है, सामाजिक आदान-प्रदान और सहयोग दुर्लभ हो गए हैं। नफरत फैलाने वाले भाषण, प्रचार और ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से सार्वजनिक चर्चा के ध्रुवीकरण ने रिश्तों को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया है, जिससे विभिन्न जातीय पृष्ठभूमि के अधिकारियों के लिए एक साथ काम करना मुश्किल हो गया है। मणिपुर में जातीय हिंसा ने गहरे जड़ें जमा चुके सांप्रदायिक संघर्षों से निपटने में भारत की प्रशासनिक प्रणाली की कमजोरी को उजागर कर दिया है। हालाँकि यह स्थिति अखिल भारतीय सेवाओं की अखंडता के लिए गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है, यह संघर्ष-ग्रस्त क्षेत्रों में शासन के दृष्टिकोण पर पुनर्विचार और सुधार करने का एक अनूठा अवसर भी प्रदान करती है। क्षमता निर्माण, अनुसंधान और नवीन नीति उपायों पर ध्यान केंद्रित करके, आईएएस और अन्य सेवाएँ संकट को एक सीखने के अनुभव में बदल सकती हैं जो भविष्य के संघर्षों में स्टील फ्रेम के लचीलेपन को मजबूत करती है.... मणिपुर में मैतेई और कुकी समुदायों के बीच जातीय हिंसा 3 मई, 2023 को भड़क उठी। इस संघर्ष में 200 से अधिक मौतें हुईं और 60, 000 लोग विस्थापित हुए। मैतेई और कुकी समुदायों के बीच संघर्ष की जड़ें मणिपुर के जातीय और ऐतिहासिक संदर्भ में गहराई से जुड़ी हुई हैं। मुख्य रूप से घाटी क्षेत्रों में रहने वाले मेइतेई और पहाड़ी जिलों में रहने वाले कुकी समुदाय के बीच लंबे समय से सामाजिक-राजनीतिक और भूमि सम्बंधी विवाद हैं। राजनीतिक सत्ता, भूमि और सरकारी संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा ने इन समुदायों के बीच तनाव बढ़ा दिया है। आरक्षण, भूमि स्वामित्व और स्वायत्तता से सम्बंधित नीतियाँ इस टकराव के केंद्र में हैं। आदिवासी और गैर-आदिवासी समूहों को वगीर्कृत करने की ब्रिटिश काल की नीतियों ने विभाजन पैदा किया जो आज भी गूंजता है। कानून-व्यवस्था की स्थिति तेजी से बिगड़ गई, सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया और हिंसक घटनाएँ सामने आईं। सांप्रदायिक विभाजन ने अखिल भारतीय सेवाओं (एआईएस) अधिकारियों के कामकाज को गहराई से प्रभावित किया, जिससे उनके बीच भौगोलिक और मनोवैज्ञानिक बाधाएँ पैदा हुईं, संघर्ष के कारण पहाड़ी और घाटी जिले दुर्गम हो गए। वर्तमान स्थिति सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा परिकल्पित ह्रस्टील फ्रेमह्व के लिए खतरा है, जिसमें अखिल भारतीय सेवाएँ भारत की प्रशासनिक मशीनरी की रीढ़ हैं। हिंसा और जातीय विभाजन के कारण एस्प्रिट डे कॉर्प्स (अधिकारियों के बीच एकता और आपसी सम्मान) तनाव में है, जिससे अधिकारियों के बीच सहयोग और विश्वास कमजोर हो रहा है। संघर्ष ने एआईएस अधिकारियों के बीच पारस्परिक सम्बंधों पर गहरा प्रभाव डाला है, सामाजिक आदान-प्रदान और सहयोग दुर्लभ हो गए हैं। नफरत फैलाने वाले भाषण, प्रचार और ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से सार्वजनिक चर्चा के ध्रुवीकरण ने रिश्तों को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया है, जिससे विभिन्न जातीय पृष्ठभूमि के अधिकारियों के लिए एक साथ काम करना मुश्किल हो गया है। मनोवैज्ञानिक युद्ध, दुष्प्रचार और आर्थिक व्यवधान जैसे गैर-गतिशील तत्वों ने मणिपुर में तनाव को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हाइब्रिड युद्ध के हिस्से के रूप में इन युक्तियों ने जनता के मनोबल और शासन में विश्वास को कम कर दिया है, जिससे कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार आईएएस और अन्य सेवाओं के लिए एक महत्त्वपूर्ण चुनौती पैदा हो गई है। विभिन्न जातीय पृष्ठभूमि के सिविल सेवकों को अपनी जातीय पहचान के साथ अपने पेशेवर कर्तव्यों को संतुलित करने में दुविधाओं का सामना करना पड़ता है। सामुदायिक अपेक्षाओं और वफादारी का दबाव बनाम प्रशासनिक तटस्थता बनाए रखने की आवश्यकता एक महत्त्वपूर्ण नैतिक चुनौती प्रस्तुत करती है। कई अधिकारियों को उनकी जातीयता के कारण व्यक्तिगत सुरक्षा खतरों का सामना करना पड़ता है। सरकारी अधिकारियों को भीड़ द्वारा निशाना बनाए जाने और सुरक्षा की आवश्यकता की रिपोर्टें उनके सामने आने वाले गंभीर खतरों को रेखांकित करती हैं। इससे मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा हो गया है और उनके कर्तव्यों को पूरा करने की क्षमता में बाधा उत्पन्न हुई है। दुष्प्रचार, घृणास्पद भाषण और भड़काऊ सामग्री फैलाने में सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की भूमिका ने संघर्ष को बढ़ा दिया है। हिंसा और भड़काऊ भाषणों के वीडियो ने समुदायों को और अधिक ध्रुवीकृत कर दिया है, जिससे नागरिक अधिकारियों के लिए कहानी को प्रबंधित करना मुश्किल हो गया है। चुनौतियों के बावजूद, मणिपुर संघर्ष को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (एलबीएसएनएए) और भारतीय लोक प्रशासन संस्थान (आईआईपीए) जैसे संस्थानों द्वारा अनुसंधान और दस्तावेजीकरण के अवसर के रूप में देखा जा सकता है। इस मामले के आधार पर संघर्ष प्रबंधन, सुलह और प्रशासनिक तटस्थता पर प्रशिक्षण मॉड्यूल और क्षमता-निर्माण कार्यशालाएँ विकसित की जा सकती हैं। इस तरह के केस अध्ययन लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर जातीय केंद्रित संघर्षों से निपटने में व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे, जो संघर्ष क्षेत्रों में शासन की शैक्षणिक और व्यावहारिक समझ में योगदान देंगे। वेबर द्वारा प्रतिपादित नौकरशाही की अवैयक्तिक प्रकृति का लाभ संघर्षग्रस्त राज्य में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए किया जा सकता है। बैचमेट्स के बीच पेशेवर टीम भावना और राष्ट्रीय एकीकरण के एजेंट के रूप में एआईएस अधिकारियों की तटस्थ भूमिका संघर्षों को हल करने के लिए एक लचीला ढांचा प्रदान करती है। शांति-निर्माण प्रयासों में अधिकारियों को शामिल करने के लिए नवीन कार्मिक प्रबंधन नीतियों का कार्यान्वयन। विभिन्न जातीय समुदायों के अधिकारियों के बीच नियमित आभासी बैठकें बेहतर सम्बंधों को बढ़ावा दे सकती हैं और संघर्ष से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक अलगाव को कम कर सकती हैं। इस तरह के उपाय मणिपुर में उभरे प्रशासनिक सिलोस को तोड़ने में मदद कर सकते हैं, सिविल सेवाओं के भीतर बेहतर सहयोग की सुविधा प्रदान कर सकते हैं और शांति प्रक्रिया में योगदान दे सकते हैं। यह संघर्ष भारत में संघीय एकता के महत्त्व को भी रेखांकित करता है।

प्रियंका गांधी का पहला ही चुनाव दक्षिण से

कभी आरएसएस का नारा था गर्व से कहो हम हिन्दू हैं। देश भर की दिवारों पर लिखवाया गया था। मतलब निर्भय रहो ! मगर अब तो डर सिखाया जा रहा है। देश की अस्सी प्रतिशत आबादी को अगर आप डर की स्थिति में पहुंचा रहे हैं तो इसका मतलब क्या है? मतलब है बस हमें वोट देते रहो। और इस डर में जियो की जब हम न होंगे तो तुम खतरे में घिर जाओगे। नेहरू-गांधी परिवार की और से एक नई शुरूआत है। परिवार का कोई सदस्य पहला ही चुनाव दक्षिण से लड़ रहा है। प्रियंका गांधी ने बुधवार को केरल के वायनाड से लोकसभा के लिए अपना नामांकन दाखिल किया। ऐसा नहीं है कि पहले दक्षिण से परिवार का कोई सदस्य नहीं लड़ा हो। पंडित जवाहरलाल नेहरू को छोड़कर सब लड़े हैं। इन्दिरा गांधी ने अपने सबसे खराब दिनों जब वे 1977 में रायबरेली से चुनाव हार गईं उसके अगले ही साल कर्नाटक के चिकमंगलूर से उप चुनाव लड़ा। न केवल शानदार जीत हासिल की बल्कि 1980 में जीत का माहौल भी बना दिया। दरअसल उस उप चुनाव से पहले बिहार के बेलछी में दलितों का भयंकर नरसंहार हुआ था। हार की निराशा के दौर से गुजर रहीं इन्दिरा इस नरसंहार पर घर बैठी नहीं रह सकीं। वे बेलछी के लिए रवाना हो गईं। भारी पानी बरस रहा था। नदी चढ़ी हुई थी। इन्दिरा हाथी पर बैठकर वहां पहुंची। सरकार जनता पार्टी की थी। मामले को दबाने की पूरी कोशिश हो रही थी। गृहमंत्री चरण सिंह इसे मामूली मामला बता रहे थे। लेकिन इन्दिरा के पहुंचने ने सारी तस्वीर पलट दी। मीडिया उस समय भी कांग्रेस विरोधी हुआ था। मगर मामला इतना बड़ा था और इन्दिरा गांधी का हाथी पर बैठा फोटो ऐसा असर डाल रहा था कि मीडिया इसे दबा नहीं पाया। 14 दलितों को जिन्दा जला दिया गया था। जिनमें बच्चे औरतें भी थीं। खबर और इन्दिरा का हाथी पर बैठकर जाते हुआ का फोटो अन्तरराष्ट्रीय अखबारों में भी छपने लगा। यह कहानी अधिकांश लोगो को मालूम है। यह भी मालूम है कि इन्दिरा के बेलछी जाने ने इनकी 1980 की जीत की भूमिका लिख दी थी। मगर यह शायद कम लोगों को मालूम होगा कि देश का यह पहला दलित हत्याकांड ऐसा था जिसमें दोषियों को फांसी मिली हो। यह इन्दिरा इम्पैक्ट था। 1983 में दो हत्यारों महावीर महतो और परशुराम धानुक को फांसी पर चढ़ना पड़ा। इसके बाद भी ऐसा कोई मामला याद नहीं आता, जब दलित हत्याकांड में किसी को फांसी हुई हो। जबकि उससे पहले और बाद में कई दलित लड़कियों के बलात्कार हत्या और सामूहिक दलित हत्याकांड की घटनाएं हुईं। अभी ताजा तो हाथरस की है जहां दलित लड़की के बलात्कार, हत्या के बाद उसके घर के बाहर ही आरोपियों के समर्थन में धरना लगाया गया। मीडिया को जाने नहीं दिया गया। राहुल गांधी को एक बार वापस लौटना पड़ा। उन्हें सड़क पर धक्का देकर गिराया गया। दूसरी बार में वे और प्रियंका पीड़ित परिवार के पास जा पाए। लड़की का शव भी घर वालो को नहीं दिया गया। रातों रात जला दिया। यह न्यू इंडिया है। इसे न्यू नार्मल भी कहते हैं। और यह भी बटेंगे तो कटेंगे ! हमें वोट देते रहो। मुसलमानों का जो काल्पनिक भय दिखा रहे हैं उससे डरते रहो। और हम जिस हाल में रखें वैसे रहो। पहले प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि तुम्हारा मंगल सूत्र छीन लेंगे। भेंस ही छीन के ले जाएंगे। मगर उससे चार सौ पार क्या साधारण बहुमत भी नहीं आया तो अब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी कह रहे हैं बटेंगे तो कटेंगे !योगी उत्तर प्रदेश में मोदी जी को लोकसभा की सीटें नहीं दिला पाए। जो मोदी जी बहुमत से दूर रह गए उसमें उत्तर प्रदेश का बड़ा योगदान है। कहां 2019 में वहां बीजेपी की 61 सीटें आईं थी। जो 2024 में केवल 33 रह गईं। नंबर दो की पार्टी हो गई। सपा 37 सीटें जीतकर नबंर एक की पार्टी बन गई। इंडिया गठबंधन को कुल 43 सीटें मिलीं। उत्तर प्रदेश की 80 सीटों में से आधे से ज्यादा।

दीपावली पर सुरक्षा व्यवस्था में सेंध लगाने के अराजक प्रयास

साथ ही वक्त सुबह का था और स्थानीय लोगों की आवाजाही भी न के बराबर थी। अगर ये घटना वर्किंग डे में होती तो जानमाल का काफी नुकसान हो सकता था। रविवार तड़के स्कूल के बाहर फटे इस बम की तेज आवाज ने पूरी दिल्ली में दहशत जरूर फैला दी है। घटना के बाद पुलिस ने एहतियातन पूरी दिल्ली को अलर्ट पर रखा है और सर्तकता बढ़ा दी है। सीआरपीएफ स्कूल राजधानी का जाना माना स्कूल है जहां पांच श्रेणी में छात्र-छात्राओं को सिलेक्ट किया जाता है। इसमें सीआरपीएफ अधिकारियों के बच्चे, सीआरपीएफ के रिटायर्ड और हैंडीकैप अधिकारियों के बच्चे, अन्य पैरामिलिट्री फोर्सेस (आईटीबीपी, बीएसएफ आदि) के जवानों के बच्चे पढ़ते हैं।

मनोज कुमार अग्रवाल
लेखक

देश की सबसे संवेदनशील व सुरक्षित समझी जाने वाली राजधानी दिल्ली में करवा चौथ और दीपावली के ठीक दस दिन पहले विस्फोट की वारदात ने तमाम सुरक्षा एजेंसियों की नींद उड़ा दी है। तमाम एजेंसियां एलर्ट मोड में आ कर जांच में जुटी है। प्रशांत विहार इलाके में सीआरपीएफ स्कूल के पास हुए ब्लास्ट में कई एंगल से तफ्तीश हो रही है। सीआरपीएफ की टीम ने जांच कर ली है तो, दूसरी एजेंसी ने भी मौका मुआयना किया। जांच स्पेशल सेल या फिर केंद्रीय जांच एंजेसी को भी ट्रांसफर हो सकती है। अभी तक जो सामने आया, उसमें शक है कहीं ये किसी पाकिस्तानी आंतकी लिंक से लेकर लोकल ग्रुप का काम तो नहीं। वहीं ये बात भी सामने आ रही है कि ब्लास्ट करने वाला कोई केमिकल मेन है, जिसे केमिकल की अच्छी जानकारी थी। जांच एजेंसियां मान रही है कि इसके पीछे कोई बड़ी साजिश का रिहर्सल छिपा हो सकता है? शायद दहशतगर्द या अलगाववादी संगठन ये देखना चाहते हों कि विस्फोट की घटना पर दिल्ली की जांच एजेंसी कितनी सक्रियता दिखाती हैं? यह भी हो सकता है कि हमारी जांच एजेंसियों की क्षमता को परखने के लिए यह विस्फोट किया गया हो? ऐसी आंशका इसलिए लग रही है, क्योंकि दिल्ली पुलिस ने भी किसी बड़ी साजिश से फिलहाल इनकार नहीं किया है। सबसे ज्यादा चिंताजनक यह है कि दिल्ली के रोहिणी में सीआरपीएफ स्कूल के पास बम विस्फोट के बाद अब देशभर के अन्य राज्यों में सीआरपीएफ स्कूलों में बम विस्फोट को लेकर धमकी दी गई है। खबर है कि देशभर के सीआरपीएफ स्कूलों को ईमेल के जरिये यह धमकी दी गई है। इनमें से दो स्कूल दिल्ली और एक हैदराबाद में हैं। हालांकि ईमेल के फर्जी होने का संदेह है। इसके बावजूद ताजा धमकी ने दिल्ली समेत सभी स्कूलों में दहशत फैला दी है। माना जा रहा है कि यह ईमेल किसी ने दहशत फैलाने के लिए किया है। मेल भेजने वालों ने मेल को लिस्टेड स्कूल के कमरों में नाइट्रेट आधारित आईईडी ब्लास्ट करने की बात कही है। ईमेल भेजने वाले ने सुबह 11 बजे से पहले सभी स्कूलों को खाली करने के लिए भी कहा है। दिल्ली के रोहिणी में सी. आर.पी.एफ. स्कूल में पहले ही धमाका हो चुका है। इस धमाके को लेकर अभी भी सुरक्षा एजेंसिया अभी भी कुछ ठोस जानकारी नहीं हासिल कर पाई हैं। इसे अब भी रहस्यमय विस्फोट बताया जा रहा है। इस मामले में आरोपी अभी भी फरार है। दिल्ली में इससे पहले भी कई बार बम ब्लास्ट और आतंकी घटनाएं हुई हैं। पर उनमें और इस घटना में कुछ फर्क है। 20 अक्टूबर को सुबह फटे बम के बाद दूर-दूर तक धुआं ही धुआं फैल गया। लोगों को सांस लेने में दिक्कते हुई। तेज बदबू इलाके में फैल गई। आसपास के घरों की नीव भूकंप की भांति हिल गई। गौरतलब है कि गृह मंत्रालय की खुफिया एजेंसी आईबी के पास इस तरह के इनपुट थे कि त्योहारों के वक्त दिल्ली- एनसीआर में कहीं न कहीं कोई आतंकी घटना घटने की आशंका है। कमोबेश वैसा होता भी दिखाई दिया। खुफिया इनपुट के बावजूद अगर ऐसी घटना घटती है तो कानून तंत्र, खुफिया विभाग, एंटी टेरर विंग पर सवालिया निशान उठना लाजिमी हो जाता है। अगर वे समय पर सजग होते तो ये हादसा शायद नहीं होता। पर, अकसर होता यही है जिम्मेदार एजेंसियां इस तरह की नाकामी कभी अपने पर नहीं लेतीं। । दिल्ली में कुछ महीनों बाद विधानसभा चुनाव होने हैं। बॉर्डर पर किसानों का पहरा है। भीड़भाड़ तो सदैव दिल्ली में रहती ही है। इसके अलावा पूरी केंद्र सरकार, ब्यूरोक्रेट लॉबी सभी यहीं बसती है। इसलिए देश की राजधानी दिल्ली में खुफिया एजेंसियों और कानून तंत्र को चौबीसों घंटे चौकन्ना रहना चाहिए। पर, अफसोस ऐसा होता नहीं? दहशतगर्द उनकी नाक के नीचे घटनाओं को अंजाम देकर चुपके से निकल जाते हैं, उसके बाद जांच के नाम पर लाठी पीटी जाती है। फिलहाल, ऐसी बातों पर गौर न कर, मौजूदा घटना की जड़ तक पहुंचने की आवश्यकता है। दिल्ली के रोहिणी में ब्लास्ट के बाद देर रात पाकिस्तान से चलने वाले टेलीग्राम चैनल पर बम धमाकों के पीछे खालिस्तानी आतंकियों के हाथ होने का दावा किया जा रहा है। टेलीग्राम चैनल ह्यजस्टिस लीग इंडियाह्व पर सीसीटीवी फुटेज डालकर बम धमाके का दावा किया गया है, उसके बाद इस मैसेज को पाकिस्तान से चलने वाले कई टेलीग्राम चैनल पर सकुर्लेट किया गया है। दिल्ली पुलिस सूत्रों के मुताबिक, दिल्ली पुलिस ने टेलीग्राम मैसेंजर को पत्र लिखकर टेलीग्राम चैनल जस्टिस लीग इंडिया के बारे में जानकारी मांगी है। पुलिस अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से भी जानकारी मांग रही है। टेलीग्राम ने अभी तक दिल्ली पुलिस को कोई जवाब नहीं दिया है। जांच जारी है, धमाके के सिलसिले में अभी तक किसी संगठन का नाम सामने नहीं आया है। सभी पहलुओं की जांच की जा रही है। एफएसएल टीम ने घटनास्थल पर पहुंचकर इसके सैंपल लिए। मौके से सफेद पाउडर और कुछ तारनुमा चीजें भी बरामद हुई हैं। इसी बीच मौके पर दमकल की गाड़ियां भी पहुंची। शुरूआती जांच में आशंका जताई जा रही है कि धमाके में हाई इंटेंसिव एक्सप्लोसिव का इस्तेमाल किया गया है। छोटा क्रूड बम भी हो सकता है। आतंकी हमला होने की आशंका को देखते हुए एनएसजी की टीम भी मौके पर पहुंच गई है। मौके पर पहुंचने के बाद एनएसजी ने घटनास्थल को अपने कब्जे में ले लिया है। फोरेंसिक साइंस लैबोरेटरी (एफएसएल) टीम के सूत्रों के मुताबिक, शुरूआती जांच में क्रूड बम जैसा मटेरियल मिला है। हालांकि, पूरी रिपोर्ट मिलने के बाद ही आधिकारिक जानकारी मिल पाएगी।

संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता

अनुज आचार्य

संयुक्त राष्ट्र दिवस प्रत्येक वर्ष 24 अक्टूबर को मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन हुआ था। 24 अक्टूबर 1945 को सैन फ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया में 50 देशों ने मिलकर ऐसे देशों का समूह बनाया जिसका लक्ष्य वैश्विक शांति के लिए मिलकर काम करना था। इस संगठन को संयुक्त राष्ट्र संघ या संक्षेप में यूएन भी कहा जाता है। संयुक्त राष्ट्र के चार उद्देश्य हैं- अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा का संरक्षण करना, विभिन्न राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास करना, अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में सहयोग एवं मानव अधिकारों के प्रति सम्मान का संवर्धन और देशों की कार्रवाइयों के बीच तालमेल के केन्द्र के रूप में काम करना। लेकिन इधर दो वर्षों से जारी रूस और यूक्रेन युद्ध एवं इजरायल एवं अरब राष्ट्रों के बीच सीमित युद्धों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। जहां तक संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न कार्यक्रमों के सफल संचालन में भारत के योगदान एवं भागीदारी का सवाल है तो आज भी भारत विकास एवं गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, निशस्त्रीकरण, मानवाधिकार और विश्व शांति स्थापना के प्रयासों में संयुक्त राष्ट्र संघ का कंधे से कंधा मिलाकर साथ दे रहा है। 140 करोड़ आबादी के साथ भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश और एक उभरती हुई आर्थिक महाशक्ति भी है। भारत की विदेश नीति ऐतिहासिक रूप से विश्व शांति को बढ़ावा देने वाले देश के रूप में रही है। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी वैश्विक संस्था की नीति निर्धारक सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से भारत को वंचित तथा बाहर रखना अन्याय ही माना जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के समय से ही रक्षा मिशनों में भारत महत्वपूर्ण योगदान देता आया है। अब तक विभिन्न शांति अभियानों में भारत के 180000 सैनिक हिस्सा ले चुके हैं। भारत ने 82 देशों के लगभग 800 शांति स्थापना अधिकारियों को प्रशिक्षित भी किया है। मौजूदा समय में संयुक्त राष्ट्र संघ शांति सैनिक दल में योगदान करने वाले सभी देशों में भारत दूसरा सबसे बड़ा देश है। वर्तमान समय में भी भारत 11 यूएन मिशन और दो यूएन कार्यालयों को 6891 भारतीय सैन्य कर्मी और 782 पुलिसकर्मी उपलब्ध करवा रहा है। इससे विश्व में शांति और सौहार्द कायम करने की भारत की गहरी प्रतिबद्धता साबित होती है और यह प्रदर्शित होता है कि भारत संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर कितना विश्वास करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष उसके चार्टर के अनुसार कई ऐसे मुद्दे भी हैं जो लंबे समय से अपना हल निकलने की आस लगाए बैठे हैं। पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसे मानवता से जुड़े मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र संघ अभी तक कोई कारगर हल तलाश नहीं पाया है। स्वीडन की पर्यावरण एक्टिविस्ट 16 वर्षीया ग्रेटा थनबर्ग ने संयुक्त राष्ट्र संघ में बोलते हुए कहा था कि, आपने हमारा बचपन, हमारे सपनों को छीन लिया है। लोग मर रहे हैं और पूरा ईकोसिस्टम बर्बाद हो रहा है। उनका कहना था कि विश्व के नेता कुछ नहीं कर रहे हैं। किसी जमाने में परमाणु निशस्त्रीकरण संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख एजेंडे का हिस्सा हुआ करता था, लेकिन बीते दो दशकों में यह मुद्दा जैसे पृष्ठभूमि में चला गया है। यद्यपि यूएन चार्टर का उद्देश्य विश्व समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रगति हेतु कार्य करना है ताकि संसार में समानता, स्वतंत्रता, सहयोग, न्याय, भ्रातृत्व, मित्रता व सुरक्षा का परिवेश निर्मित किया जा सके और युद्ध की नौबत ही न आए। लेकिन बीते 75 वर्षों में न केवल युद्ध जारी हैं, अपितु सीरिया जैसे देश तो बबार्दी के कगार पर पहुंच चुके हैं। विश्व को आज भी ताकत एवं आर्थिक आधार पर ही हांका जा रहा है। पाकिस्तान आज भी आतंकवादियों की जन्मस्थली बना हुआ है और वैश्विक शांति एवं सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। उत्तर कोरिया और ईरान बेधडक होकर परमाणु हथियारों की होड़ को बढ़ावा दे रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ड्रग्स का अवैध कारोबार बड़ी तेजी से फल-फूल रहा है जिसमें प्रतिबंधित ड्रग्स का उत्पादन, खेती और बिक्री भी शामिल है।

मुख्यमंत्री द्वारा जिलान्तर्गत 148 पंचायत सरकार भवन का किया गया शिलान्यास

पांच पंचायत सरकार भवनों का किया गया उद्घाटन

- पटना में आयोजित उद्घाटन एवं शिलान्यास कार्यक्रम से वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े रहे जिला पदाधिकारी, उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता सहित अन्य अधिकारी

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा गुरुवार को संकल्प पटना में आयोजित कार्यक्रम में पंचायती राज विभाग अंतर्गत रू. 7160 करोड़ की लागत से 2615 पंचायत सरकार भवन एवं राज्य पंचायत संसाधन केन्द्र, सोनपुर के भवन का शिलान्यास एवं 13 जिला पंचायत संसाधन केन्द्रों, 65 पंचायत सरकार भवन, ई-ग्राम कचहरी कोर्ट मैनेजमेंट सिस्टम तथा जिला परिषद पोर्टल का उद्घाटन किया गया।

पश्चिम चम्पारण जिलान्तर्गत विभिन्न पंचायतों के कुल-148 पंचायत सरकार भवन का शिलान्यास माननीय मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। इसके साथ ही ग्राम पंचायत के माध्यम से निर्मित नौतन प्रखंड अंतर्गत पंचायत सरकार भवन, पकड़िया, चनपटिया प्रखंड अंतर्गत पंचायत सरकार भवन, कुड़वा मठिया, बैरिया प्रखंड अंतर्गत पंचायत सरकार भवन, मियांपुर दुबौलिया, भितहां प्रखंड अंतर्गत पंचायत सरकार भवन, डीही पकड़ी एवं मैनाटांड़ प्रखंड अंतर्गत पंचायत सरकार भवन मैनाटांड़ का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री के कर-कमलों द्वारा किया गया।

ज्ञातव्य हो कि भवन निर्माण विभाग द्वारा विभिन्न पंचायतों में कुल-148 पंचायत सरकार भवन का निर्माण किया जाना है, जिसका शिलान्यास गुरुवार को मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। पंचायत राज विभाग, बिहार द्वारा प्रत्येक पंचायत सरकार भवन निर्माण हेतु 3.05 करोड़ रू. की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गयी है। पंचायत सरकार भवन में मुखिया, पंचायत सचिव, राजस्व न्यायिक, सरपंच के कार्यालय के साथ कम्यूनिटी हॉल, महिला केन्द्र, पुस्तकालय, कोर्ट रूम, फ्लड रिहैबिलिटेशन सेन्टर आदि का निर्माण किया जाना है। इसके अलावे आवास का भी निर्माण किया जाना है।

उक्त शिलान्यास एवं उद्घाटन कार्यक्रम का लाईव प्रसारण जिलास्तर, प्रखंडस्तर एवं पंचायतस्तर पर किया गया। जिलास्तर पर लाईव प्रसारण कार्यक्रम में जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय, उप विकास आयुक्त सुमित कुमार, अपर समाहर्ता राजीव कुमार सिंह, जिला पंचायती राज पदाधिकारी बेबी कुमारी, वरीय उप समाहर्ता-सह-जिला सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी रोचना माद्री विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला गोपनीय शाखा सुजीत कुमार, कार्यपालक अभियंता भवन निर्माण प्रमंडल कमलेश प्रसाद सहित अन्य संबंधित अधिकारी एवं अभियंता उपस्थित थे।

डीएम ने समाहरणालय परिसर में अधिष्ठापित होर्डिंग्स व फ्लैक्स का लिया जायजा

- डीएम ने दिया सुव्यवस्थित तरीके से होर्डिंग्स व फ्लैक्स का अधिष्ठापन कराने का निर्देश
- नए होर्डिंग सहित मरम्मति योग्य होर्डिंग्स व फ्लैक्स को चिन्हित करते हुए प्रस्ताव समर्पित करने का निर्देश

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय ने गुरुवार को समाहरणालय परिसर में अधिष्ठापित होर्डिंग्स/फ्लैक्स का जायजा लिया और जिला सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया।

जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि समाहरणालय मुख्य द्वार से लेकर अंतिम छोर तक सुव्यवस्थित तरीके से होर्डिंग्स/फ्लैक्स का अधिष्ठापन कराएं। नए होर्डिंग/फ्लैक्स सहित मरम्मति योग्य होर्डिंग्स को चिन्हित करते हुए अधिष्ठापन एवं मरम्मति की दिशा में अविलंब कार्रवाई करें।

उन्होंने निर्देश दिया कि होर्डिंग्स/फ्लैक्स अधिष्ठापन का कार्य विभागीय दिशा-निदेर्शों का अक्षरशः अनुपालन करते हुए कराना सुनिश्चित करें। मानक का शत-प्रतिशत अनुपालन होना चाहिए।

उन्होंने निर्देश दिया कि नए होर्डिंग/फ्लैक्स सहित मरम्मति योग्य होर्डिंग्स को चिन्हित कर अधिष्ठापन कराने हेतु अपर समाहर्ता, पश्चिम चम्पारण माध्यम से प्रस्ताव समर्पित करें। उन्होंने निर्देश दिया कि होर्डिंग/फ्लैक्स समाहरणालय परिसर आने वाले व्यक्तियों के लिए स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो, इसका विशेष ध्यान रखें। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त सुमित कुमार, सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

अपहरण हुई युवतियों को पुलिस ने किया बरामद

प्रात: किरण, संवाददाता

एकमा। स्थानीय थाना पुलिस ने थाना क्षेत्र के रीठ गांव से एक सप्ताह पूर्व शादी की नियत से अपहरण हुई युवती को पुलिस ने बरामद कर 164 का बयान हेतु न्यायालय भेज दिया। वहीं इस काण्ड में युवती के मां ने थाना क्षेत्र के जामुनी अमनौर गांव निवासी तनु यादव बिट्टू यादव सहित अन्य को आरोपी बनाई है। वहीं स्टेशन रोड़ से एक नाबालिक युवती का शादी कि नियत से अपहरण कि प्राथमिकी युवती कि मां ने दर्ज कराई थी ।जहां पुलिस ने युवती को बरामद कर 164 का बयान हेतु न्यायालय भेज दिया वही आरोपी एकमा निवासी अर्जून बासफोर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

डॉ मनोज कुमार बने जेपीयू के रसायन शास्त्र विभाग के अध्यक्ष

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा सदर। जयप्रकाश विश्वविद्यालय अंतर्गत राजा सिंह कॉलेज के रसायन शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ मनोज कुमार को बनाया गया है ।इस आशय का पत्र जे पी यू के कुलसचिव के माध्यम से कुलपति के आदेशानुसार निर्गत किया गया है ।पत्र से सूचित किया गया है कि बिहार राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम 1976 (अद्यतित संशोधित) के प्रावधानों के तहत और रोटेशनल हेडशिप के लिए बनाए गए कानून के तहत और पत्र संख्या-बीएसयू-26/2008-2155/जीएस (आई) दिनांक- 30.06.2008 के आलोक में, कुलपति ने प्रो (डॉ) मनोज कुमार, रसायन विज्ञान विभाग और प्रोफेसर-इन-चार्ज, राजा सिंह कॉलेज, सीवान को जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा,के रसायन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष के रूप में तत्काल प्रभाव से तीन साल के लिए या सेवानिवृत्ति की तारीख तक जो भी पहले हो, नियुक्त किया है ।वर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) रविन्द्र सिंह तत्काल प्रभाव से अपना कार्यभार प्रो. (डॉ.) मनोज कुमार को सौंपेंगे।

उर्दू माध्यम से अपनी साहित्यिक रचनाओं को उर्दूनामा पत्रिका में प्रकाशित कराएः प्रभारी

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। प्रभारी पदाधिकारी, जिला उर्दू भाषा कोषांग, सारण, छपरा के द्वारा जानकारी दी गई कि विभागीय निर्देश के आलोक में जिला उर्दू भाषा कोषांग सारण, छपरा के तत्वाधान में वर्ष 2024- 25 के लिए जिला उर्दू नामा पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन किया जाना है। बताया गया कि सारण, जिला अन्तर्गत उर्दू साहित्यकारों, कवियों, कथा लेखकों एवं उर्दू भाषा प्रेमियों से जिला के शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं पर आधारित लेख एवं रचनाएँ तथा गजल, नजम, अफसाना, कहानी आदि की आवश्यकता है। शैक्षणिक परिपेक्ष्य में सार्वजनिक स्तर पर उर्दू भाषा के विकास में आनेवाली समस्याओं एवं उनका समाधान, सरकारी स्तर पर उर्दू भाषा के व्यवहारिक कार्यान्वयन में आनेवाली समस्याओं एवं उनका समाधान तथा विद्यालय स्तर पर उर्दू पढ़ाने में आनेवाली समस्याओं एवं उनका समाधान पर आधारित आलेख दिया जा सकता है ।इच्छुक व्यक्ति वर्ष-2024-25 के लिए जिला उर्दू नामा में प्रकाशन के लिये अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर और अपनी तस्वीर के साथ अपनी-अपनी रचनाओं को उर्दू / हिन्दी में टाईप कर जिला उर्दू भाषा कोषांग, सारण, छपरा में 15 दिसम्बर तक जमा करें अथवा निर्धारित समय सीमा के अंदर किसी अन्य माध्यम से कार्यालय में भेजा जा सकता है।

गंगा किनारे छठ घाटों पर दलदल जैसी स्थिति बढ़ा सकती है छठव्रतियों की परेशानी

प्रात: किरण, संवाददाता

दिघवारा नगर।आगामी छठ महापर्व को महज कुछ ही दिन शेष रह गए है ।पाँच नवम्बर से शुरू हो रहे चार दिवसीय लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा को लेकर श्रद्धालु अभी से तैयारी में जुट गए है ।गंगा का जलस्तर कम होने के साथ प्रखंड क्षेत्र के कुछ गंगा घाटों पर छठ व्रतियों के लिए एक समस्या उतपन्न होते दिख रहा है ।बात करे तो मलखचाक,पिपरा,मिल्की ,रामदासचक, श्रीनगर,कुरैया आदि घाटों पर अभी दलदल की स्थिति बनी हुई है जिससे छठव्रतियों को अर्ध्य देने में परेशानी का सबब बन सकती है ।हालांकि अभी छठ पूजा में कुछ वक्त है जिसके कारण स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि गंगा के मुख्य धारा में पानी की मात्रा महज तीन से चार फीट तक ही गहरा है ।जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि पिछले वर्ष की तरह इस बार भी छठ नजदीक आते आते गंगा नदी का इस पार का ज्यादा से ज्यादा हिस्सा सुख जाए ।वही नगर पंचायत क्षेत्र की बात करे तो इस क्षेत्र के छठव्रतियों की परेशानी हमेशा की तरह इस वर्ष भी गम्भीर दिख रही है ।बाढ़ आने के कारण छठ घाट तक जाने वाले सभी रास्ते खतरनाक हो गए हैं,बहुत से रास्ते पर जलजमाव की भी स्थिति दिख रही हैं ।हलाकिं नगर पंचायत प्रशासन का कहना है कि छठ पूजा के समय तक सभी रास्तो को दुरुस्त कर लिया जाएगा।

नीलाम पत्र वादों के निष्पादन में तेजी लायें पदाधिकारी: आयुक्त

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण प्रमण्डल अंतर्गत सभी जिलों में संचालित नीलाम पत्र वादों (सर्टिफिकेट केस) की आज प्रमंडलीय आयुक्त श्री गोपाल मीणा ने समीक्षा की। सारण प्रमण्डल अंतर्गत तीनों जिलों को मिलाकर 77778 नीलाम पत्र वाद संचालित हैं। इन वादों में लगभग 1042.5 करोड़ रुपये की राशि सन्निहित है। इनमें 50 लाख रुपये से अधिक सन्निहित राशि के 48 तथा 10 लाख रुपये से अधिक सन्निहित राशि के 506 मामले शामिल हैं। आयुक्त के निदेशानुसार प्रमण्डल के तीनों जिलों में संचालित नीलाम पत्र के मामलों को विभिन्न श्रेणियों में वगीर्कृत करते हुये एक विशेष फॉरमेट तैयार किया गया है। तीनों जिला में सरकारी विभागों से संबंधित 11190 मामलों में लगभग 155.6 करोड़ रुपये, विभिन्न बैंकों से संबंधित 60989 मामलों में लगभग 849 करोड़ रुपये , विभिन्न सहकारी बैंकों से संबंधित 5539 मामलों में लगभग 17 करोड़ रुपये एवं विभिन्न सरकारी लोक उपक्रमों से संबंधित 60 मामलों में लगभग 20.86 करोड़ रुपये सन्निहित हैं। आयुक्त ने विभिन्न नीलाम पत्र पदाधिकारियों के यहाँ दर्ज मामलों की संख्या को युक्तिसंगत बनाने का निदेश दिया। उन्होंने कहा कि आवश्यक हो तो अतिरिक्त पदाधिकारियों को नीलाम पत्र पदाधिकारी की शक्ति प्रत्यायोजित करें। किसी भी नीलाम पत्र पदाधिकारी के यहाँ औसतन 500 से अधिक मामले नहीं हों, इसे सुनिश्चित करने को कहा गया। कुछ बड़ी सन्निहित राशि वाले मामलों की सुनवाई जिलाधिकारी स्वयं भी करें। अन्य वरीय अधिकारी बड़ी सन्निहित राशि वाले मामलों की सुनवाई करें। सबसे पुराने दर्ज मामलों एवं अधिक सन्निहित राशि के मामलों के निष्पादन को प्राथमिकता दें। उन्होंने सभी बैंकों के पदाधिकारियों को भी नीलामपत्र से संबंधित मामलों की सुनवाई में नियमित रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुये इसके निष्पादन हेतु प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने का स्पष्ट निदेश दिया। नीलाम पत्र वादों की सुनवाई में निर्धारित तिथियों को लगातार अपना पक्ष नहीं रखने पर एक पक्षीय कार्रवाई करते हुये मामलों को निष्पादित किया जायेगा जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेवारी अधियाची बैंक की होगी। बैठक में विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रमंडल के सभी जिलों के नीलाम पत्र पदाधिकारी जुड़े थे।

पटना के कला उत्सव तरंग में सारण के जैनेंद्र दोस्त ,गायक उदय व गोप ने मचाया धमाल

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा/एकमा।राज्य शिक्षा व शोध संस्थान पटना (एससीईआरटी) द्वारा आयोजित कला उत्सव तरंग में राज्य भर के छात्र छात्राओं के खेल, संगीत,पेंटिंग ,मूर्ति कला आदि विधाओं की प्रस्तुति हुई ।इस दौरान सारण जिले के प्रसिद्ध नाट्य कर्मी जैनेंद्र दोस्त गायक उदय नारायण सिंह, रामेश्वर गोप, नृत्य शिक्षक बख्शी विकास ने भी महत्वपूर्ण भागीदारी की और उम्दा प्रस्तुतियां दी।कला उत्सव तरंग के राज्य संयोजक और विभिन्न मंचों के संचालक के रूप में एससीईआरटी के व्याख्याता डॉ जैनेंद्र दोस्त ने अपनी खास पहचान बनाते हुए सारण जिले का नाम रौशन किया तो गायक उदय नारायण सिंह, रामेश्वर गोप व बख्शी विकास ने गायन व नृत्य विधाओं में निर्णायक मंडल में शामिल हो कर महत्ती भूमिका निभाई और अपनी प्रस्तुतियां देकर प्रतिभागियों को प्रेरित किया ।उत्सव में गिल्ली डंडा जैसे पारम्परिक खेलों को पहली बार शामिल करने के लिए एससीइआरटी की सराहना की गई ।समारोह का उद्घाटन करते शिक्षा विभाग के अपर सचिव डॉ एस सिद्धार्थ ,सचिव बैद्यनाथ यादव व एससीइआरटी के निदेशक डॉ सज्जन आर ने कला महोत्सव के आयोजन की भूरी भूरी प्रशंसा की।अपर सचिव डॉ सिद्धार्थ ने कहा कि खेल, संगीत ,नाटक,पेंटिंग ,मूर्तिकला आदि विधा स्कूली शिक्षा का एक अभिन्न अंग है इससे बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद मिलती है।अपर सचिव डॉ सिद्धार्थ ने कहा कि वे खुद बचपन में कंचे खेलते थे और आज भी समय मिलने पर घर पर पेंटिंग करते हैं जिसे सुन छात्र प्रतिभागी काफी प्रभावित हुए।

निःस्वार्थ सेवा और अभिमानरहित पुरुषार्थ के प्रमाण है श्रीहनुमान जी

प्रात: किरण, संवाददाता

भगवान श्रीराम जिनका गुणगान करते हैं और देवता-सिद्ध-गन्धर्व जिनका निहोरा करते हैं वे हैं पवनतनय श्रीहनुमान जी महाराज। असाधारण प्रज्ञा के केन्द्र श्रीहनुमान जी रावण की राजधानी में श्रीजानकी की खोज करने जाते हैं। मजे की बात है ये है कि सीता जी को खोजने गये श्रीहनुमान जी ने सीता जी को कभी देख नहीं है। वे भगवान श्रीराम को देखकर उनकी अनुरूपता का विचार करते हुये श्रीजानकी को खोजते हैं। ईश्वरीय बल को ही अपना बल स्वीकार करने वाले श्रीहनुमान्थ सेवा के अप्रतिम उदाहरण हैं श्रीहनुमान जी। सूर्यनारायण से विद्याध्ययन करने वाले श्रीहनुमान जी महाराज ने अपनी सम्पूर्ण योग्यता को श्रीराम की सेवा में लगा दिया। वे स्वयं को श्रीराम का दूत कहने में धन्यता का अनुभव करते हैं। ईश्वरीय बल को ही अपना बल स्वीकार करने वाले श्रीहनुमान्थ सेवा के अप्रतिम उदाहरण हैं श्रीहनुमान जी। सूर्यनारायण से विद्याध्ययन करने वाले श्रीहनुमान जी महाराज ने अपनी सम्पूर्ण योग्यता को श्रीराम की सेवा में लगा दिया। वे स्वयं को श्रीराम का दूत कहने में धन्यता का अनुभव करते हैं। ईश्वरीय बल को ही अपना बल स्वीकार करने वाले श्रीहनुमान्ता नहीं लगा पाने पर अवसाद से घिरते हुये, गहन तर्कशीलता का परिचय देते हैं। मेधा शक्ति, क्रिया शक्ति और निःस्वार्थ सेवा के अप्रतिम उदाहरण हैं श्रीहनुमान जी। सूर्यनारायण से विद्याध्ययन करने वाले श्रीहनुमान जी महाराज ने अपनी सम्पूर्ण योग्यता को श्रीराम की सेवा में लगा दिया। वे स्वयं को श्रीराम का दूत कहने में धन्यता का अनुभव करते हैं। ईश्वरीय बल को ही अपना बल स्वीकार करने वाले श्रीहनुमान जी ऐसे अनूठे सेवक हैं, जिनको स्वामी के रूप में पूजा जाता है। श्रीराम के नाम-रूप-लीला-धाम में सतत संलग्न श्रीहनुमान जी महाराज उपासकों के परमाचार्य के रूप में विख्यात हैं।

ये बातें छपरा के श्रीमारुति मानस मन्दिर में आयोजित श्री हनुमान जयन्ती के अवसर पर अयोध्या से पधारे आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण जी महाराज ने कहीं। उन्होंने छपरा के महत्त्व को रेखांकित करते हुये कहा कि श्रीरामचरित्र की सरयू श्रीरामभक्ति की गंगा में आकर मिलती हैं। छपरा का गंगा तट इस भाव का भौगोलिक प्रमाण है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे रसिक शिरोमणि मन्दिर के पूज्य पीठाधीश्वर एवं अयोध्या के श्रीलक्ष्मणकिलाधीश महान्त मैथिलीरमण शरण जी महाराज ने कहा कि अयोध्या का छपरा से प्राचीन सम्बन्ध है। श्रीरामानन्दीय रसिकोपासना में तत्सुखी शाखा के प्रवर्तक पूवार्चार्य श्रीजीवाराम जी महाराज की तपस्थली होने के कारण चिरांद गाँव सन्तों के बीच में तीर्थ के रूप में समादृत है।

संविधान निमार्ता की प्रतिमा को असमाजिक तत्व के लोगों द्वारा किया गया क्षतिग्रस्त, आक्रोशित ग्रामीणों ने किया सड़क जाम

प्रात: किरण, संवाददाता

एकमा । प्रखंड के पंचुवां पंचायत के चकमीरा गांव के एक पोखरे के समीप लगाई गई संविधान निमार्ता बाबा साहेब कि प्रतिमा को बुधवार के दिन रात्रि में असमाजिक तत्वों के लोगों ने अम्बेडकर साहेब कि प्रतिमा का दाहिना हाथ का पाखुर पर से पुरी तरह से छतीग्रसत कर दिया था । जिससे उग्र ग्रामीणों ने चकमीरा गांव के सड़क को घंटों जाम कर दिया। घटना की जानकारी मिलते हैं थाना अध्यक्ष उदय कुमार अंचल पदाधिकारी राहुल शंकर प्रखंड विकास पदाधिकारी अरुण कुमार एसडीपीओ राजकुमार ने घटनास्थल पर पहुंच कर जानकारी लिया उसके पश्चात उग्र लोगों को शांत कराया इसके पश्चात इस पंचायत के मुखिया शिव शंकर महतो व ग्रामीणों से भी जानकारी के पश्चात भीम आर्मी के जिला अध्यक्ष राजेंद्र रोशन और ग्रामीणों के साथ एक बैठक हुई जिसमें मुख्य रूप से लगातार यह चौथी बार असमाजिक तत्व के द्वारा भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा को छाती ग्रस्त किया गया । जिसपर उपस्थित लोगों व पदाधिकारियों ने इसकी कड़ी निंदा किया। वहीं प्रखंड विकास पदाधिकारी अरुण कुमार ने पंचायत के मुखिया शिव शंकर महतो को अभिलंब क्षतिग्रस्त प्रतिमा का मंरम्ती एवं घेराबंदी करने का निर्देश दिया जिस पर मुखिया के द्वारा छती ग्रस्त प्रतिमा का कार्य अभिलंब शुरू कर दिया गया ।इस घटना को लेकर पंचायत के पूर्व मुखिया सर्वजीत राम ने थाने में एक लिखित आवेदन देकर अज्ञात लोगों पर प्राथमिक की दर्ज कराई है। थाना अध्यक्ष ने इसकी जांच पड़ताल के लिए एक टीम गठित कर हर बिंदु पर जांच किया जा रहा है । आरोपियों को जल्द ही चिन्हित कर कठोर कार्रवाई किया जाएगा।

बीसीएसएस की बैठक में कलाकारों की समस्याओं पर की गई चर्चा

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा. बिहार सिनेमा एवं सांस्कृतिक समिति के बैनर तले छपरा जिला इकाई की बैठक हुई. जिसमें कलाकारों की समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गयी. विदित हो कि बिहार सिनेमा एवं सांस्कृतिक समिति विगत कई वर्षों से कलाकारों की समस्याओं को लेकर संघर्षरत है. हाल ही में बिहार सरकार द्वारा बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति लागू की गयी है. जो बिहार सिनेमा एवं सांस्कृतिक समिति के दस सूत्री मांगों में से एक थी. बिहार के कलाकारों की विभिन्न समस्याओं को लेकर बिहार सिनेमा एवं सांस्कृतिक समिति आज भी संवेदनशील है. कार्यक्रम में समिति द्वारा आगामी कार्य योजनाओं पर भी चर्चा की गयी. साथ ही सभी कलाकारों तथा संगठन के सदस्यों ने एक स्वर में भोजपुरी भाषा के विकास का संकल्प दोहराया. मौके पर समिति के राष्ट्रीय महासचिव धनंजय चौबे, राष्ट्रीय सचिव राजू बाबा, प्रदेश संयोजक कौशल कुमार शर्मा, जिलाध्यक्ष शिवजी प्रसाद गुप्ता, अध्यक्ष रजनीश कुमार आदि थे।

परिवार नियोजन पर कार्यशाला का किया गया आयोजन

बेतिया(घनश्याम), प्रातः किरण।पश्चिमी चंपारण जिले के अनुमंडलीय अस्पताल बगहा में पॉपुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया के तत्वाधान में परिवार नियोजन पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें स्टॉफ नर्स व स्वास्थ्य कर्मियों को डॉ एस पी अग्रवाल, डॉ तारिक नदीम ने परिवार नियोजन से संबंधित मुद्दों, कार्यक्रम को बेहतर ढंग से चलाए जाने को लेकर चर्चा की। डॉ अशोक कु तिवारी ने कहा की उन्मुखीकरण का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य केन्द्रों मे कार्यरत सभी कर्मियों को प्रशिक्षित एवं जागरूक करना है। सभी स्वास्थ कर्मियों के माध्यम से परिवार नियोजन से संबंधित सभी सुविधाओं एवं साधनों के बारे मे अस्पताल आए सभी योग्य दंपति को जागरूक करना एवं उन्हें परिवार नियोजन से संबन्धित सुविधाएं उपलब्ध कराना है। पीएसआई के प्रताप कोशियारी ने बताया कि परिवार नियोजन के माध्यम से हम लोगों के जीवन को स्वस्थ्य एवं सुखी बना सकते है।

नियोजन कैंप का आयोजन 28 को

छपरा कार्यालय। अवर प्रादेशिक नियोजनालय छपरा, सारण से प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रम संसाधन विभाग के तत्वाधान में 28 अक्टूबर को पूर्वाह्न 11:00 से अपराहन 4:00 बजे तक अवर प्रादेशिक नियोजनालय छपरा कार्यालय परिसर में एक दिवसीय नियोजन कैंप का आयोजन किया गया है।

इसमें नियोजक चैतन्य इंडिया फाइनेंस क्रेडिट प्राइवेट लिमिटेड, सिवान के द्वारा सारण, छपरा हेतु रिक्तियों के विरुद्ध चयन किया जाएगा। जिला नियोजन पदाधिकारी के द्वारा बताया गया कि इस नियोजन कैंप में) के 50 रिक्त पद हेतु चयन किया जाएगा। इस पद हेतु शैक्षणिक योग्यता दसवीं, बारहवीं पास होना आवश्यक है। उम्र सीमा 18 से 28 वर्ष रखी गई है। वेतन-11080 रुपया के अलावा इंसेंटिव 5000 से 10000 रुपया होगा। नियोजन शिविर में भाग लेने वाले अभ्यर्थियों के लिए आवश्यक है कि उनका निबंधन जिला नियोजनालय में हो ' नियोजनालय में निबंधन की प्रक्रिया ऑनलाइन कर दी गई है जो कि भारत सरकार के पोर्टल ६६६.ल्लू२.ङ्घ५.ल्ल के माध्यम से होता है ' कोई भी अभ्यर्थी स्वयं भी उपरोक्त पोर्टल के माध्यम से अपना निबंधन कर सकता है। नियोजन कैम्प में भी ऑनलाइन नियोजनालय निबंधन की व्यवस्था रहेगी। अवर प्रादेशिक नियोजनालय छपरा में भी ऑनलाइन निबंधन हेतु संपर्क किया जा सकता है '

चुलाई शराब के धंधेबाज धराए, भेजे गए जेल

प्रात: किरण, संवाददाता

चनपटिया ।दीपावली व छठ पर्व को बेतिया पुलिस काफी ही सजग व मुस्तैद दिख रही है। सिरसिया पुलिस ने बुधवार को देर शाम बाइक से दस लीटर चुलाई दारू लेकर जा रहा एक धंधेबाज को रंगोहाथ धरदबोचा है। थानाध्यक्ष मदन कुमार मांझी ने कि गिरफ्तार धंधेबाज बंधु कुमार राम ग्राम गुरवलिया को नाटकीय ढंग से से छुपे चोरी से गिरफ्तार किया गया है। श्री मांझी ने बताया कि पेशवर यह धंधेबाज है। पुलिस को हमेशा चकमा देकर शराब धंधेबाजी में कई महिनों से संलिप्त रहा है ।उसे गिरफ्तार कर मद्धनिषेध व उत्पाद अधिनियम के तहत एफआईआर दर्ज कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। वहीं जप्त बाइक के संदर्भ में सत्यापन की जा रही है।

छपरा के युवा व होनहार इंजीनियर ने किया जिला का नाम रौशन

चित्रांश ने दी समाज को बधाई

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। शिक्षा की गुणवत्ता एवं तकनीकी क्षेत्र में हासिल होने वाली शिक्षा को आगे बढ़ाने में ई.अभिजीत श्रीवास्तव दिनोदिन लगातार आगे बढ़कर अपनी अमिट छाप छोड़ रहे है ।यही कारण है कि कई तकनीकी संस्थानों,विश्वविद्यालयों सहित राज्य एवं केंद्र स्तर पर संचालित होने वाली कई महत्वपूर्ण योजनाओं के कार्यान्वयन में एक महती भूमिका निर्वहन कर रहे है ।कई संस्थानों द्वारा सम्मानित हो चुके है ।यह कोई दूसरा नहीं है बल्कि छपरा शहर के भगवान बाजार निवासी स्व.आलोक कुमार श्रीवास्तव एवं सरिता श्रीवास्तव के पुत्र ई.अभिजीत श्रीवास्तव है ।बताते चलें कि दिल्ली स्थित ली मेरीडियन होटल में शिक्षा टेक्नोलॉजी एवं व्यापार संबंधित कार्यक्रम आईसीएआई चम्बर्स ऑफ कॉमर्स के निदेशक आयोजित किया गया था। जिसमे अभिन्नोवेशन टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक एवं समाजसेवी अभिजीत श्रीवास्तव को इनोवेटिव ऐकडेमिक लीडर ऑफ द ईयर 2024 से सम्मानित किया गया तथा प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो दिया गया। इस कांक्लेव में शिक्षा एवं व्यापार जगत की नामी गिरामी हस्तियाँ शामिल थी । जिसके मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री जल शक्ति डॉ. राजभूषण चौधरी , सांसद लवली आनंद , ए आई सी टी ई के सीओओ , जैपुरिया यूनिवर्सिटी , शोभित यूनिवर्सिटी , आई टी एस यूनिवर्सिटी , और कई नामी यूनिवर्सिटी के कुलपति, आईआरसीटीसी , हव्वार्ड यूनिवर्सिटी तथा शिक्षा एवं व्यापार से जुड़े नामी हस्तियाँ शामिल रही ।समाजसेवी व अभिन्नोवेशन टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक ई .अभिजीत श्रीवास्तव के साथ उनके परिवार से जुड़ी सरिता श्रीवास्तव , अभिप्रिया श्रीवास्तव , आदित्य श्रीवास्तव एवं श्रीनिका श्रीवास्तव तथा कंपनी के टेक्निकल हेड टेक क्यू लैब्स प्रमुख नीतीश सिंह तथा दिल्ली एवं पटना कार्यालय के अधिकारी ,प्रबंधक अखंड प्रताप सिंह , विकास यादव ,ललित शर्मा , राहुल अग्निहोत्री,, सौरव तिवारी , निकिता राजपूत , सिराज अली , दीपक कुमार एवं सुनील ठाकुर अनुज हंसपाल सभी मौजूद थे।

जिला प्रशासन द्वारा छात्राओं को दिया जाएगा सेक्सुअल ह्रासमेंट ऐक्ट की जानकारी

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा सदर। जिला प्रशासन द्वारा छात्राओं को दिया जाएगा सेक्सुअल ह्रासमेंट ऐक्ट की जानकारी।उक्त बातो की जानकारी देते हुए जे पी यू के एन एन एस समन्यवक डॉ हरिश्चंद ने बताया कि 26 अक्टूबर को सुबह 9.00 बजे सेक्सुअल ह्रासमेंट एक्ट पर एक कार्यशाला का आयोजन जिला प्रशासन छपरा,के तत्वावधान में होगा। जिला प्रशासन,सारण के पदाधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्रा वालंटियर को इस उद्देश्य से विस्तार से जानकारी देंगे , जिससे छात्रा वालंटियर अपनी यूनिट के द्वारा गोद लिए हुए गांव /क्षेत्र में जाकर सभी महिलाओं को जागरूक किया जाएगा। उपर्युक्त कार्यक्रम में सभी छपरा मुख्यालय स्थित महाविद्यालयों से राष्ट्रीय सेवा योजना की बीस बीस स्वयंसेविकाओं को इस कार्यशाला में भेजना है। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता जे पी यू के कुलपति प्रोफेसर परमेन्द्र कुमार बाजपेई करेंगे। साथ ही इस कार्यशाला में जिला पदाधिकारी,सारण, जिला एवं सत्र न्यायाधीश,सारण ,पुलिस अधीक्षक,सारण एवं जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा एवं अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों की भी उपस्थिति रहेगी,साथ ही साथ उक्त तिथि को इस कार्यक्रम के उपरांत साइकोलॉजिकल काउंसलिंग सेल का भी उद्घाटन सीनेट हॉल में होगा।

संक्षिप्त खबरें

जीवन उत्सव स्कूल में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

चंदनपुरा तिलौथू (रोहतास) : जीवन उत्सव पब्लिक स्कूल चंदनपुरा की प्रार्थना सभा में विद्यालय में आयोजित निबंध एवं सुलेख प्रतियोगिता में चयनित छात्रों को पुरस्कृत किया गया। दीपावली के अवसर पर 22 अक्टूबर को विद्यालय में कक्षा प्रथम से पंचम के लिए हिंदी सुलेख एवं कक्षा षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम के लिए दीपावली विषय पर 300 शब्दों में निबंध प्रतियोगिता आयोजित हुई थी। इसमें कक्षा सह प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया। इस कार्य में विद्यालय के सभी शिक्षक, शिक्षिकाएं का सहयोग प्राप्त हुआ। पुरस्कार वितरण में विद्यालय के प्रधानाचार्य सुनील कुमार एवं मार्गदर्शक जंगलेश प्रसाद चौरसिया ने सहयोग किया। संचालन सफदर अली ने किया। आभार ज्ञापन निदेशक मिथिलेश कुमार विश्वकर्मा ने किया। कार्यक्रम हर्षोल्लास सम्पन्न हुआ।

सुरक्षित नहीं है उत्क्रमित मध्य विद्यालय, उसरी

प्रातः किरण संवाददाता

दावथ (रोहतास) प्रखंड क्षेत्र के उसरी पंचायत स्थित पतले पगडंडी की तरह रखें पोल नहर पार करने के लिए खतरे को देता है दावत, वही कई बार बच्चे उससे गिर भी चुके हैं।वहीं विद्यालय का चहारदिवारी नहीं होने के कारण विद्यालय प्रांगण एवं कमरे भी सुरक्षित नहीं है। पूर्व में इस विद्यालय से कई बार सामानों की चोरी भी हो चुकी है। प्रधानाध्यापक नीरज कुमार ने बतलाया कि विद्यालय प्रांगण को असामाजिक तत्वों द्वारा गंदा कर दिया जाता है।क्योंकि यहां से चहारदिवारी या किसी तरह का कोई मुख्य दरवाजा नहीं है, जिसके कारण विद्यालय प्रांगण में चहल कदमी करने वाले परिसर को गंदा कर देते हैं। उन्होंने बतलाया कि कई बार तो मल मूत्र भी असामाजिक तत्वों के द्वारा कर दिया जाता है, जिसके कारण काफी असुविधा होती है। इस संबंध में वरीय अधिकारियों से इसकी लिखित जानकारी देने और इसके चहारदिवारी के मांग का उन्होंने जिक्र भी किया। गांव के ग्रामीणों ने भी विद्यालय के चहारदीवारी एवं पुलिया निर्माण के लिए सरकार से आग्रह किया। सामाजिक कार्यकर्ता गंगा प्रसाद सिंह, मुखिया संजय सिंह, हर्षू साह सहित कई लोगों ने यहां विद्यालय की घेराबंदी न होने से शिक्षा एवं छात्र-छात्राओं के कठिनाई की बात कही।

कछवां पुलिस ने वाहन जांच कर वसूला जुमार्ना

नासरीगंज (रोहतास) कछवां पुलिस ने वरीय अधिकारी के दिशा-निर्देश पर चलाया वाहन जांच वसूला जुमार्ना । जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष मितेश कुमार ने बताया कि स्टेट हाईवे 81 मुख्य मार्ग पर थाना मोड़ के समीप स्थानीय थाना के पुलिस पदाधिकारी शालू कुमारी के नेतृत्व में वाहन जांच अभियान चलाया गया । वाहन जांच के क्रम में वाहन चालकों का ऑनर बुक,डिक्की,प्रदूषण जांच,ड्राइविंग लाइसेंस,जूता एवं हेलमेट समेत अन्य बिंदुओं पर बारीकी से पुलिस द्वारा सर्च अभियान चलाया गया । उन्होंने कहा कि वाहन जांच के दौरान स्थानीय पुलिस ने वाहन चालकों से 10 हजार रुपए का ऑनलाइन चालान काटा । श्री कुमार ने बताया कि वाहन जांच की प्रक्रिया निरंतर चलते रहेगा । मौके पर स्थानीय थाना के पुलिस पदाधिकारी शालू कुमारी,वाहन चालक एवं पुलिस बल के जवान मौजूद थे ।

मंत्री नागमणि ने कोइरी जाति की संख्या कम बताने का लगाया आरोप

प्रातः किरण संवाददात

रोहतास (बिहार)। आज रोहतास जिले के सासाराम में पूर्व केंद्रीय मंत्री नागमणि ने प्रेसवार्ता कर बिहार में जातीय जनगणना में कोइरी जाति के लोगों की संख्या कम बताने का आरोप लगाते हुए सीएम नीतीश कुमार को घेरने की कोशिश की। उन्होंने प्रेसवार्ता कर कहा कि बिहार में 12% से अधिक कोइरी जाति के लोगों की संख्या है लेकिन जनगणना कर के मात्र 4% के करीब संख्या बताई जा रही है। जबकि जिसकी जितनी जनसंख्या है, उसके आधार पर अगर हिस्सेदारी देने की बात है तो नीतीश कुमार की सरकार ने कोईरी जाति के लोगों का गला घोटने का काम किया है। इतना ही नहीं, जातिय गणना में कलाल जैसी मुस्लिम जातियों को हिंदू में जोड़ दिया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार आदि के जाति की संख्या में भी जबरदस्त हेरा फेरी की गई है। इन तमाम मुद्दों को लेकर वह पूरे बिहार का भ्रमण कर रहे हैं तथा अगले साल 23 फरवरी को पटना के गांधी मैदान में वह एक बड़ी सभा करने जा रहे हैं। जिसमें कोईरी जाति के अधिकारों से संबंध में चर्चा की जाएगी।

लॉकेट छिनकर भाग रहे चोरों को ग्रामीणों ने पकड़ पुलिस को सौंपा

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) लॉकेट काटकर भाग रहे चोर को जोन्ही गांव से गोटपा गांव के ग्रामीणों ने पकड़ किया पुलिस के हवाले । सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार घटना के संदर्भ में बताया जाता है कि गुरुवार को बिक्रमगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत गोटपा निवासी नागेंद्र सिंह की दो वर्षीय नातिन शिवांशी राज अपने दरवाजे पर खेल रही थी । उसी क्रम में कबाड़ी लेने व बेचने के बहाने चोर ने अकेले दरवाजे पर खेल रही बच्ची को खाने के लिए पापड़ी देकर बहला-फुसला कर उसके गले से सोने का लॉकेट काटकर भागने लगा। उसी दौरान बच्ची के घर की कुछ महिलाओं द्वारा घटना को देखकर शोरगुल करने लगी। शोरगुल की आवाज सुनकर घर समेत आसपास के लोग जुट गए। तत्पश्चात्त घर की महिलाओं द्वारा बच्ची के साथ घटी घटनाओं के बारे में घर के लोगों एवं आसपास के लोगों को जानकारी दी। उसके उपरांत घर के लोग समेत सैकड़ो की संख्या में स्थानीय ग्रामीण चोर का पीछा करते-करते जोन्ही गांव से पकड़ लिए। उसके बाद चोर को पकड़कर मामले की जानकारी लेते हुए लोग मारपीट करने लगे। उसके बाद बच्ची के परिजनों ने पकड़े हुए चोर से सोने के लॉकेट के बारे में मारपीट करते हुए पूछताछ की। तो उसने लॉकेट चोरी की बातों को स्वीकारा। साथ ही साथ चोरी किए हुए लॉकेट को बच्ची के परिजनों को दे दी। जिस घटना की सूचना दूरभाष के माध्यम से स्थानीय ग्रामीणों ने डायल 112 , काराकाट थाना एवं बिक्रमगंज थाना को दी । सूचना मिलते ही डायल 112, काराकाट थाना एवं बिक्रमगंज थाना की पुलिस घटनास्थल पर पहुंच जानकारी लिया ।

नहीं थम रही है मोटरसाइकिल चोरी की घटनाएं

बिक्रमगंज (रोहतास) चोरी की मोटरसाइकिल के साथ एक युवक को पुलिस के द्वारा पकड़ा गया और भेजा गया जेल। अभी कुछ ही रोज पहले रोहतास एसपी के द्वारा मोटरसाइकिल चोर का गिरफ्तारी के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस किया गया था। इसी बीच गुरुवार को बिक्रमगंज के पुलिस ने दो मोटरसाइकिल चोरों को पुनः गिरफ्तार किया है। थानाध्यक्ष ललन प्रसाद ने इसकी जानकारी देते हुए बतलाया कि वकील कुमार उम्र 23 वर्ष पिता हरे राम शर्मा जबकि दूसरा बाइक चोर कुंदन कुमार पिता गुप्त सिंह ग्राम कई थाना सूर्यपुरा रोहतास के निवासी हैं। इन दोनों को चोरी की मोटरसाइकिल के साथ गिरफ्तार किया गया है।कांड संख्या 620 /24 के तहत इन्हें गिरफ्तार कर जांच के बाद जेल भेजे जाने की जानकारी दी गई।

दिनदहाड़े प्रॉपर्टी डीलर को मारी गोली
भोजपुर पुलिस की कार्यशैली पर खड़े हो रहे सवाल

प्रातः किरण संवाददात

आराःइस वक्त एक बड़ी खबर सामने आ रही है कि आरा में हथियारबंद अपराधियों ने दिनदहाड़े एक युवक को बीच बाजार में गोली मार दी है। इस घटना के बाद से इलाके में अफरा-तफरी का माहौल कायम हो गया है। बताया जाता है कि आरा नगर थाना क्षेत्र के गौसगंज स्थित मुक्तिधाम बैरियर के पास हथियारबंद अपराधियों ने नगर थाना क्षेत्र के बड़की सिंगही निवासी स्वर्गीय अब्दुल रहीम का पुत्र शाहिद आलम उर्फ पप्पू है, जो प्रॉपर्टी डीलर का काम करता है। बताया जा रहा है कि तीन बाइक पर सवार 4 की संख्या में अपराधियों ने उसे गोली मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। उसके बाद स्थानीय लोगों द्वारा उसे आनन-फानन में इलाज के लिए आरा शहर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया है, जहां आरा सदर अस्पताल के सर्जन डॉक्टर विकास सिंह की देखरेख में उसका इलाज जारी है। हालांकि, दिनदहाड़े बीच बाजार में गोलीबारी की घटना के बाद से भोजपुर पुलिस प्रशासन की कार्यशैली पर सवालिया निशान खड़े होने लगे हैं। जहां एक तरह दीपावली और छठ पर्व को लेकर बाजारों में काफी भीड़भाड़ देखने को मिल रही है, वहीं दूसरी तरफ आरा शहर में रोजाना यातायात भी बाधित रहता है तो वहीं इस तरह बीच बाजार में गोलीबारी की घटना कर अपराधी आसानी से फरार हो जा रहे हैं। कहीं ना कहीं भोजपुर पुलिस की पुलिसिंग फेल नजर आ रही है।हालांकि, गोलीबारी की घटना क्यों घटी है? फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। गोलीबारी की घटना के बाद मौके पर पहुंचे आरा एएसपी परिचय कुमार ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है, उसके बाद ही कुछ स्पष्ट हो पाएगा।

बहुजन एकजुटता हीं सामाजिक न्याय के लक्ष्य प्राप्ति का रास्ता है : प्रो. लक्ष्मण यादव

प्रातः किरण संवाददाता

आरा के अमर शहीद जगदेव प्रसाद ट्रस्ट सह शोध संस्थान अनाइठ आरा में सोशल जस्टिस आर्मी के द्वारा सामाजिक न्याय के मुद्दों पर संवाद का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता बड़हरा विधानसभा क्षेत्र के पुर्व प्रत्याशी रघुपति यादव और संचालन रितेश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन रमेश यादव ने किया।

संवाद में मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रो. डॉ. लक्ष्मण यादव ने संबोधित करते हुए कहा कि बहुजन समाज को आपस में मजबूती से एक दूसरे के लिए कड़ी बनने की जरूरत है ।आगे उन्होंने कहा कि जगदेव प्रसाद, ललई सिंह यादव जैसे योद्धाओ के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए मैं संकल्पित हूं,

संवाद को आगे संबोधित करते हुए सामाजिक न्याय आंदोलन के संयोजक रिंकू यादव ने कहा कि बिना मानवतावाद के समाजवाद को परिभाषित नहीं किया जा सकता, आज देश आर्थिक तंगी से जूझ रहा है। देश में सामाजिक और आर्थिक समानता की जरूरत है, दुख की बात है कि अमीर कई गुना अमीर और गरीब कई गुना गरीब होते जा रहे हैं,इस पर गंभीर बस होनी चाहिए ।

आगे सोशल जस्टिस आर्मी के संयोजक गौतम आनंद ने कहा कि देश गरीब किसान मजदूर का है और बहुत दुख की बात है कि कमेरा वर्ग के लोग आज अपने आप को कुंठित महसूस कर रहे हैं, खासकर किसान मजदूर , और शिक्षा पर गंभीर बहस करने की जरूरत है। भीम आर्मी के प्रदेश अध्यक्ष अमर ज्योति ने कहा कि समाज में जो दिन प्रतिदिन यातनाएं की खबरें आती है वह समाजवाद को खतरे में डालता है ,ऐसे में हम सभी को अलख जगाना चाहिए, तभी जाकर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के सपनों को पूरा किया जा सकता है।वक्ता में मुख्य रूप से पूर्व राज्यसभा सांसद अली अनवर साहब,डॉक्टर बबन यादव, सुजीत कुशवाहा, देव शंकर आर्या, मंशा कुमार राम,रवि यादव , अविनाश शर्मा, संजय यादव सहित सैकड़ो लोग कार्यक्रम में शिरकत किया।

धावा दल के टीम ने कोईलवर प्रखंड के कायमनगर बाजार से दो बाल श्रम से लिप्त बालश्रमिकों को कराया मुक्त

प्रातः किरण संवाददात

आरा। एक्सेस टू जस्टिसह्व प्रोग्राम के तहत समाजिक संस्था दिशा एक प्रयास, भोजपुर और श्रम संसाधन विभाग, भोजपुर और स्थानीय पुलिस के सहयोग से कायमनगर बाजार से बाल श्रम से लिप्त दो बालश्रमिकों को विमुक्त कराकर बाल कल्याण समिति भोजपुर में प्रस्तुत किया गया और नियोजक रमेश कुमार और कुणाल भगत पर प्राथमिक दर्ज कराया गया। बाल श्रम से लिप्त बालश्रमिक को मुक्त कराने के लिए कोईलवर प्रखंड मे धावा दल की टीम ने जगह जगह पर छापेमारी किया। इस दौरान कायमनगर बाजार से कुमार मोटर साइकिल से एक बाल श्रमिक और उसी दुकान के बगल में फल दुकान से एक बाल श्रमिक को विमुक्त कराया गया।

इस धावा दल की टीम में ऋषिका सिंह श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी चरपोखरी, अखिलेश कुमार श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी गड़हनी, सुगीता कुमारी कोइलवर, और ह्लसंस्था दिशा एक प्रयासह्व, भोजपुर से प्रवीण कुमार तिवारी एवं स्थानीय पुलिस शामिल थे।

सीओ करेंगे साइबर कैफे वालों के साथ बैठक

प्रातः किरण संवाददात

सासाराम (रोहतास) : अंचलाधिकारी सासाराम, शनिवार को सद्भावना भवन में परिमार्जन प्लस के आवेदन के ट्रेनिंग के लिए सासाराम के सभी साइबर कैफे वाले के साथ बैठक करेंगे। अंचलाधिकारी ने बताया कि रैयत जो आवेदन साइबर कैफे से करवा रहे है, उसमें काफी गलतियां है। जिसके कारण आवेदन को रिटर्न करना पड़ रहा है ' इसके कारण रैयतों को पुनः सुधार कर के आवेदन भेजना पड़ता है। जिससे रैयत को परेशानी उठानी पड़ रही है '

रैयतों को परिमार्जन प्लस का आवेदन साइबर कैफे से देने में समस्या होने पर सीधे अंचल कार्यालय में आकर ऑपरेटर को आवेदन देने का सुझाव दिया। कहा कि रैयत किसी भी गैर सरकारी व्यक्ति से दाखिल खारिज या परिमार्जन का कार्य के लिए नहीं मिलें। सीधे अंचल कार्यालय में आकर कर्मचारी, राजस्व अधिकारी, अंचलाधिकारी से आकर मिले एवं अपना कार्य का निष्पादन करवाएं ' अंचलाधिकारी ने यह भी बताया कि रैयत स्वयं अपने दाखिल खारिज एवं परिमार्जन का २३३४२ चेक कर सकते है। आवेदन में यदि अंचल कार्यालय के द्वारा आपत्ति नहीं लगाया गया हो तो अंचल कार्यालय आने की जरूरत नहीं है, विभाग के ऋक्रऋ नियमानुसार आवेदन का निष्पादन कर दिया जायेगा ' आवेदन पर आपत्ति लगने पर रैयत के मोबाइल पर आवश्यक कागजात के लिए मैसेज भेजा जाता है। रैयत स्वयं अंचल कार्यालय आकर अपना कागजात अंचल कार्यालय में जमा करे ' सर्वे से संबंधित कागजात विशेष सर्वेक्षण सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी कार्यालय, पंचायत सरकार भवन धवडाढ़ में जमा कर सकते है।

संगठन विस्तार पर हुई बैठक

प्रातः किरण संवाददात

आरा/ भोजपुर- संगठन विस्तार को गुरुवार को जेल रोड स्थित हर प्रसाद दास जैन धर्मशाला में हिंदू जागरण मंच आरा भोजपुर की जिला बैठक सम्पन्न हुआ। बैठक जिला अध्यक्ष सुरेंद्र सिन्हा के अध्यक्षता में की गई , जिस में मुख्य रूप से संगठन विस्तार तथा संगठन के कार्यों की समीक्षा पर की गई।संगठन विस्तार के क्रम में हिंदू जागरण मंच आरा जिला के सह संयोजक के रूप में विक्की सिंह आजाद को नियुक्त किया गया, जिला आर्थिक प्रमुख के रूप में अरुण कुमार , जिला सूचना संग्रह प्रमुख के रूप में राजवीर राज सोनी , जिला संपर्क प्रमुख के रूप में मुन्ना बजरंगी, सह संपर्क प्रमुख के रूप में गोलू सिंह, जिला प्रचार प्रमुख के रूप में दुर्गेश सिंह, सह प्रचार प्रमुख के रूप में ऋतिक सिंह, जिला समन्वय प्रमुख के रूप में संजय कोणाडिया, तथा जिला कार्यक्रम सदस्य के रूप में मनीष जी को नियुक्त किया गया।

आरा नगर के उपाध्यक्ष का दाईत्व डा विकाश कुमार गुप्ता को सौंपा गया, नगर सह संयोजक कुंदन केशरी, सह संपर्क प्रमुख के रूप में विकाश चंद्रेवंशी, आयुष मेहता, सत्यम सिंह और आशिस सोनी को नियुक्त किया गया, नगर सह प्रचार प्रमुख के रूप में सोनू जी, नगर सूचना संग्रह प्रमुख हरेराम जी, सह संग्रह प्रमुख धीरज जी , पवन जी और शुभम कनौजिया को नियुक्त किया गया । एवं नगर कार्यक्रणी सदस्य के रूप में चंदन गुप्ता उर्फ फोफी जी ,रोहित पटेल, किशन कुमार, शिवम सोनी, अमित जी, रोहित, प्रत्युष श्रीवास्तव, आदित्य सोनी, रमेश चौधरी, सोनू रेबेल , अमन सोनी, अंकुश सिन्हा, राहुल जी को नियुक्त किया गया।

भोजपुर जिला युवा कांग्रेस के कार्यकारिणी की बैठक साथ ही साथ किया गया युवा चौपाल कार्यक्रम आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। स्थानीय पार्टी कार्यालय शहीद भवन आरा में भोजपुर जिला युवा कांग्रेस के कार्यकारिणी की बैठक साथ ही साथ युवा चौपाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भोजपुर जिला युवा कांग्रेस अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह, संचालन नेशनल कॉर्डिनेटर युवा कांग्रेस प्रशांत ओझा तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ अमित कुमार द्विवेदी ने किया। भोजपुर जिला युवा कांग्रेस कार्यकारणी व युवा चौपाल को संबोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रभारी सम्राट केशरी जेना जी ने कहा की युवाओं को इस चौपाल कार्यक्रम के माध्यम से आमजनो में अपनी सकारात्मक उपस्थिति दर्ज करने का सुनहरा मौका हैं। खास कर नई पीढ़ी के बीच कांग्रेस की उपलब्धियों की रखने की आवश्यकता हैं। सत्तारूढ़ दल देश को लगातार जाती,धर्म और संप्रदाय में बाटने का कुंठित प्रयास कर रही है। वर्तमान समय में कांग्रेस पार्टी का युवाओं के प्रति विश्वास बढ़ा हैं। उन्होंने युवाओं को आह्वान करते कहा की आने वाला समय कांग्रेस का हैं और कांग्रेस आपके मान सम्मान के प्रति कटिबद्ध हैं। भोजपुर जिला युवा कांग्रेस अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह उर्फ मुकुल ने आगत अतिथियों को आश्वस्त किया की भोजपुर जिला युवा कांग्रेस पूरे जिले में कार्यकताओं की एक बड़ी फौज तैयार करने की दिशा में अग्रसर हैं जिससे पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने में फायदा मिलेगा। भोजपुर जिला कांग्रेस अध्यक्ष अशोक राम ने युवाओं को व्हाट्सप्प यूनिवर्सिटी से दूर रहने की नसीहत देते हुए यथार्थ की दुनियां में लौटने की अपील की।

कार्यक्रम में भोजपुर जिला युवा कांग्रेस अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह उर्फ मुकुल, विहार युवा कांग्रेस प्रभारी सम्राट केशरी जेना, प्रदेश उपाध्यक्ष आशुतोष त्रिपाठी, प्रशांत ओझा, खुर्रम जी, भोजपुर जिला कांग्रेस कमिटी अशोक राम, प्रदेश डेलीगेट डॉ श्रीधर तिवारी, प्रदेश डेलीगेट संतोष पाण्डेय, पूर्व विश्वविद्यालय अध्यक्ष डॉ अमित कुमार द्विवेदी, डॉ आशुतोष ठाकुर, बीरेंद्र मिश्रा, जितेन्द्र शर्मा, बिजेंद्र यादव, आनंद तिवारी, शक्ति सिंह उर्फ मनन, अविनाश मिश्रा, गोलू पाण्डेय, लक्ष्मन सिंह, पंकज धानी, धनजय सिंह, सुमित, अनिल, अमित मिश्रा, अनिल, सन्नी, अनूप राय, लव जी, राजा, मोनू, अंशु पाठक, अभिषेक कुमार आदि थे।

सड़क दुर्घटना में युवक की मौत पर परिजनों से मिलने पहुंचे जिलापार्षद

काराकाट (रोहतास) विगत मंगलवार की देर संध्या एनएच 120 बिक्रमगंज-डिहरी मुख्य मार्ग पर काराकाट थाना क्षेत्र अंतर्गत जोरावरपुर के समीप सड़क दुर्घटना में कछवां थाना क्षेत्र के अमौना निवासी रामयश सिंह के 42 वर्षीय पुत्र मोहन सुधाकर की मौत घटना स्थल पर ही हो गई थी ।जिस घटना की खबर को सुन काराकाट भाग 3 के जिला पार्षद रितेश सिंह मृतक स्वर्गीय मोहन सुधाकर के पैतृक आवास पर पहुंचे ।जिस दौरान श्री सिंह ने मृतक के पिता समेत उनकी पत्नी और दोनों पुत्रियों को इस दुख की घड़ी में सांत्वना देते हुए ढाढस बंधाया ।साथ ही इस विदारक घटना को लेकर सदैव साथ देने की बातें कहीं ।उक्त दौरान मृतक के पैतृक आवास पर स्थानीय मीडिया की टीम पहुंच स्वर्गीय सुधाकर के परिजनों को सांत्वना देते हुए ढाढस बंधाया ।उसी दौरान जिला पार्षद श्री सिंह ने मीडिया के समक्ष उनके परिजनों को हर संभव मदद दिलाने की बातें कहीं ।उक्त दौरान श्री सिंह ने स्वर्गीय सुधाकर के बारे में बताया कि वो एक सामाजिक व्यक्ति के साथ-साथ सरल स्वभाव एवं मृदुभाषी भी थे ।जो आज हम सबों के बीच नही रहें ।उन्होंने उनकी मृत आत्मा की शांति हेतू ईश्वर से प्रार्थना की ।मौके पर स्वर्गीय सुधाकर के पिता रामयश सिंह,काराकाट भाग 3 के जिला पार्षद रितेश सिंह,ग्राम पंचायत अमौना के पूर्व मुखिया , सरोज सिंह,स्थानीय मीडिया के लोग सहित अन्य मौजूद थे।

तरारी विधानसभा के चुनाव को लेकर पिरो मंडल के युवा मोर्चा का किया गया बैठक

आराःतरारी विधानसभा के चुनाव को लेकर पिरो मंडल के होटल वैभव में एक युवा मोर्चा का बैठक की गई जिसमें तरारी विधानसभा के पांच मंडल के मंडल अध्यक्ष उनकी कमेटी और जिला पदाधिकारी की टीम साथ में प्रदेश युवा मोर्चा की टीम भी बैठी इस बैठक में जिला पदाधिकारी और प्रदेश पदाधिकारी को मंडल का प्रभारी नियुक्त कर चुनाव में लगने को कहा गया और तरारी विधानसभा के ठऊअ प्रत्याशी को विशाल पांडेय जी को भारी मतों से विजय बनाना है इस बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष विशुद्ध बिभु जैन के द्वारा किया गया जिसमे प्रदेश अध्यक्ष भारतेंदु मिश्रा भारत मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे मंच संचालन पिरो मंडल अध्यक्ष रोहित वर्मा , राहुल सिंह, कौशल सिंह, डब्लू सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष जिला प्रभारी जितेंद्र सिंह,जिला महामंत्री राहुल सिंह, अंकित सिंह चंद्रवंशी, जिला उपाध्यक्ष अंकित तिवारी,आदि सिंह आदि, राकेश सिंह, मुकेश कुशवाहा, सरवन राय, रवि केशरी, जिला मंत्री आशुतोश मिश्रा, कुणाल सिंह, जिला प्रवक्ता अंकित प्रियदर्शी, सोशल मीडिया संयोजक प्रतीक चंद्रवंशी, बैठक के बाद युवा मोर्चा के टीम के द्वारा ठऊअ प्रत्याशी सुशील पांडेय के साथ सिकार्ट मंडल के देव पंचायत में जनसंपर्क अभियान चलाया गयाऔर बहुत से कार्यकर्ता उपस्थित है जिसकी जानकारी मीडिया प्रभारी अरिहंत विजय जैन ने दी।

मद्य निषेध व एनसीओआरडी से संबंधित समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई

प्रातः किरण संवाददात

सासाराम (रोहतास) : रोहतास जिला मुख्यालय सासाराम स्थित समाहरणालय की सभागार में वृहस्पतिवार को जिलाधिकारी उदिता सिंह की अध्यक्षता में मद्य निषेध व एनसीओआरडी से संबंधित समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई।समीक्षात्मक बैठक में डीपीएम जीविका को निर्देशित किया गया की ताडी व शराब से जुडे व्यक्तियों को अधिक से अधिक सतत जिवकोपार्जन से जोड़े। पुलिस पदाधिकारी व मद्य निषेध पदाधिकारी को निदेशित किया गया कि छापामारी के संख्या बढायें व जहाँ कही भी कच्चे स्प्रिट व नकली शराब पाये जाते है वहाँ शक्ति से कार्रवाई की जाय ताकि किसी भी प्रकार की जहरीली शराब काण्ड नहीं हो सके। वाहन के अधीहरण व निलामी में तेजी लाने का भी निदेश दिया गया साथ ही स्प्रिट वाले केशो में सजा दिलाने का निदेश विशेष लोक अभियोजक को दिया गया। इसके साथ एनसीओआरडी की बैठक की गई। जिसमें निदेश दिया गया की एनडीपीए एक्ट के तहत गांजा अफीम व अन्य मादक पदार्थ अधीक मात्रा में पकडे गये है जिसका पिछला और अगला लिंकेज की जानकारी प्राप्त कर कार्रवाई करना सुनिश्चित करें। साथ ही कृषी पदाधिकारी, पंचायती राज पदाधिकारी, वनप्रमंडल पदाधिकरी, सिविल सर्जन, शिक्षा पदाधिकारी, जिला प्रोग्राम पदाधिकारी (आईसीडीएस) रोहतास को निदेशित किया गया है कि अपनी अधिनस्तो के साथ बैठक कर जनजागरूकता फैलाये जाने का दिशा निर्देश दे। साथ ही सभी औषधी निरीक्षक को निदेशित किया गया है कि दवा दुकानों का निरीक्षण करना सुनिश्चित करें। इस बैठक में पुलिस अधीक्षक रौशन कुमार,अपर समाहर्त्तासह अपर जिला दण्डाधिकारी चंद्रशेखर सिंह, सभी अनुमंडल पदाधिकारी व सहायक अयुक्त मद्य निषेध आदि मौजूद थे।

डीएम ने मद्य निषेध एवं एनसीओआरडी से संबंधित समीक्षात्मक बैठक आयोजित की

सासाराम (रोहतास) : जिलाधिकारी रोहतास उदिता सिंह ने मद्य निषेध एवं एनसीओआरडी की समीक्षा बैठक की। बैठक में डीपीएम जीविका को निदेशित किया गया की ताडी एवंशराब से जुडे व्यक्तियों को अधिक से अधिक सतत जिवकोपार्जन से जोड़े।

पुलिस पदाधिकारी एवं मद्य निषेध पदाधिकारी को निदेशित किया गया कि छापामारी के संख्या बढायें एवं जहाँ कही भी कच्चे स्प्रिट एवं नकली शराब पाये जाते है वहाँ सख्ती से कार्रवाई की जाय। ताकि किसी भी प्रकार की जहरीली शराब काण्ड नहीं हो सके।

वाहन के अधीहरण एवं निलामी में तेजी लाने का भी निदेश दिया गया। साथ ही स्प्रिट वाले केशो में सजा दिलाने का निदेश विशेष लोक अभियोजक को दिया गया। इसके साथ हीं एनसीओआरडी की बैठक की गई।

काराकाट नप ईओ ने किया छठ घाट का निरीक्षण

प्रातः किरण संवाददात

काराकाट (रोहतास) : काराकाट नगर पंचायत काराकाट में बुधवार को छह छठ घाटों का निरीक्षण नगर इओ सीमाब मतीन के नेतृत्व में किया गया । नगर पंचायत के मुख्य पार्षद प्रतिनिधि मुन्ना भारती, उपमुख्य पार्षद रवीश रंजन के साथ बारह वार्ड पार्षदों के साथ छठ घाटों का निरीक्षण किया गया ।ईओ ने बताया कि नगर पंचायत में छह छठ घाट है । सबसे बड़ा छठ घाट गोड़ारी में सकला रजवाहा के तट पर है ।गोड़ारी पुल के उत्तर व दक्षिण में करीब दो किमी तक छठ व्रती पूजा पाठ करते है । बताया कि तेनुआ में नया छठ घाट बना है इसके साथ करूप, चिल्हा, बाद, नाद में छठ घाट है ।नगर स्वच्छ्ता पदाधिकारी पंकज कुमार ने बताया कि नगर के सभी छठ घाटों पर साफ सफाई , रौशनी, गोताखोर, सुरक्षा व्यवस्था , मेडिकल टीम , बैरिकेटिंग की सुविधा, की व्यवस्था की जाएगी । उपचेयरमैन रविश रंजन ने बताया कि छठ व्रतियों को किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो इसके लिए हर प्रकार की सुविधा मुहैया कराया जाएगा । नगर के छह छठ घाटों पर पहुंच निरीक्षण के साथ कई दिशा निर्देश दिया गया । जेसीबी से सतह समतल करने, सभी घाटों से गाद हटाने के साथ दीपावली के पूर्व निर्देशित किया गया है। महिलाओं के लिए विशेष रूप से सुरक्षा व कपड़ा बदलने के लिए चेंजिंग रूम बनाया जायेगा । मौके पर वार्ड पार्षद संतोष तिवारी , विनोद कुमार, पिंटू कुमार, विपिन कुमार , संजय राम, वार्ड पार्षद प्रतिनिधि संतोष यादव, विनेश कांत तिवारी, अजय कुमार सिंह, जितेंद्र कुमार सिंह सहित नगर के कई सामाजिक कार्यकर्ता थे ।

उद्योग विभाग के महाप्रबंधक ने उद्योग विभाग की योजनाओं के बारे में दी विस्तृत जानकारी

स्थान । रोहतास (बिहार)। केंद्र और बिहार सरकार द्वारा उद्योग विभाग के माध्यम से चलाई जा रही विभिन्न तरह की योजनाओं की जानकारी रोहतास जिला मुख्यालय सासाराम में उद्योग विभाग के महाप्रबंधक ने विस्तृत जानकारी दी। एवं जिले में अधिक से अधिक लाभुकों को इन सभी योजनाओं का लाभ लेने की अपील भी की। उन्होंने बताया कि बिहार में मुख्यमंत्री उद्यमी योजना एवं बिहार लघु उद्यमी योजना सरकार द्वारा चलाई जा रही है जिसमें मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत 10 लाख रुपए तक का ऋण लाभुकों को दिया जाता है जिसमें 50% सरकार द्वारा सब्सिडी दी जाती है एवं शेष बचे 50% राशि को 84 किस्तों में बिना किसी ब्याज के लौटना पड़ता है। इसमें युवा उद्यमी योजना के अंतर्गत आने वाले लाभुकों को मात्र 01 प्रतिशत का ब्याज देना होता है। बाकी एससी-एसटी उद्यमी योजना, महिला उद्यमी योजना, अल्पसंख्यक उधमी योजना, सहित अन्य योजनाओं के लाभुकों को बिना किसी ब्याज के ही राशि लौटानी पड़ती है। उन्होंने कहा कि उद्योग विभाग के द्वारा इस योजना को ऑनलाइन लॉटरी के माध्यम से लक्की ड्रॉ किया जाता है जिसमें पूरी पारदर्शिता बरती जाती है। वही बिहार लघु उद्यमी योजना के अंतर्गत लाभुकों को 2 लाख का ऋण दिया जाता है जिसे वापस नहीं करना पड़ता है। इसलिए रोहतास जिले के युवाओं महिलाओं से आग्रह है कि रोजगार की ओर बढ़ते हुए उद्योग विभाग द्वारा चलाई जा रही इन सभी योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ ले और अपने और अपने परिवार को रोजगार के माध्यम से आर्थिक रूप से मजबूत बनाये।

दीपावली एवं छठ पर यात्रियों की सुविधा के लिए चलेंगी और 17 जोड़ी ट्रेनें

प्रातः किरण संवाददाता

हाजीपुर । दीपावली एवं छठ महापर्व में यात्रियों की सुविधा हेतु.पूर्व मध्य रेल क्षेत्राधिकार से खुलने/पहुंचने अथवा गुजरने वाली लगभग 142 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । इसी क्रम में इन स्पेशल ट्रेनों के अलावा अतिरिक्त 17 जोड़ी एवं एक वन-वे पूजा स्पेशल ट्रेन का परिचालन निम्नानुसार किया जाएगा ।

1. गाड़ी संख्या 04608 जम्मूतवी-हावड़ा पूजा स्पेशल ट्रेन जम्मूतवी से 30.10.2024 एवं 04.11.2024 को 20.20 बजे प्रस्थान कर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 13.20 बजे हावड़ा पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 04607 हावड़ा-जम्मूतवी पूजा स्पेशल 01.11.2024 एवं 06.11.2024 को हावड़ा से 23.45 खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 15.20 बजे जम्मूतवी पहुंचेगी । इस ट्रेन में वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के 07, वातानुकूलित तृतीय इकोनॉमी श्रेणी के 08, वातानुकूलित द्वितीय तथा प्रथम श्रेणी के क्रमशः एक-एक कोच होंगे । इस ट्रेन का परिचालन धनबाद-कोडरमा-गया-पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन-लखनऊ के रास्ते किया जाएगा ।2.गाड़ी संख्या 04680 श्रीमाता वैष्णो देवी कटरा-कामाख्या पूजा स्पेशल ट्रेन श्रीमाता वैष्णो देवी कटरा से 28.10.2024 एवं 02.11.2024 को 18.40 बजे प्रस्थान कर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 21.00 बजे कामाख्या पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 04679 कामाख्या-श्रीमाता वैष्णो देवी कटरा पूजा स्पेशल 31.10.2024 एवं 05.11.2024 को कामाख्या से 06.00 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 06.20 बजे श्रीमाता वैष्णो देवी कटरा पहुंचेगी । इस ट्रेन में वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के 13, वातानुकूलित तृतीय इकोनॉमी श्रेणी के 02, वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी के 02 तथा वातानुकूलित प्रथम श्रेणी के 01 कोच होंगे । इस ट्रेन का परिचालन न्यू जलपाईगुड़ी-बरौनी जंक्शन-हाजीपुर (वाया शाहपुर पटोरी)-छपरा के रास्ते किया जाएगा ।

3.गाड़ी संख्या 04662 अमृतसर-सहरसा पूजा स्पेशल ट्रेन अमृतसर से 29.10.2024 एवं 03.11.2024 को 20.10 बजे प्रस्थान कर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 05.00 बजे सहरसा पहुंचेगी ।वापसी में गाड़ी संख्या 04661 सहरसा-अमृतसर पूजा स्पेशल 31.10.2024 एवं 05.11.2024 को सहरसा से 10.00 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 06.20 बजे अमृतसर पहुंचेगी । इस ट्रेन में शयनयान श्रेणी के 04, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के 01, साधारण श्रेणी के 13 कोच होंगे ।इस ट्रेन का परिचालन हाजीपुर-मुजफ्फरपुर-छपरा के रास्ते किया जाएगा ।

4.गाड़ी संख्या 04520 अंबाला-दरभंगा पूजा स्पेशल ट्रेन अंबाला से 25.10.2024 को 19.00 बजे प्रस्थान कर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 19.00 बजे दरभंगा पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 04519 दरभंगा-अमृतसर पूजा स्पेशल 26.10.2024 को दरभंगा से 21.30 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 06.30 बजे अमृतसर पहुंचेगी ।

5.गाड़ी संख्या 06055 कोयम्बटूर-बरौनी स्पेशल कोयम्बटूर से 26.10.2024 से 16.11.2024 तक प्रत्येक शनिवार को 11.50 बजे खुलकर सोमवार को 14.30 बजे बरौनी पहुंचेगी । वापसी में 06056 बरौनी-कोयम्बटूर स्पेशल 29.10.2024 से 19.11.2024 तक प्रत्येक मंगलवार को 23.45 बजे खुलकर शुक्रवार को 03.45 बजे कोयम्बटूर पहुंचेगी ।

6.गाड़ी संख्या 09461 अहमदाबाद-दानापुर स्पेशल अहमदाबाद से 26.10.2024 से 16.11.2024 तक प्रत्येक शनिवार को 08.25 बजे खुलकर रविवार को 16.50 बजे दानापुर पहुंचेगी । वापसी में 09462 दानापुर-अहमदाबाद स्पेशल 27.10.2024 से 17.11.2024 तक प्रत्येक रविवार को 21.55 बजे खुलकर मंगलवार को 07.10 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी ।7.गाड़ी संख्या 09011 उधना-गया स्पेशल उधना से 25.10.2024 को 22.00 बजे खुलकर दूसरे दिन 07.00 बजे गया पहुंचेगी । वापसी में 09012 गया-वडोदरा स्पेशल 27.10.2024 को 10.00 बजे खुलकर अगले दिन 14.00 बजे वडोदरा पहुंचेगी ।

8.गाड़ी संख्या 09115 वडोदरा-गया स्पेशल वडोदरा से 29.10.2024 को 00.45 बजे खुलकर दूसरे दिन 07.00 बजे गया पहुंचेगी । वापसी में 09116 गया-वडोदरा स्पेशल 30.10.2024 को 10.00 बजे खुलकर दूसरे दिन 14.00 बजे वडोदरा पहुंचेगी ।

9.गाड़ी संख्या 09467 अहमदाबाद-जयनगर स्पेशल अहमदाबाद से 25.10.2024 को 16.35 बजे खुलकर दूसरे दिन 07.30 बजे जयनगर पहुंचेगी ।

डीएम ने छठ पर्व को लेकर छठ घाटों का किया निरीक्षण

■ पदाधिकारियों को दिए कई दिशा निर्देश

प्रातः किरण संवाददात

अरवले छठ पर्व को लेकर जिला पदाधिकारी कुमार गौरव के द्वारा जिले के मोथा सूर्य मंदिर, जनकपुर धाम, अहियापुर एवं अन्य छठ घाटों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिला पदाधिकारी द्वारा कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद अरवल को घाट पर वैरिकेडिंग, पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था, महिला को वस्त्र बदलने हेतु अस्थाई कमरा, घाट पर साफ सफाई की व्यवस्था, गोताखोर की प्रतिनियुक्ति एवं मेडिकल टीम की समुचित व्यवस्था कराने का निदेश दिया गया। इसके साथ ही जिला पदाधिकारी द्वारा संबंधित पदाधिकारी को निदेशित किया गया कि छठ पूजा में महिलाओं की सुरक्षा पूर्ण जिम्मेवारी के साथ की जाय। घाट पर प्रशासनिक मंच अवश्य होनी चाहिए, जिससे कि ससमय किसी भी तरह की अव्यवस्था पर काबू पाया जा सके। प्रशासनिक मंच पर मेडिकल टीम एवं एस डी आर एफ की टीम मौजूद रहेगी। छठ घाट पर कोई अनहोनी न हो इसका भी ध्यान रखेंगे। मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी , अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, विशेष कार्य पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी जिला आपदा प्रबंधन के साथ अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

साइबर अपराधी ने खाते से उड़ाए हजारों रुपये, जांच में जुटी पुलिस

प्रातः किरण संवाददाता

शेरघाटी।शहर के गोला बाजार निवासी राजा कुमार एवं मिश्रा पुस्तक पुस्तक विक्रेता से 50 हजार धोखाधड़ी कर खाता से पैसा उड़ा लिया। पीड़ित ने कहा कि जब मैं अपने दुकान पर था तो बुधवार को एक लड़का आया और बोला कि हमें 25 हजार नगद की जरूरत है। मैं आपके खाता में दे देता हूं। मुझे नगद दे दीजिए। मैं उसे नगद दे दिया। उसने मेरे नम्बर पर पैसा डाल भी दिया। लेकिन आधे घंटे में मैसेज आया कि आपके खाते से 18 हजार 575 रुपए डेबिट किया गया और आप साइबर ठगी के शिकार हो गए हैं। इसी प्रकार मिश्रा बुक सेंटर से भी 25 हजार की ठगी किया। थानाध्यक्ष अजीत कुमार ने कहा कि पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

अरवल पुलिस ने समकालीन अभियान के तहत 15 लोगों को किया गिरफ्तार

प्रातः किरण संवाददात

अरवल। पुलिस की बड़ी कार्रवाई पिछले 24 घंटे में श्रृंठइ के अनुसार गॉव चयनित कर विशेष समकालीन अभियान चलाकर कुल 15 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया।पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र कुमार भील के निदेर्शानुसार बुधवार को श्रृंठइ के अनुसार गाँव चयनित कर विशेष समकालीन अभियान चलाकर वांछित अभियुक्तों को गिरफ्तार करने का निर्देश दिया गया। उक्त निर्देश के आलोक में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी कृति कमल के नेतृत्व में प्रहार टीम अरवल एवं सभी थाना अध्यक्ष के द्वारा संयुक्त रूप से विशेष रूप से चयनित किये गाँव में जाकर छापेमारी अभियान चलाकर कुल15 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है।अरवल थाना से 14 जिसमें 07 वारंटी एवं 07 मद्यनिषेध के मामले में गिरफ्तार किया गया है, इसके अलावे मानिकपुर थाना से मद्यनिषेध के मामले में एक लोगों को गिरफ्तार किया गयां साथ ही वाहन जांच के दौरान 1000 रुपये का वाहन फाईन वसूला गया है एवं मद्यनिषेध के तहत 30 लीटर देशी शराब एंव 2700 लीटर जावा महुआ विनष्ट किया गया है तथा एक स्कॉपीयों जब्त किया गया है। इस छापेमारी अभियान में सदर थाना अध्यक्ष मोहम्मद अली साबरी, सब इंस्पेक्टर विकास कुमार के अलावे अलग-अलग थाना के पुलिस पदाधिकारी के साथ पुलिसकर्मी मौजूद थे

पैक्स मतदाता सूची में मृत घोषित व्यक्ति पहुंचा प्रखंड कार्यालय
पैक्स अध्यक्ष की मनमानी,अधिकारी भी नही ली शुद्ध

■ मृत्यु घोषित की चर्चा पूरे पंचायत में आग की तरफ फैल गई

प्रातः किरण संवाददाता

करपी । प्राथमिक कृषि साख सहयोग समिति जिसे हम पैक्स के नाम से भी जानते हैं । पूरे बिहार में पैक्स चुनाव की सरगर्मी देखी जा रही है। पैक्स चुनाव में मतदात सूची में गड़बड़ी का आरोप अध्यक्ष पर जगह जगह पर देखा जा रहा है ! बीते दिन करपी प्रखंड के केयाल पंचायत के कई पैक्स मतदाता जिनको केयाल पैक्स अध्यक्ष के द्वारा मृत घोषित कर दिया गया था वे सभी मतदाता प्रखंड विकास पदाधिकारी करपी के समक्ष उपस्थित होकर अपने जीवित होने का प्रमाण दिया ! केयाल पंचायत के कुबरी ग्राम निवासी विनोद शर्मा एवं विजय शर्मा सुखी बिगहा निवासी गीता देवी पति स्व गोरख राम और बांसटाड़ का निवासी मनजीत सिंह के द्वारा करपी प्रखंड पहुंचकर इस विषय पर प्रखंड विकास पदाधिकारी से मिलकर अपनी बातों को रखा गया।उन तमाम मतदाताओं की बातों को सुनने के बाद प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा लिखित आवेदन लेने के उपरांत उन सभी आवेदकों का फोटोग्राफी करवाई गई और यह आश्वासन दिया कि इस विषय पर न्याय पूर्वक कार्रवाई की जाएगी।

चारों व्यक्तियों को मृत्यु घोषित किए जाने की चर्चा पूरे पंचायत में आग की तरफ फैल गई और मतदाताओं में पैक्स अध्यक्ष के प्रति काफी आक्रोश देखा गया। लोगों का कहना था कि पैक्स अध्यक्ष अपने विरोधियों को किसी न किसी रूप में कमजोर करना चाहते हैं और इसीलिए जीवित व्यक्ति को मृतक की श्रेणी में डालने की साजिश की गई है । लोगों ने कहा कि एक तरफ जहां पैक्स मतदाता बनाने में अध्यक्ष के द्वारा आनाकानी की जाती है वही दूसरी ओर जीवित व्यक्ति को भी जान बूझकर मृत घोषित कर दिया जाता है। ऐसी स्थिति में सवाल यह भी उठता है कि प्रखंड से लेकर जिला तक बैठे पदाधिकारी जमीनी स्तर पर हो रहे धांधली से अनभिज्ञ है या वे पैक्स अध्यक्ष के द्वारा जारी किए गए मतदात सूची को ही सही मानकर उसे प्रकाशित करने की अनुमति दे देते है। ऐसे मामलों में संबंधित पदाधिकारी को त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी पैक्स मतदाता सूची पर नजर रखनी होगी !

हाजीपुर, पाटलिपुत्र के रास्ते चलायी जा रही मुजफ्फरपुर-पुणे स्पेशल ट्रेन का परिचालन अब 30 दिसंबर तक

प्रातः किरण संवाददात

हाजीपुर। दीपावली एवं छठ पूजा में यात्रियों के सुविधाजनक आवागम के लिए रेलवे द्वारा कई पूजा स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । साथ कुछ ऐसी भी ट्रेनें हैं जिनकी परिचालन अवधि में वृद्धि भी की जा रही है । इसी कड़ी में हाजीपुर, पाटलिपुत्र के रास्ते मुजफ्फरपुर और पुणे के मध्य चलायी जा रही 05289/05290 मुजफ्फरपुर-पुणे-मुजफ्फरपुर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के परिचालन में 9-9 फेरे की वृद्धि करते हुए अब इस ट्रेन का परिचालन 30 दिसंबर, 2024 तक किया जाएगा ।

गाड़ी संख्या 05289 मुजफ्फरपुर-पुणे स्पेशल विस्तारित अवधि के साथ 02 नवंबर से 28 दिसंबर तक प्रत्येक शनिवार को मुजफ्फरपुर से 21.15 बजे खुलकर हाजीपुर, पाटलिपुत्र, दानापुर, आरा, बक्सर के रास्ते सोमवार को 05.35 बजे पुणे पहुंचेगी । इसी तरह गाड़ी संख्या 05290 पुणे-मुजफ्फरपुर स्पेशल विस्तारित अवधि के साथ 04.नवंबर से 30 दिसंबर तक प्रत्येक सोमवार को पुणे से 06.30 बजे खुलकर पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर, आरा के रास्ते मंगलवार को 15.15 बजे मुजफ्फरपुर पहुंचेगी ।

यह स्पेशल ट्रेन मुजफ्फरपुर और पुणे के बीच हाजीपुर, पाटलिपुत्र, दानापुर, आरा, बक्सर, पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., प्रयागराज छिवकी, सतना, कटनी, जबलपुर, इटारसी, खण्डवा, भुसावल, मनमाड, कोपरगांव, बेलापुर, अहमदनगर, दौण्ड एवं हडपसर स्टेशनों पर रूकती है । इस ट्रेन में द्वितीय वातानुकूलित श्रेणी के 05, तृतीय इकॉनोमी वातानुकूलित श्रेणी के 14 कोच हैं ।

डीएम की उपस्थिति में ऑनलाइन के माध्यम से मुख्यमंत्री द्वारा पंचायत सरकार भवन का शिलान्यास किया

प्रातः किरण संवाददात

अरवले समाहरणालय सभाकक्ष मे जिला पदाधिकारी कुमार गौरव की उपस्थिति में ऑनलाईन के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री, बिहार के कर कमलों द्वारा भवन निर्माण विभाग के अधीन क्रियान्वित कुल-05 पंचायत सरकार भवनों का शिलान्यास किया गया। भवन निर्माण विभाग के अधीन अरवल प्रखण्ड अंतर्गत प्यारेचक एवं खबैनी, करपी प्रखण्ड अंतर्गत ग्राम पंचायत दोर्रा एवं नरगा तथा कलेर प्रखण्ड अंतर्गत ग्राम पंचायत-इस्माईलपुर कोयल एवं जयपुर की आधारशीला माननीय मुख्यमंत्री द्वारा रखी गयी। भवन निर्माण विभाग के अधीन कुल 14 पंचायत सरकार भवनों का निर्माण किया जाना है, जिसमें क्रियान्वित प्रत्येक पंचायत सरकार भवन की लागत लगभग 2.55 करोड़ रुपए है। साथ ही ग्राम पंचायतों द्वारा नव निर्मित कुल-04 पंचायत सरकार भवनों का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री, बिहार द्वारा किया गया।अरवल प्रखण्ड अंतर्गत ग्राम पंचायत सकरी, करपी प्रखण्ड अंतर्गत ग्राम पंचायत मुरारी, सोनभद्र वंशी सूर्यपुर प्रखण्ड अंतर्गत ग्राम पंचायत खटाँगी तथा कलेर प्रखण्ड अंतर्गत ग्राम पंचायत बेलाँव में नव निर्मित पंचायत सरकार भवन का उद्घाटन किया गया। ग्राम पंचायतों द्वारा नव निर्मित प्रत्येक पंचायत सरकार भवन की लागत लगभग 1.14 करोड़ रुपए है। अरवल जिला अन्तर्गत कुल 64 ग्राम पंचायतों में 16 पंचायत सरकार भवनों का निर्माण पूर्ण कर लिया गया है तथा 03 निमार्णाधीन है। शेष 31 पंचायत सरकार भवनों का निर्माण स्थानीय क्षेत्र अभियंत्रण संगठन कार्य प्रमंडल अरवल द्वारा किया जाना है। पंचायती राज विभाग, बिहार पटना द्वारा निर्मित ई-ग्राम कचहरी पोर्टल का भी उद्घाटन किया गया। ऑनलाईन उद्घाटन एवं शिलान्यास कार्यक्रम में उप विकास आयुक्त, अनुमंडल पदाधिकारी, विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला स्तरीय पदाधिकारी के साथ विभिन्न पंचायतों के मुखियागण उपस्थित रहे।

तरारी में बदलाव को लेकर निर्दलीय प्रत्याशी राजेन्द्र पाठक ने किया नामांकन दर्ज

प्रातः किरण संवाददात

आरा। लंबे समय तक पत्रकारिता में रहे राजेंद्र पाठक ने गुरूवार को तरारी विधानसभा से अपने समर्थको के साथ निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में नामांकन किया। नामांकन के बाद पाठक ने बताया कि तरारी लंबे समय से दुतरफा राजनीतिक लाचारी का क्षेत्र बन चुका है और वे इस दुतरफा लाचारी हटाने और तरारी में नयापन लाने को लेकर चुनाव में प्रत्याशी बनना तय किया है। उन्होंने एनडीए को मोहजाल और महागठबंधन को महाजाल बताया और तरारी के लोगों को अगड़ा पिछड़ा की राजनीतिक सोच से ऊपर उठकर मतदान करने की अपील की।वहीं उन्होंने कहा कि अपने बच्चों के उच्च शिक्षा और रोजगार के लिए तरारी विधानसभा की जनता वोट दें। तरारी में परिवर्तन और बदलाव के लिए एक विकल्प के रूप में आपको अपना प्रत्याशी मिला है।इस मौके पर अजीत कुमार मिश्र, श्रीभगवान पाण्डेय, विकास कुमार मिश्र, सहित सैंकडो समर्थको ने उन्हे फूलमाला पहनाकर जीत की अग्रिम बधाई शुभकामनायें दी।

एक्सिस बैंक ने डिजिटल भुगतान में बदलाव लाने के लिए की साझेदारी

प्रातः किरण संवाददात

पटना। निजी क्षेत्र के सबसे बड़े बैंकों में से एक एक्सिस बैंक ने डिजिटल भुगतान परिदृश्य में क्रांति लाने के लिए पीओएस एग्रीगेशन के लिए यूएई भुगतान समाधानों में अग्रणी कंपनी अलायंस नेटवर्क इंडिया के साथ साझेदारी की है। यह गठजोड़ बैंक की व्यापक पहुंच के साथ-साथ आसान लेन-देन से जुड़ी विशेषज्ञता और अलायंस नेटवर्क की नवोन्मेषी टेक्नोलॉजी को एक साथ लाता है ताकि मर्चेंट के लिए व्यवसाय विकास को बढ़ावा देने वाले उन्नत और अनुकूलित समाधान प्रदान किए जा सकें। इस गठजोड़ पर आयोजित हस्ताक्षर कार्यक्रम में अलायंस नेटवर्क ने एक्सिस बैंक के साथ अपनी साझेदारी के माध्यम से भारतीय बाजार में अपने रणनीतिक विस्तार की घोषणा की। एक्सिस बैंक के प्रेसिडेंट व हेड-काड्र्स एवं पेमेंट्स, संजीव मोघे ने कहा कि हम मर्चेंट समुदाय के लिए व्यापक डिजिटल समाधानों पर लगातार काम कर रहे हैं, ताकि उन्हें तेज और अधिक सुरक्षित भुगतान परितंत्र को प्राथमिकता देते हुए अत्याधुनिक भुगतान समाधान प्रदान किए जा सकें। हमारा मानना है कि यह साझेदारी न केवल मर्चेंट के लिए भुगतान प्रसंस्करण क्षमता को बढ़ाएगी, बल्कि भारत में डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान करेगी।

एमटीबीडी ने अत्याधुनिक डीलरशिप का किया उद्घाटन

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। महिंद्रा के ट्रक और बस डिवीजन (एमटीबीडी) ने कोलकाता में अत्याधुनिक डीलरशिप का उद्घाटन किया है, जिसमें 14 सर्विस बे जोड़े गए हैं, जो प्रतिदिन 28 से अधिक वाहनों की सर्विस कर सकते हैं, साथ ही ड्राइवर लॉजिंग, 24 घंटे ब्रेकडाउन सहायता और एडब्लू उपलब्धता भी प्रदान करते हैं।

विनोद सहाय, अध्यक्ष और मुख्य खरीद अधिकारी- एएफएस, अध्यक्ष-एयरोस्पेस और रक्षा क्षेत्र, अध्यक्ष - एमटीबीडी और सीई, समूह कार्यकारी बोर्ड के सदस्य ने कहा कि हमें भारतीय सीवी बाजार में एमटीबीडी की मजबूत उपस्थिति पर गर्व है, जिसने विभिन्न क्षेत्रों में नंबर 3 स्थान हासिल किया है। नई डीलरशिप और ब्लेजो एक्स, फुरिओ, ऑप्टिमो, जयो आईएलसीवी ट्रकों की रेंज और क्रूज़ियो बसों की रेंज, जो कि बेस्ट-इन-क्लास माइलेज गारंटी और डबल सर्विस गारंटी से लैस है। भागीदारों, ग्राहकों और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं, जो बाजार की स्थिति को और मजबूत करते हैं। महिंद्रा ट्रक और बस ने रामकृष्ण मिशन संस्थान के साथ साझेदारी में बेलूर मठ में एक क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र चलाता है, जिसने पिछले 6 वर्षों में 1,100 से अधिक तकनीशियनों को प्रशिक्षित किया है।

अतुल्या आर्ट्स के कलाकारों द्वारा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से स्वच्छता के प्रति लोगों को किया जागरूक

प्रातः किरण संवाददाता

स्वच्छता ही सर्वोपरि कार्यक्रम के तहत गुरुवार 24.10.2024 को पुनाईचक स्थित बालक/कन्या मध्य विद्यालय में नुक्कड़ नाटक का आयोजन कर बच्चों को जागरूक किया गया। यह नुक्कड़ नाटक अतुल्या आर्ट्स पटना के कलाकारों द्वारा किया गया। नाटक के माध्यम से स्कूल के छात्र-छात्राओं को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। नुक्कड़ नाटक प्रस्तुति के उपरांत विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री राज किशोर सर ने कहा कि हमें अपने आसपास हमेशा स्वच्छता रखनी चाहिए कूड़ा करकट नगर पालिका में निर्धारित जगहों पर ही फेंकना चाहिए, ताकि सफाई कर्मचारी को कूड़ा आदि उठाने में कोई परेशानी न हो।

इस नाटक को संस्था की सचिव लाडली कुमारी द्वारा तैयार करवाया गया । कार्यक्रम में सोनी कुमारी , हेमा , प्रद्युम्न , वीर कश्यप , अमन आदर्श , प्रिंस राज , दीपक कुमार सहित शिक्षक विनोद कुमार और नीरज कुमार , बच्चें व अभिभावक मौजूद रहे।

बेलागंज राजद प्रत्याशी ने श्री कृष्ण का लिया आशिर्वाद फिर किया नामांकन

गया।बेलागंज से राजद प्रत्याशी डॉ विश्वनाथ यादव ने सबसे पहले भगवान कृष्ण के दर्शन जाकर गया के इस्कान मंदिर में जाकर लिए वहा के पुजारी ने उनको आशिर्वाद भी दिए इसके बाद टोटो से नामांकन करने पहुंचे। उन्होंने कहा कि हम विकास के मुद्दे पर चुनाव मैदान में हैं।सभी बेला के हर लोग एवं समाज का समर्थन उन्हें प्राप्त है। आगे कहा कि उनके पिता बेलागंज के पूर्व विधायक सुरेंद्र यादव ने 30 वर्षों से बेलागंज क्षेत्र को संजो कर रखा है।आज उनके आदर्श और कार्यों को लेकर क्षेत्र में हैं।चुनौती इसलिए नहीं है कि क्षेत्र की जनता का आशीर्वाद हमारे साथ है।डॉ विश्वनाथ यादव ने पूछे जाने पर की उनका किस प्रत्याशी से चुनावी क्षेत्र में संघर्ष होगा इसपर उन्होंने कहा कि बेलागंज में रहने वाले सभी जाति धर्म के लोगों का समर्थन हासिल है।बेलागंज मेरी बगिया है, अपनी बगिया में अपना आम, अपना अमरूद, अपना गुलाब, गेंदा फूल लगाया है. लेग मेरी बगिया से आम, अमरूद फूल चुराने आ रहे हैं. हम तो अपनी बगिया की सुरक्षा के लिए खड़े हैं. हम विकास के मुद्दे पर चुनाव मैदान में हैं.- डॉ विश्वनाथ यादव, राजद प्रत्याशी, बेलागंज आदि है।

केंद्रीय मंत्री के साथ दीपा मांझी ने इमामगंज से किया नामांकन

प्रातः किरण संवाददाता

गया।गया सांसद सह केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी की बहू सह हम पार्टी की प्रत्याशी दीपा मांझी ने जिले के इमामगंज विधानसभा सीट से नामांकन किया है ।दीपा मांझी अपने समर्थकों के साथ शहर के डीआरडीए कार्यालय पहुंचीं, जिसके बाद उन्होंने पुरी कागजी खानापूर्ति करने के बाद नामांकन पर्चा भरा है।

नामांकन का पर्चा भरने के बाद बाहर निकलते ही समर्थकों ने फूल-माला पहनाकर बधाई दी है । केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी सहित उनके परिवार के कई सदस्य भी मौजूद थे। इस मौके पर दीपा मांझी ने कहा कि यह हमारे लिए सुनहरा अवसर है कि हमें इमामगंज की जनता का सेवा करने का मौका मिलेगा।हमारे ससुर जीतन राम मांझी केंद्रीय मंत्री हैं, ऐसे में उनका जो विभाग है, उससे अगर इमामगंज की जनता को कोई रोजगार मिलता है तो इसके लिए हम वृहद पैमाने पर प्रयास करेंगे। आगे कहा कि इमामगंज की जनता की सेवा के लिए हम सदैव तत्पर हैं। परिवारवाद के सवाल पर मांझी ने कहा कि हमारे माता-पिता भी स्वयंसेवी संस्था चलाते थे। उस समय भी हम जनता की सेवा में रहते थे आगे भी हमसे जितना पड़ेगा, हम सेवा करेंगे। दीपा मांझी ने कहा कि हम जिला पार्षद भी रह चुके हैं। इसके अलावा भी हमने निकाय चुनाव लड़ा है, ऐसे में हमें राजनीतिक अनुभव भी है।हमें उम्मीद है इमामगंज की जनता का आशीर्वाद हमें मिलेगा और हम इमामगंज में विकास का कार्य करेंगे।

बेलागंज से एनडीए जदयू प्रत्याशी मनोरमा देवी ने किया अपना नामांकन

प्रातः किरण संवाददाता

गया, प्रातः किरण । बेलागंज से एनडीए जदयू प्रत्याशी मनोरमा देवी ने बेलागंज विधानसभा सीट के लिए नामांकन किया है.।शहर के डीआरडीए कार्यालय में वह अपने समर्थकों के साथ पहुंची, जहां उन्होंने अपना नामांकन किया है।इस नामांकन पर्चा भरने के बाद बाहर आते ही कार्यकताओं ने फूल-माला पहनाकर उनका जोरदार स्वागत किया गया है उनके समर्थकों द्वारा,मनोरमा देवी ने कहा कि एनडीए प्रत्याशी के रूप में हमने अपना नामांकन बेलागंज विधानसभा सीट से भरा है।बेलागंज की जनता से आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि अगर आपको मान-सम्मान और बेलागंज का विकास करना है तो आप एनडीए को वोट दें. उन्होंने कहा कि बेलागंज की जनता की सेवा करने के लिए हम तैयार हैं और हमें उम्मीद है कि जनता हमें अपना समर्थन देगी. इसके लिए लगातार हम जनता के पास जा रहे हैं और उनसे आशीर्वाद ले रहे हैं. बेलागंज का चारो ओर विकास करना हमारी प्राथमिकता है।

डीएम ने दीपावली एवं छठ पर्व पर अधिकारियों को दिए व्यवस्था दुरूस्त रखने के सख्त निर्देश

प्रातः किरण संवाददाता

गया। जिला पदाधिकारी गया डॉ त्यागराजन एसएम एवं वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती की अध्यक्षता में दीपावली, काली पूजा एवं लोक आस्था के महान पर्व छठ, पैक्स चुनाव, विधानसभा उप चुनाव इत्यादि में प्रशासनिक व्यवस्था, विधि व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, दीपावली एवं छठ पर्व पर अवैध पटाखों के निर्माण, बिक्री एवं इसके उपयोग पर रोक सहित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर बैठक का आयोजन समाहरणालय सभाकक्ष में की गई। जिला पदाधिकारी तथा वरीय पुलिस अधीक्षक ने जिला वासियों को दीपावली एवं छठ पर्व की शुभकामनाएं एवं बधाई दिया है।

बिना लाइसेंस का कहीं भी पटाका का बिक्री या भंडारण नही हो, इसे सुनिश्चित करवाये। जहाँ कही से सूचना प्राप्त होते ही छापेमारी करें और सील करे। शांत क्षेत्र अस्पताल, शैक्षिक संस्थान, न्यायालय, जैविक उद्यान परिषर इत्यादि के 100 मीटर के दायरे में शोर उत्पन्न करने वाले किसी भी प्रकार के पटाखे का प्रयोग पूर्णतः वर्जित है।

जिला पदाधिकारी ने निर्देश दिया कि जिस प्रकार दुर्गा पूजा में व्यवस्था थी, वही व्यवस्था दीपावली एवं छठ में लागू रहेगी। सार्वजनिक स्थलों पर किसी प्रकार का मूर्ति बिना लाइसेंस के नही बैठाए जाएंगे, इसे सभी थाना प्रभारी सुनिश्चित करावे तथा मूर्ति प्रतिमाओं का विसर्जन का रूट लाइन,तिथि और समय सभी आयोजन समिति से थाना प्रभारी प्राप्त करते हुए सूची बनाये, ताकि सभी मूर्तियों के विसर्जन के दौरान नजर रखी जा सके।

जिले के सभी क्षेत्रों में अवैध पटाखों के निर्माण, बिक्री, भंडारण पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाए गए हैं। डीएम ने सभी एसडीएम एवं थाना को निर्देश दिया कि अपने क्षेत्र में अवैध पटाखा निर्माण, भंडारण तथा बिक्री पर सघन छापेमारी अभियान चलावे। इसके साथ ही सभी थानाध्यक्ष अपने-अपने क्षेत्र में कोई भी अवैध पटाखा का भंडारण अथवा बिक्री नहीं हो, इसे सुनिश्चित करवाये।

नगर आयुक्त एवं नगर पंचायत सहित सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी को निर्देश दिया कि अपने क्षेत्र अंतर्गत महत्वपूर्ण घाटों की साफ-सफाई करवाये इसके साथ ही खतरनाक घाटों को चिन्हित करते हुए कोई हताहत या घटना ना हो, इसे देखते हुए आवश्यक कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि घाटों पर बैरिकेडिंग, सीसीटीवी का अधिष्ठापन, चेंजिंग रूम, पब्लिक ऐड्रेस सिस्टम, पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था, एंट्री एवं एग्जिट प्वाइंट की बेहतरीन व्यवस्था, छठ घाटों के जाने हेतु रास्तों में पर्याप्त रोशनी के साथ-साथ रास्ता को समतल बनाने, छठ घाटों के रास्ते तथा घाटों में जर्जर तार, लूज वायर ,लटकी हुई तार ना रहे, ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू रखने सहित अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराने का निर्देश दिए हैं।

गया नगर निगम क्षेत्र आने वाले कुल 26 छठ घाट एव तालाब है, जहां लोक आस्था का महान पर्व छठ पूजा पर अर्घ्य देने जाते हैं।

मंत्रिमंडल ने 6,798 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत की दो परियोजनाओं को दी मंजूरी,पांच वर्षों में कार्य होगा पूरा

प्रातः किरण संवाददात

पतन/ दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने रेल मंत्रालय की 6,798 करोड़ रुपये (लगभग) की कुल अनुमानित लागत वाली दो परियोजनाओं को मंजूरी दी है।मंजूर की गयी दो परियोजनाएं हैं - (क) नरकटियागंज-रक्सौल-सीतामढ़ी-दरभंगा और सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुर खंड का दोहरीकरण, जो 256 किलोमीटर लंबा है और (ख) अमरावती होकर एर्रुपलेम और नम्बुरु के बीच 57 किलोमीटर लंबी नई लाइन का निर्माण। ये दोनों परियोजनाएं 5 वर्षों में पूरी की जायेंगी। इन परियोजनाओं से लगभग 106 लाख मानव दिवसों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होगा।

नरकटियागंज-रक्सौल-सीतामढ़ी-दरभंगा और सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुर खंड के दोहरीकरण से नेपाल, पूर्वोत्तर भारत और सीमावर्ती क्षेत्रों से परिवहन-संपर्क मजबूत होगा और मालगाड़ियों के साथ-साथ यात्री रेलगाड़ियों की आवाजाही में सुविधा होगी, जिसके परिणामस्वरूप, क्षेत्र का सामाजिक-आर्थिक विकास होगा।एर्रुपलेम-अमरावती-नम्बुरु नई रेल लाइन परियोजना आंध्र प्रदेश के एनटीआर विजयवाड़ा और गुंटूर जिलों तथा तेलंगाना के खम्मम जिले से होकर गुजरती है।

3 राज्यों, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और बिहार, के 8 जिलों को शामिल करने वाली ये दो परियोजनाएं, भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में लगभग 313 किलोमीटर तक की वृद्धि करेंगी।

नई लाइन परियोजना 9 नए स्टेशनों के साथ लगभग 168 गांवों और लगभग 12 लाख आबादी को परिवहन-संपर्क सुविधा प्रदान करेगी। मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना दो आकांक्षी जिलों (सीतामढ़ी और मुजफ्फरपुर) में परिवहन-संपर्क सुविधा बढ़ाएगी, जिससे लगभग 388 गांवों और लगभग 9 लाख आबादी को सेवा प्राप्त होगी।

ये कृषि उत्पादों, उर्वरक, कोयला, लौह अयस्क, इस्पात, सीमेंट जैसी वस्तुओं के परिवहन के लिए आवश्यक मार्ग हैं। क्षमता वृद्धि कार्यों के परिणामस्वरूप 31 एमटीपीए (मिलियन टन प्रति वर्ष) की अतिरिक्त माल ढुलाई होगी। रेलवे, परिवहन का पर्यावरण-अनुकूल और ऊर्जा-कुशल साधन है, जो जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने और देश की लॉजिस्टिक्स लागत तथा कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन (168 करोड़ किलोग्राम) को कम करने में मदद करेगा। यह 7 करोड़ पेड़ लगाने के बराबर है।

संक्षिप्त खबरें

पानी आपूर्ति को ले नगर ईओ से की शिकायत

प्रातः किरण संवाददाता

परसा। छठ पूजा के अवसर पर नल का जल आपूर्ति करने को लेकर ग्रामीणों ने ईओ से शिकायत किया है।मामला नगर पंचायत परसा बाजार के वार्ड 14 महम्मदपुर में नल जल बंद होने से नाराज ग्रामीणों ने कार्यपालक पदाधिकारी को आवेदन देकर छठ पूजा के अवसर पर नल का जल आपूर्ति करने का गुहार लगाया है।आवेदन में बताया गया है कि वार्ड 14 के उत्तरी भाग पोखरा के समीप स्थित जल मीनार से नल जल की सप्लाई काफी दिनों से बंद पड़ा है ।पानी सप्लाई को लेकर वार्ड पार्षद तथा मुख्य पार्षद से भी कई बार गुहार लगाया गया लेकिन आज तक सप्लाई नही चालू किया गया।ग्रामीणों ने आवेदन में दो से टीन दिनों में पानी की सप्लाई चालू नही करने पर नगर पंचायत कार्यालय पर धरना प्रदर्शन करने की चेतावनी दिया है।आवेदन पर संजीत कुमार राय,पंकज कुमार,अखिलेश कुमार,इंद्रजीत कुमार,श्रवण कुमार,रंजीत साह,मुन्ना कुमार समेत दर्जनों ग्रामीणों का हस्ताक्षर अंकित है।

मारपीट में प्राथमिकी दर्ज

प्रातः किरण संवाददात

परसा। थाना क्षेत्र के चांदपुरा पंचायत के कुआरी वीर गांव में आपसी विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हुई मारपीट के मामले में दोनों पक्षों से थाना में लिखित आवेदन दिया गया।आवेदन में पथम पक्ष से ज्योति कुमार उर्फ राहुल कुमार ने गुड़िया समेत चार लोगों पर मारपीट करने का आरोप लगाया है।वही दूसरे पक्ष से संजय कुमार राय ने ज्योति कुमार समेत 8 लोगो को पर मारपीट करने का आरोप लगाया है।पुलिस आवेदन के आधार पर जांच करने में जुटी है।पुलिस के अनुसार घटना की छान बिन कर अग्रतर करवाई किया जाएगा।

पैक्स चुनाव सदस्य से सह सदस्य बनाने के मामले में दावा ,आपत्ति को ले बैठक

प्रातः किरण संवाददात

बनियापुर।सिसई पंचायत के पैक्स चुनाव के मतदाताओं को सदस्य से सह सदस्य बनाए जाने के मामले मे सहयक निवार्ची पदाधिकारी के द्वारा दावा, आपत्ति से संबंधित बैठक कर निष्पादन किया गया।जहा सह निवार्ची पदाधिकारी आर एन चौधरी द्वारा सिसई पंचायत के पैक्स चुनाव के मतदाताओं की एक एक बिन्दुओ पर रिपोर्ट तैयार किया।उन्होंने सदस्यों से कहा कि हम आपकी हर बिन्दुओ की जाँच कर निवार्ची पदाधिकारी बनियापुर को सौप देंगे,जिसपर स्वय निर्णय लेंगे।मौके पर संजय कुमार शर्मा विनय कुमार ठाकुर महेश्वर ठाकुर वीरेंद्र सिंह उर्फ बीरु सिंह व्यास राय तारकेश्वर ठाकुर धर्मेंद्र यादव रवि राय आदि शामिल थे।

शिक्षक के एटीएम से जालसाजी कर उड़ाए 80 हजार रुपए ,प्राथमिकी दर्ज

प्रातः किरण संवाददात

नगरा।खैरा बाजार स्थित एसबीआई के एटीएम में एक शिक्षक के धोखे से 80 हजार रुपये की जालसाजी कर ली.पीड़ित शिक्षक महावीर राय जो मढ़ौरा मिडिल स्कूल में पदस्थापित हैं,उन्होंने ने खैरा थाने में इस घटना की रिपोर्ट दर्ज कराई है.उन्होंने दिए हुए आवेदन में कहा है कि खैरा एसबीआई एटीएम से पैसे निकालने गए थे.जैसे ही उन्होंने एटीएम में अपना कार्ड डाला, उसी वक्त उनके फोन पर एक कॉल आ गया.कॉल पर बात करते समय एक अजनबी व्यक्ति, जो उनके पीछे खड़ा था,उसने जल्दी से पिन डालने का दबाव बनाया.इस हड़बड़ी में जब उन्होंने पिन डाला, तो उस व्यक्ति ने चतुराई से उनका कार्ड बदल दिया और वहां से चला गया।

नरमा में नव निर्मित पंचायत सरकार भवन का मुख्यमंत्री ने किया ऑनलाइन उद्घाटन

प्रातः किरण संवाददाता

अलीनगर(दरभंगा)। प्रखंड के नरमा-नवानगर पंचायत के नरमा स्थित नव निर्मित पंचायत सरकार भवन का विधिवत उद्घाटन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जहां पटना से रिमोट द्वारा किया, वहीं स्थानीय मुखिया अनुराधा सिंह ने उल्लासपूर्ण माहौल में फीता काटकर की। इसके साथ ही पंचायत का सभी कार्य अब एक छत के नीचे सुलभता से हो सकेगी।

बतादें कि वर्ष 2021 ई. में 1.31 करोड़ की लागत से सरकार भवन का निर्माण कार्य मुखिया श्रीमती सिंह के नेतृत्व में शुरू हुआ था। बहुमंजिला एवं विभिन्न सुविधाओं से लैस आकर्षक भवन में एक छत के नीचे ही अब मुखिया और सरपंच का कार्यालय संचालित होगा। इसके अलावा पंचायत समिति सदस्य, पंचायत सेवक, ग्राम कचहरी सेवक और आरटीपीएस कार्यालय अलग-अलग कमरों में एक जगह ही संचालित होने से पंचायत के लोगों को अब भटकना नहीं होगा। भवन के साथ सरकारी कर्मियों के रहने के लिए भी अलग से कमरों का निर्माण संपन्न हुआ है।

उदघाटन के मौके पर मुखिया श्रीमती सिंहा ने कहा कि बहुमंजिला एवं विभिन्न सुविधाएं युक्त भवन का निर्माण कार्य संपन्न होने से अब पंचायत के लोगों को कई तरह के कार्यों के लिए जगह-जगह भटकने से निजात मिलेगी। एक छत के नीचे ही सही कार्यालय होना पंचायत के लिए सौभाग्य की बातें हैं। सुविधाओं युक्त एवं सुन्दर पंचायत का उसका सपना कदम दर कदम प्रगति पर बढ़ रही है। वहीं भाजपा नेता संजय सिंह उर्फ पप्पू सिंह ने कहा कि सरकार भवन का निर्माण होना उनके पंचायत वासियों के लिए सौभाग्यपूर्ण बातें हैं। सरपंच श्याम राम ने भी काफी प्रसन्नता व्यक्त किया। मौके पर पंसस पुरुषोत्तम सिंह, पंचायत सचिव अभिषेक पांडे, उप मुखिया प्रमोद झा, उप सरपंच मिथिलेश सिंह, भाजपा मंडल संयोजक लाल मुखिया, पिट्ठू सिंह, संतोष मंडल, दिनेश सिंह, वार्ड सदस्य तिलिया देवी, उर्मिला देवी सहित दर्जनों लोग मौजूद थे।

डीएम ने अवैध उत्खनन रोकने के लिए सघन छापेमारी के दिए निर्देश

प्रातः किरण संवाददात

गया।अवैध खनन को रोकने के लिए जिला प्रशासन द्वारा लगातार छापेमारी के साथ साथ कठोर कार्रवाई की लगातार की जा रही है। जिला पदाधिकारी गया डॉ॰ त्यागराजन एसएम एवं वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती के संयुक्त निर्देश के आलोक में सभी अनुमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सभी अंचलाधिकारी तथा खनन विभाग के तमाम पदाधिकारियों को स्पष्ट निर्देश प्राप्त है कि अवैध खनन के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करें। अवैध खनन की सूचना यदि कहीं से मिलती है तो संबंधित स्थान पर छापेमारी करने में कोताही ना बरतें।

जिला पदाधिकारी गया डॉ॰ त्यागराजन एसएम एवं वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती के निर्देश के आलोक में गत रात्रि 02 बजे से सुबह 06 बजे तक मुफस्सिल थाना क्षेत्र के मानपुर भदेजी में लगातार छापेमारी अभियान चलाया गया है। इस छापेमारी अभियान में कुल 21 ट्रैक्टर को जब्त किया गया है, सभी ट्रैकर अवैध बालू खनन में लगे थे। इसके अलावा 06 लोगो को गिरफ्तार भी किया गया है। सभी ट्रैक्टर मालिको के विरुद्ध प्रार्थमिकी भी दर्ज की गई है। इस अभियान के तहत 50 लाख से ऊपर राशि का फाइन अधिरोपित की गई है।जिला पदाधिकारी डॉ त्यागराजन एसएम ने कहा की अवैध खनन में संलिप्त वाहनों के जप्त करते हुए खनन तथा परिवहन विभाग के विभिन्न धाराओं को देखते हुए प्राथमिकी दर्ज करते हुए फाइन वसूलने में तनिक भी कोताही न बरतें। इसके साथ ही परिवहन विभाग द्वारा विभिन्न धाराओं अंतर्गत फाइन वसूलने का कार्य किया जा रहा है। आगे भी लागातर औचक छापेमारी अभियान लगातार चलता रहेगा।इस छापेमारी अभियान अनुमण्डल पदाधिकारी सदर, अपर पुलिस अधीक्षक- 01, एसडीपीओ वजीरगंज, जिला खनन पदाधिकारी एव थानाध्यक्ष मुफस्सिल द्वारा संयुक्त रूप से की गई है।

गया कॉलेज के प्रबंधन विभाग में सत्र- 2024 के एमबीए एवं बीबीएम विद्यार्थियों के लिए इंडक्शन मीट का आयोजन

प्रातः किरण संवाददात

गया। गया कॉलेज, गया के प्रबंधन विभाग द्वारा सत्र 2024-25 के टइअ एवं इइट विद्यार्थियों के लिए इंडक्शन मीट का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य ने दीप प्रज्वलित कर किया, जिसका मुख्य उद्देश्य नए विद्यार्थियों को प्रबंधन विभाग और उनके आगामी शैक्षणिक जीवन की रूपरेखा से परिचित कराना था।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता गया कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सतीश सिंह चंद्र ने की, जिन्होंने अपने भाषण में नए विद्यार्थियों का कॉलेज परिवार में स्वागत किया है। उन्होंने कॉलेज के गौरवशाली इतिहास, शैक्षणिक उत्कृष्टता और कॉलेज द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति समर्पण पर प्रकाश डाला गया है।प्रबंधन के विभागाध्यक्ष डॉ. अम्बरीष नारायण ने विभाग की शैक्षणिक गतिविधियों, विभागीय सुविधाओं, पाठ्यक्रम संरचना और विद्यार्थियों को उनके व्यक्तिगत विकास के अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रबंधन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को सीखने और नेतृत्व कौशल विकसित करने पर जोर दिया है। इसके साथ ही, प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने और एक सफल कैरियर बनाने के लिए विद्यार्थियों को अनुशासन और कठोर परिश्रम की आवश्यकताओं पर भी बल दिया है।इस अवसर पर प्रबंधन विभाग के वरिष्ठ शिक्षक डॉ. महेश्वर यादव, डॉ. सुशांत मुखर्जी, डॉ. फारुख हयात, अमृता सिन्हा, अजीत राज, सुजीत पाठक ने भी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार रहने के लिए प्रेरित किया है। सभी शिक्षकों ने विद्यार्थियों को एक उज्जवल भविष्य की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। प्रबंधन विभाग के प्रभा शंकर दयाल, आईटी नोडल अमरजीत कुमार सहित शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण शाहिदा ईमाम, सैयद खान, कामिनी देवी, उमेश आदि थे

राम कथा कलयुग के हर पापों से मनुष्य को मुक्त करती है:शास्त्री

यज्ञ में प्रतिदिन उमड़ रही है श्रद्धालुओं की भीड़

प्रातः किरण संवाददाता

भेल्दी। श्री राम कथा कलयुग के हर पाप और दोषों से मुक्त करने वाली है। राम कथा कामधेनु के समान मनवांछित फल को देने वाली है। कलयुग में श्री राम की कथा मोह, अज्ञान रूपी महिषासुर का वध करने वाली माता दुर्गा के समान है। इसलिए संत कहते हैं सत्संग करो भजन करो ताकि जीवन जीने में कोई कठिनाई न हो। राम की कथा भजन से ज्यादा सुख और कहीं नहीं मिल सकता। उक्त बातें मिथिला धाम से पधारे हुए कथावाचक राजेश शास्त्री अमनौर प्रखंड के सराय बक्स में चल रहे विराट विष्णु महायज्ञ के दौरान कही। वहीं पूर्व मंत्री मुनेश्वर चौधरी ने कहा कि भगवान श्री राम लक्ष्मण और मां जानकी के जीवन से हम सभी को

सीखने के मिलता है कि जीवन में परिवार में और राष्ट्र में मनुष्य का क्या कर्तव्य और दायित्व होता है। यह राम कथा हमें सिखाती है। यज्ञ में प्रतिदिन यज्ञशाला परिक्रमा , मूर्ति पूजन , पंचमुखी हनुमान जी की पूजन और संत श्रीधर बाबा के आशीर्वाद के लिए, प्रवचन , रासलीला में श्रद्धालुओं की भीड़ काफी संख्या में उमड़ रही है । मेला में भी दूर दराज से बच्चे और महिलाओं की भीड़ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। श्रीधर बाबा के शिष्य मुरारी स्वामी ने बताया कि पूज्य गुरुदेव श्रीधर बाबा के कर कमलों द्वारा 97 वाँ महायज्ञ भव्य तरीके से की जा रही है।

नगरा में पागल कुत्ते ने दर्जनों लोगों को काटकर किया घायल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में उपचार

प्रातः किरण संवाददात

नगरा।नगरा प्रखंड के विभिन्न गांवों में एक पागल कुत्ते ने हमला कर दर्जनों लोगों को घायल कर दिया.नगरा बाजार पर सब्जी विक्रेता गुड्डू सिंह, लालू साह, और ग्रामीण मो. इम्तियाज आलम सहित आधा दर्जन लोगों को कुत्ते ने काटकर घायल किया.घटना के बाद सभी घायलों को रामपुर कला स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नगरा में इलाज के लिए ले जाया गया, जहां उन्हें एंटी-रेबीज टीका लगाया गया.इस कुत्ते के हमले से इलाके में दहशत का माहौल बना हुआ है.स्थानीय लोगों का कहना है कि कुत्ता पिछले कुछ दिनों से इलाके में घूम रहा था और अचानक उसने लोगों पर हमला करना शुरू कर दिया. वहीं वार्ड सदस्य चितरंजन कुमार सिंह और अन्य ग्रामीणों ने प्रशासन से आग्रह किया है कि कुत्ते को पकड़ने के लिए तुरंत कदम उठाए जाएं ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके ।

सर्वे के लिए की गयी त्रिसिवाना एवं मुस्तकील की खोज

पानापुर(सारण), प्रातः किरण। सर्वे कार्य के लिए गुरुवार को प्रखंड के महम्मदपुर पंचायत के मुड़वा गांव में त्रिसिवाना (तीनमुहानी) एवं मुस्तकील की खोज की गयी।मौके पर उपस्थित विशेष सर्वेक्षण सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी सर्वेश कुमार ने बताया कि प्रखंड में सर्वे कार्य की शुरूआत थाना नंबर 50 मुड़वा गांव से शुरू की जा रही है।उन्होंने बताया कि सर्वे कार्य मे शामिल कर्मियों द्वारा त्रिसिवाना एवं मुस्तकील की सफलतापूर्वक खोज कर ली गयी है ।सर्वे कार्य मे अब कोई परेशानी नही होगी ।इस मौके पर विशेष सर्वेक्षण कानूनगो चंदन कुमार ,विशेष सर्वेक्षण अमीन अभिषेक राय के अलावे भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार पंडित ,नागेश्वर राम ,हीरालाल साह ,राजेश राम सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

दिघवारा में रेलवे लाइन किनारे अज्ञात शव बरामद

दिघवारा नगर, प्रातः किरण।सोनपुर छपरा रेलमार्ग पर दिघवारा थाना क्षेत्र के नवलटोला गाँव के पास रेलवे लाइन किनारे से गुरुवार को एक अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद किया गया।

थानाध्यक्ष ने बताया कि शव की शिनाख्त नही हो पाई है।प्रथम दृष्टया ट्रेन से गिरकर मौत हो जाने की आशंका जताई जा रही है।पुलिस ने शव को बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेज दिया।

एसोसिएशन ऑफ फिजियोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया व फेडरेशन ऑफ इंडियन फिजियोलॉजिकल सोसाइटी के 10वें सम्मेलन का आयोजन

क्लिनिकल और इंटरवेंशनल फिजियोलॉजी डिवीजन के सहयोग से न्यूरोसर्जरी विभाग द्वारा जल्द ही डीप ब्रेन स्टिमुलेशन किया जाएगा शुरू: निदेशक डॉ. जीके पाल

सम्मेलन में देश और विदेश से 500 से अधिक प्रतिनिधियों ने एम्स पटना में लिया भाग

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। एम्स पटना ने कार्यकारी निदेशक डॉ. गोपाल कृष्ण पाल के संरक्षण और प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में एसोसिएशन ऑफ फिजियोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया (एएसएसओपीआई) के 10वें वार्षिक सम्मेलन और फेडरेशन ऑफ इंडियन फिजियोलॉजिकल सोसाइटी (एफआईपीएस) की 10वीं कांग्रेस का आयोजन किया। 21-26 अक्टूबर, 2024। सम्मेलन में देश-विदेश से 500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बाहुप्रतीक्षित FIPS ASSOPICON 20242024 21 अक्टूबर को शुरू हुआ, जिसमें भारत और विदेशों से फिजियोलॉजी के क्षेत्र के अग्रणी दिमाग एक साथ आए। छह दिनों तक चलने वाले इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में कार्यशालाएं, पोस्टर और मौखिक प्रस्तुतियां, और शारीरिक अनुसंधान में अत्याधुनिक विकास और भारतीय आबादी के लिए नैदानिक अभ्यास में उनके दायरे पर

चर्चाएं शामिल हैं।

पहले तीन दिनों (21-23 अक्टूबर) के लिए, प्रतिभागियों ने समानांतर कार्यशालाओं की एक श्रृंखला में भाग लिया। इन सत्रों में कई विषयों पर चर्चा हुई, जिनमें शामिल हैं:

* इंटरवेंशनल फिजियोलॉजी: डीप ब्रेन स्टिमुलेशन और वेगल नर्व स्टिमुलेशन और बायोफीडबैक
* क्लिनिकल ईईजी: रिकॉर्डिंग और व्याख्या
* क्लासिक (पारंपरिक) स्वायत्त कार्य परीक्षण और एचआरवी
* इलेक्ट्रोन्यूरोमायोग्राफी: मूल्यांकन और रिपोर्टिंग
* इंट्राऑपरेटिव न्यूरोमोनिटोरिंग
* चिकित्सीय पद्धति के रूप में योग
* हृदय स्वास्थ्य मूल्यांकन
* पॉलीसोम्नोग्राफी: रिकॉर्डिंग और व्याख्या
* पुरुष बांझपन: मूल्यांकन और रिपोर्टिंग
* अनुसंधान में पशु प्रयोग की भूमिका
* पबमेड इंडेक्स्ड जर्नल में रिसर्च आर्टिकल कैसे प्रकाशित करें
* अनुदान परियोजना के लिए प्रस्ताव लेखन (एक्स्ट्रामुरल फंडिंग)

इन कार्यशालाओं ने विभिन्न क्षेत्रों के कई प्रतिनिधियों को आकर्षित किया, एक सहयोगात्मक माहौल को बढ़ावा दिया जहां विशेषज्ञों ने ज्ञान का आदान-प्रदान किया और उभरती तकनीकों का पता लगाया। व्यावहारिक सत्रों में प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी और अग्रणी पेशेवरों की भागीदारी ने आधुनिक नैदानिक अभ्यास में इन विषयों की प्रासंगिकता और प्रयोज्यता पर प्रकाश डाला।

24 अक्टूबर, 2024 से, पावर पैक कॉन्फ्रेंस ह्लक्लिनिकल एंड इंटरवेंशनल फिजियोलॉजी: भारतीय परिदृश्य में वर्तमान और भविष्य के दायरेह्व के केंद्रीय विषय के साथ आगे बढ़ी। सम्मेलन नैदानिक सेटिंग्स में शारीरिक विज्ञान के एकीकरण और अनुसंधान और नवाचार के लिए भविष्य के अवसरों पर व्यावहारिक चर्चा का वादा करता है।

सम्मेलन के पहले दिन श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, तिरुवनंतपुरम के निदेशक डॉ. संजय बिहारी द्वारा मुख्य भाषण दिया गया। डॉ. राजेश कटारे, निदेशक, कार्डियोवास्कुलर डिवीजन, ओटागो विश्वविद्यालय, स्कूल ऑफ बायोमेडिकल साइंसेज, न्यूजीलैंड ने स्वास्थ्य और रोग में माइक्रो-आरएनए की भूमिका पर अपनी विशेषज्ञता साझा की। क्षेत्र के प्रसिद्ध विशेषज्ञों के कई और रोमांचक पूर्ण सत्र, संगोष्ठी और प्रस्तुतियाँ आने वाली हैं, जो फिजियोलॉजिस्ट, चिकित्सकों और शोधकताओं को जुड़ने, अपने निष्कर्षों को साझा करने और संभावित सहयोग का पता लगाने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

उद्घाटन भाषण में निदेशक डॉ. जी.के. पाल ने बताया कि फिजियोलॉजी अब अस्पताल उन्मुख रोगी-केंद्रित नैदानिक विषय है। एम्स पटना में, क्लिनिकल और इंटरवेंशनल फिजियोलॉजी डिवीजन के सहयोग से न्यूरोसर्जरी विभाग द्वारा जल्द ही डीप ब्रेन स्टिमुलेशन शुरू किया जाएगा, जो पार्किंसनिज्म, अल्जाइमर रोग, प्रतिरोधी मिर्गी आदि जैसी पुरानी और असाध्य बीमारियों में अत्यधिक फायदेमंद होगा।

हम शेष दिनों में सार्थक चर्चा जारी रखने के लिए तत्पर हैं, क्योंकि हम सामूहिक रूप से रोगियों और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों के लाभ के लिए शारीरिक अनुसंधान और इसके नैदानिक अनुप्रयोगों को आगे बढ़ाने की दिशा में काम करते हैं।

नचाप में पैक्स के तहत कॉमन सर्विस सेंटर का शुभारंभ

प्रातः किरण संवाददात

मांझी सारण मांझी प्रखंड के भजौना-नचाप पंचायत के नचाप गांव स्थित रिद्धि सिद्धि मार्केटिंग कॉम्पलेक्स के कमरा नंबर 7 में पैक्स के तहत कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) का शुभारंभ गुरुवार को मुखिया मनीष कुमार सिंह, पैक्स अध्यक्ष सुजीत कुमार सिंह व पूर्व पैक्स अध्यक्ष परमेश्वर सिंह के द्वारा विधि-विधान से पूजा-अर्चना के बाद संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया।इस अवसर पर सीएससी के प्रबंधक राकेश कुमार सिंह ने इस कॉमन सर्विस सेंटर के द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह की सोच के तहत भजौना-नचाप पंचायत पैक्स का डिजिटलाइजेशन हो चुका है। पैक्स के तहत खुली इस सीएससी में किसानों व ग्रामीण नागरिकों को बैंकिंग, बीमा, आधार नामांकन, स्वास्थ्य सेवाएं, कानूनी सेवाएं, आयुष्मान कार्ड, प्रधानमंत्री कल्याण योजनाएं जैसी सभी तरह की निःशुल्क ऑनलाइन सेवाएं प्रदान की जाएगी। अब क्षेत्र के लोगों को इन कामों के लिए अन्यत्र भटकना नहीं पड़ेगा। जिससे उनका समय व धन दोनों की बचत होगी।

वहीं मुखिया मनीष कुमार सिंह ने भजौना-नचाप पैक्स को आर्थिक रूप से मजबूती प्रदान करने पर बल दिया।

इस अवसर पर मुखिया मनीष कुमार सिंह, पैक्स अध्यक्ष सुजीत कुमार सिंह, पूर्व पैक्स अध्यक्ष परमेश्वर सिंह, मुकेश कुमार सिंह सीएससी के प्रबंधक राकेश कुमार सिंह, ऑपरेटर वसंत कुमार राय, पैक्स के कार्यकारिणी सदस्य किरण देवी, नरेंद्र सिंह, जगलाल राम, दिलजीत यादव, डीलर मदन गोपाल सिंह, शिक्षक संजय कुमार सिंह, कमल कुमार सिंह, प्रमोद तिवारी, गौतम सिंह, संजय तिवारी, परमात्मा तिवारी, संतोष कुमार सिंह, प्रद्युम्न सिंह, निरोज कुमार सिंह, योगेंद्र सिंह, मुनेश्वर सिंह, मुन्ना सिंह, मदन सिंह, श्रीकांत, सुधीर कुमार आदि अन्य लोग मौजूद रहे।

महिला हॉकी की पूर्व कप्तान रानी रामपाल ने संन्यास लिया

254 मैच में 205 गोल किए, टोक्यो ओलिंपिक के बाद से नहीं खेला मैच

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान रानी रामपाल ने गुरुवार को संन्यास की घोषणा कर दी। इसके साथ ही उनका 16 साल का अंत हो गया । 2008 में 14 साल की उम्र में ओलिंपिक क्वालिफायर में डेब्यू करने वाली रानी ने भारत के लिए अपने 254 मैचों में 205 गोल किए। रानी हरियाणा की रहने वाली हैं। रानी ने प्रेस कांफ्रेंस में रिपोर्टर्स से कहा, ''यह एक शानदार यात्रा रही है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं भारत के लिए इतने लंबे समय तक खेलूंगी। मैंने बचपन से बहुत गरीबी देखी है लेकिन मेरा ध्यान हमेशा देश का प्रतिनिधित्व करने पर था।'' रानी ने मात्र 14 साल की उम्र में भारत के लिए डेब्यू किया था। रानी की कप्तानी में टोक्यो ओलिंपिक 2020 में भारतीय महिला हॉकी टीम ने ऐतिहासिक चौथा स्थान हासिल किया, जो टीम की अब तक की सर्वोच्च ओलिंपिक रैंकिंग है। वहीं इसके अलावा उन्होंने कई प्रमुख जीतों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें 2017 महिला एशियाई कप में सिल्वर मेडल और 2018 एशियन गेम्स में सिल्वर मेडल शामिल है।

पिछले साल जूनियर विमेंस टीम का बनाया गया था कोच – रानी रामपाल को एक साल पहले विमेंस टीम का कोच नियुक्त किया गया था। तब से ही माना जा रहा है कि उनकी वापसी मुश्किल है। वहीं हॉकी इंडिया के विमेंस लीग में उन्हें सूरमा क्लब ने बतौर मेंटर और हॉकी कोच चुना है।

कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी हैं रानी

रानी को 2016 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 2020 में उन्हें भारत का सर्वोच्च खेल सम्मान मेजर ध्यानचंद खेल रत्न और चौथा सबसे बड़ा भारतीय राष्ट्रीय सम्मान पद्म श्री मिला। रानी को 2010 महिला हॉकी विश्व कप में टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ युवा खिलाड़ी और 2013 जूनियर वर्ल्ड कप में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट नवाजा गया था।

टोक्यो ओलिंपिक के बाद से टीम से बाहर

टोक्यो ओलिंपिक के बाद से रानी टीम से बाहर चल रही हैं। टोक्यो ओलिंपिक के बाद तत्कालीन कोच श्योर्ड मरीन्ये अपने पद से हट गए थे और उनकी जगह यानेक शॉपमैन ने जिम्मेदारी संभाली थी। ऐसा माना जाता है कि यानेक और रानी के बीच रिश्तों सही नहीं थे। उस दौरान रानी रामपाल चोट से भी जूझ रही थीं। इसी वजह से साल 2022 में गुजरात में हुए राष्ट्रीय खेलों में 6 मुकाबलों में 18 गोल करने के बावजूद उनकी टीम इंडिया में वापसी नहीं हुई।

भारत-न्यूजीलैंड दूसरे टेस्ट में वाशिंगटन सुंदर की स्पिन में फंसा न्यूजीलैंड

● झटके 7 विकेट, अश्विन ने लिए 3 विकेट ● न्यूजीलैंड पहली पारी में 259 रन पर ढेर

पुणे (एजेंसी)। भारतीय गेंदबाज वाशिंगटन सुंदर के 7 विकेट की बदौलत भारत ने पहली पारी में न्यूजीलैंड को 259 रन पर ढेर कर दिया है। न्यूजीलैंड की तरफ से डेवोन कॉनवे (76) और रचिन रविंद्र (65) की अर्धशतकीय पारियों के अलावा मिशेल सेंटनर की 33 रन की पारी प्रभावशाली रही। सुंदर के अलावा भारतीय गेंदबाजों में अश्विन ही थे जिन्होंने 3 विकेट झटके जबकि कोई अन्य गेंदबाज विकेट नहीं ले सका।

न्यूजीलैंड ने तीन मैचों की श्रृंखला के दूसरे टेस्ट में भारत के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। न्यूजीलैंड ने अपनी अंतिम एकादश में एक बदलाव करते हुए चोटिल तेज गेंदबाज मैट हेनरी की जगह बाएं हाथ के स्पिनर मिचेल सेंटरन को शामिल किया है। भारत ने अपनी टीम में तीन बदलाव किए। मोहम्मद सिराज, केएल राहुल और कुलदीप यादव की जगह एकादश में आकाश दीप, वाशिंगटन सुंदर और शुभमन गिल को मौका मिला है। न्यूजीलैंड श्रृंखला में 1-0 से आगे है। न्यूजीलैंड की शुरूआत सधी हुई रही लेकिन अश्विन ने भारत को शुरूआती सफला दिया। पहले तीनों विकेट अश्विन के नाम रहे जिन्होंने पहले कप्तान टॉम लाथम (22 गेंदों पर 15 रन, 2 चौके) को एलबीडब्ल्यू किया और इसके बाद विल यंग (45 गेंदों पर 18 रन, 2 चौके) का विकेट लिया जिसमें उनका साथ विकेटकीपिंग कर रहे ऋषभ पंत ने कैच पकड़ कर दिया। तीसरा विकेट 44वें ओवर में आया जब अश्विन की गेंद पर डेवोन कॉन्वे पंत के हाथों कैच आउट हो गए। कॉन्वे ने 141 गेंदों पर 11 चौकों की मदद से 76 रन बनाए। वाशिंगटन सुंदर ने अश्विन का साथ देते हुए लंच के बाद दो विकेट अपने नाम किए जिसमें पहला विकेट रचिन रवींद्र और दूसरा टॉम ब्लंडेल का था। सुंदर ने दोनों को बोल्ड किया। रचिन 105 गेंदों पर 5 चौकों और एक छक्के की मदद से 65 रन की अर्धशतकीय पारी खेलकर आउट हुए जबकि ब्लंडेल मात्र 3 रन ही बना सके। सुंदर ने टीम का छठा और अपना तीसरा विकेट एलबीडब्ल्यू करके हासिल किया जिसमें उनका निशाना डेरिल मिशेल (18 रन) बने। इसके बाद सुंदर ने चार ओवर में तीन विकेट लिए जिसमें ग्लेन फिलिप्स (9), टिम साउथी (4), एजाज पटेल (5) के विकेट शामिल थे। फिलिप्स को सुंदर ने अश्विन के हाथों कैच आउट करवाया जबकि साउथी और पटेल को बोल्ड किया। आखिरी विकेट भी सुंदर के नाम रहा और उन्होंने मिशेल सेंटनर को 33 रन पर बोल्ड किया।

हेड टू हेड
कुल मैच – 63
भारत – 22 जीत
न्यूजीलैंड – 14 जीत
ड्रॉ – 27

पिच रिपोर्ट

सीरीज में न्यूजीलैंड को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2023-25 ??के अंक न देने के दबाव के साथ भारत के लिए घरेलू लाभ का उपयोग करने और पुणे में स्पिन के अनुकूल सतह पाने की बहुत संभावना है। भारत बनाम न्यूजीलैंड दूसरे टेस्ट के लिए काली मिट्टी की पिच तैयार की गई है, इसलिए संभावना है कि टेस्ट के पहले दिन से ही स्पिन अपनी भूमिका निभाना शुरू कर देगी। इसका मतलब है कि रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव और संभवतः अक्षर पटेल जैसे खिलाड़ी, अगर चुने जाते हैं, तो वे शुरू से ही भारत के लिए बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

प्लेइंग 11

भारत – यशस्वी जयसवाल, रोहित शर्मा (कप्तान), शुबमन गिल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), सरफराज खान, रवींद्र जड़ेजा, वाशिंगटन सुंदर, रविचंद्रन अश्विन, आकाश दीप, जसप्रित बुमराह
न्यूजीलैंड – टॉम लैथम (कप्तान), डेवोन कॉनवे, विल यंग, ??रचिन रविंद्र, डेरिल मिशेल, टॉम ब्लंडेल (विकेट कीपर), ग्लेन फिलिप्स, मिशेल सेंटनर, टिम साउथी, एजाज पटेल, विलियम ओरोर्के

अश्विन आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बने

नाथन लियोन का रिकॉर्ड टूटा

पुणे (एजेंसी)। भारत के स्टार ऑलराउंडर रविचंद्रन अश्विन गुरुवार को पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) स्टेडियम में न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट के दौरान आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के इतिहास में सबसे ज़्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए।

अश्विन ने न्यूजीलैंड के कप्तान टॉम लैथम, सलामी बल्लेबाज विल यंग और बल्लेबाज विल यंग को आउट करने के बाद पहले दिन के शुरुआती सत्र में यह उपलब्धि हासिल की। ??इन तीन विकेटों के साथ अश्विन ने 2019 से 2024 तक के डब्ल्यूटीसी इतिहास में 39 मैचों में 189 विकेट लिए हैं और ऑस्ट्रेलिया के नाथन लियोन को पीछे छोड़ दिया है, जिनके नाम 43 टेस्ट में 187 विकेट थे।

ऑस्ट्रेलिया के टेस्ट कप्तान पैट कमिंस 42 मैचों में 175 विकेट लेकर तीसरे स्थान पर हैं। भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह 30 मैचों में 124 विकेट लेकर सातवें स्थान पर हैं। अश्विन ने अब तक 104 मैचों में 24 से कम की औसत से 530 विकेट लिए हैं, जो उन्हें भारत की सर्वकालिक टेस्ट विकेट लेने वाली सूची में दूसरे स्थान पर रखता है। वह केवल महान अनिल कुंबले से पीछे हैं, जिन्होंने 619 विकेट लिए थे। अपनी शानदार गेंदबाजी के अलावा इस ऑलराउंडर ने 26.44 की औसत से 3,438 रन बनाए हैं जिसमें छह शतक और 14 अर्धशतक शामिल हैं।

सुंदर को दूसरे टेस्ट में मिला मौका, गावस्कर बोले- टीम इंडिया घबरा गई है

पुणे (महाराष्ट्र) (एजेंसी)। दिग्गज भारतीय बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने पुणे में न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के दौरान स्पिनर कुलदीप यादव को टीम से बाहर किए जाने पर निराशा व्यक्त की और कहा कि मेजबान टीम द्वारा स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर को अंतिम एकादश में शामिल करने का कदम 'घबराहट' का संकेत है। न्यूजीलैंड के कप्तान टॉम लाथम ने गुरुवार को पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट संघ (एमसीए) स्टेडियम में भारत के खिलाफ तीन मैचों की श्रृंखला के दूसरे टेस्ट मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। भारत की ओर से तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज, बल्लेबाज केएल राहुल और स्पिनर कुलदीप यादव बाहर बैठे। गर्दन में अकड़न के कारण पहला टेस्ट मैच छोड़ने वाले शुभमन गिल की अंतिम एकादश में वापसी हुई है। आकाश दीप ने सिराज की जगह ली जबकि वॉशिंगटन सुंदर ने मार्च 2021 के बाद से अपने पहले टेस्ट मैच में कुलदीप की जगह ली। टीम इंडिया के लिए यह मैच जीतना बहुत जरूरी है, क्योंकि वे सीरीज में 1-0 से पीछे हैं। रोहित शर्मा की अगुआई वाली टीम को अपने 12 साल के घरेलू वर्चस्व को बनाए रखने और आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में हैट्रिक बनाने की अपनी संभावनाओं को मजबूत करने के लिए यह मैच जीतना होगा क्योंकि उन्हें ऑस्ट्रेलिया से कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। मैच के दौरान ऑन एयर बोलते हुए गावस्कर ने कहा कि बल्लेबाजी को बढ़ावा देने के लिए सुंदर को शामिल करने का कदम घबराहट में उठाया गया कदम था। उन्होंने कहा, मुझे नहीं लगता कि चोट की चिंता होने पर ही बहुत सी टीमें तीन बदलाव करेंगी। वॉशिंगटन सुंदर को शामिल करना बताता है कि वे अपनी बल्लेबाजी को लेकर चिंतित हैं। उनकी गेंदबाजी से ज़्यादा, उन्हें निचले क्रम में उनकी बल्लेबाजी की जरूरत है। हां, न्यूजीलैंड की बल्लेबाजी इकाई में बाएं हाथ के बल्लेबाजों के बारे में बहुत चर्चा हो रही है ।

दक्षिण अफ्रीका 10 साल बाद एशिया में टेस्ट मैच जीता

आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप अंक तालिका में न्यूजीलैंड-इंग्लैंड को पछाड़ा

ढाका (बांग्लादेश) (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका ने 2014 के बाद एशिया में अपनी पहली टेस्ट जीत हासिल की। दक्षिण अफ्रीका गुरुवार को ढाका के शेरे बांग्ला नेशनल स्टेडियम में दो मैचों की श्रृंखला के पहले टेस्ट में बांग्लादेश को हराकर आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप 2023-25 ??स्टैंडिंग में चौथे स्थान पर पहुंच गया।

इस जीत के साथ प्रोटियाज ने अपने अंक प्रतिशत में सुधार करते हुए 47.62 अंक प्राप्त किए जिससे उन्हें न्यूजीलैंड और इंग्लैंड को पीछे छोड़ते हुए स्टैंडिंग में चौथा स्थान प्राप्त करने में मदद मिली। बांग्लादेश की हार से उनका अंक प्रतिशत गिरकर 30.56 हो गया और वे सातवें स्थान पर बने हुए हैं जबकि भारत और ऑस्ट्रेलिया अभी भी स्टैंडिंग में शीर्ष दो स्थानों पर बने हुए हैं।

बांग्लादेश के नजमुल हुसैन शांतो ने टॉस जीतकर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया, लेकिन यह फैसला उल्टा पड़ गया क्योंकि दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाजों और स्पिनरों ने मददगार परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन किया और बांग्लादेश को मात्र 106 रन पर आउट कर दिया।

कगिसो रबाडा, वियान मुल्डर और केशव महाराज ने तीन-तीन विकेट लिए। महमूदुल हसन जॉय ने 97 गेंदों में 30 रन बनाकर बांग्लादेश के लिए शीर्ष स्कोरर रहे। बांग्लादेश के स्पिनरों ने वापसी की, तैजुल इस्लाम (5/122) और मेहदी हसन (2/63) ने मिलकर सात विकेट लिए, लेकिन काइल वेरिन (144 गेंदों में 114 रन, आठ चौके और दो छक्के) के जुझारू शतक और मुल्डर (112 गेंदों में 54 रन, आठ चौके) और डेन पीट (87 गेंदों में 32 रन, दो चौके) के सहयोग से दक्षिण अफ्रीका को 202 रनों की विशाल बढ़त हासिल करने में मदद मिली।

दक्षिण अफ्रीका 308 रनों पर आउट हो गया। दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों ने तीसरी पारी में एक बार फिर से कमान संभाली और रबाडा ने शानदार प्रदर्शन किया जिससे मेजबान टीम को एक समय 112/6 पर पहुंचा दिया।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर ने लगाया आरोप

धोनी और चयनकर्ताओं ने 'करियर के चरम' पर कुचला आत्मविश्वास

नईदिल्ली (एजेंसी)। मनोज तिवारी ने एक दशक पहले भारतीय टीम से निकाले जाने के बाद हुए विवाद के घाव फिर से हरे कर दिए हैं। पूर्व भारतीय बल्लेबाज ने एमएस धोनी और बीसीसीआई की चयन समिति को दोषी ठहराया है। तिवारी ने 2011 में वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे में शतक बनाया था, लेकिन अगले ही मैच में उन्हें टीम से बाहर कर दिया गया। इसके बाद उन्हें आठ महीने बाद भारत के लिए अपना अगला मैच खेलने को मिला। उन्होंने इस फैसले पर अपनी निराशा के बारे में अनगिनत बार बात की है, लेकिन जब भी उन्हें टीम से बाहर किए जाने का मुद्दा फिर से उठता है, तो तिवारी अपनी निराशा जाहिर करने से खुद को नहीं रोक पाते।

तिवारी ने कहा, देखिए, यह बहुत पहले हुआ था। यह अतीत की बात है, लेकिन हां, दुख तो होता ही है। अगर मैं कहूं कि यह दुखद नहीं था तो मैं झूठ बोलूंगा। हम क्या कर सकते हैं? यह जीवन है; लेकिन इसे आगे बढ़ने की जरूरत है। अगर मुझे अपनी आत्मकथा लिखनी पड़े या मैं अपना खुद का पॉडकास्ट बनाऊं, तो मैं सब कुछ बता दूंगा। लेकिन यह आसान नहीं था। जब कोई खिलाड़ी अपने शीर्ष पर होता है, उसका आत्मविश्वास टूट जाता है, तो इससे मानसिकता में बदलाव आता है।

तिवारी ने 2008 से 2015 के बीच भारत के लिए 12 वनडे और तीन टेस्ट मैच खेले, जो उनके और विशेषज्ञों की उनके करियर के बारे में की गई कल्पना से बिल्कुल अलग था। अपनी पीढ़ी के सबसे प्रतिभाशाली युवा प्रतिभाओं में से एक तिवारी को बंगाल क्रिकेट टीम के साथ अपने अद्भुत रिकॉर्ड के लिए 'छोटा दादा' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में सीबी सीरीज में अपनी शुरुआत की, लेकिन एक भूलने योग्य प्रदर्शन का सामना करना पड़ा, ब्रेट ली ने उन्हें 2 रन पर बोल्ड कर दिया।

गत चैंपियन नोवाक जोकोविच पेरिस मास्टर्स से हटे, कहा- उम्मीद है कि अगले साल वापस आऊंगा

पेरिस (एजेंसी)। गत चैंपियन नोवाक जोकोविच ने अगले सप्ताह होने वाले पेरिस मास्टर्स टेनिस टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया है। आयोज इस 37 साल के खिलाड़ी ने पिछले सप्ताह 'सिक्स किंग्स स्लैम' प्रदर्शनी टूर्नामेंट में भाग लिया था। आयोजकों ने जोकोविच के हटने का कोई कारण नहीं बताया है। रैंकिंग में सबसे लंबे समय तक शीर्ष स्थान रहे सर्बिया के इस खिलाड़ी ने एक इंस्टाग्राम पोस्ट में कहा, 'मुझे उन सभी लोगों के लिए खेद है जो मुझे वहां खेलते हुए देखना चाहते थे। वहां सात खिताब जीतने के दौरान मेरी कई अच्छी यादें हैं और उम्मीद है कि अगले साल वापस आऊंगा। जोकोविच ने पेरिस इनडोर टूर्नामेंट में रिकॉर्ड सात खिताब जीते हैं। उनके इसमें नहीं खेलने के फैसले से साल के अंत में होने वाले एटीपी फाइनल्स के लिए क्वालीफाई करने की संभावनाओं को झटका लग सकता है। इसमें शीर्ष आठ खिलाड़ी शामिल होंगे।

जोहोर कप

ऑस्ट्रेलिया ने भारत का विजय रथ रोका

जोहोर बाहरू (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया ने बुधवार को सुल्तान ऑफ जोहोर कप में 4-0 की जीत दर्ज कर भारत के विजय रथ को रोक दिया।

खेले गए मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया के पैट्रिक एंड्रयू ने (29वें मिनट में) गोल कर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। ऑस्ट्रेलियाई खिलाडियों ने मैच के दौरान आक्रामक रूख अख्तियार किया। डेकिन स्टैंगर ने (33वें, 39वें, 53वें मिनट में) गोल कर हैट्रिक बनाई। जबकि भारत की फॉरवर्ड लाइन ऑस्ट्रेलियाई रक्षापंक्ति तोड़ने के लिए संघर्ष करती देखी गई। भारतीय रक्षापंक्ति ने शानदार खेल का मुजाहिरा करते हुए पहले क्वार्टर में ऑस्ट्रेलिया हमलों विफल किया।

ऑस्ट्रेलिया के पैट्रिक एंड्रयू ने (29वें मिनट में) गोल कर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। इसके बाद उत्साहित डेकिन ने 33वें मिनट में गोलकर बढ़त को दोगुना कर दिया। उन्होंने भी 39वें मिनट अपना दूसरा गोला दागा। डेकिन ने 53वें मिनट में गोलकर अपनी हैट्रिक बनाई। बढ़त को 4-0 पहुंचा दिया। कई अवसर मिलने के बावजूद भारतीय टीम गोल नहीं कर पाई। इस हार के बावजूद भारत नौ अंकों के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर बना हुआ है जबकि ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड के बाद तीसरे स्थान पर है।

रबाडा ने मोर्ने मोर्कल को पीछे छोड़ा

सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले शीर्ष 5 खिलाड़ियों में शामिल हुए

ढाका (बांग्लादेश) (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कैगिसो रबाडा ने मोर्ने मोर्कल को पीछे छोड़ते हुए प्रोटियाज के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पांचवें सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए। रबाडा ने ढाका में बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। ??बांग्लादेश की दूसरी पारी में रबाडा ने 17.5 ओवर में 6/46 विकेट लिए, जिसमें महमूदुल हसन जॉय, शादमान इस्लाम, मोमिनुल हक, मुशफिकुर रहीम, मेहदी हसन मिराज और नईम हसन के विकेट शामिल हैं।

अब 231 अंतरराष्ट्रीय मैचों में रबाडा ने 24.18 की औसत से 536 विकेट लिए हैं, जबकि मोर्कल ने 535 विकेट लिए हैं, जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन 7/112 रहा है। उन्होंने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में 20 बार चार विकेट, 17 बार पांच विकेट और चार बार 10 विकेट लिए हैं। दक्षिण अफ्रीका के लिए सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय विकेट लेने वाले गेंदबाज दिग्गज ऑलराउंडर शॉन पोलक हैं, जिन्होंने 414 मैचों में 23.63 की औसत से 823 विकेट लिए हैं, जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 7/87 रहा है। उन्होंने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में 35 बार चार विकेट, 21 बार पांच विकेट और एक बार 10 विकेट लिए हैं।

बांग्लादेश की पहली पारी में रबाडा 300 टेस्ट विकेट तक पहुंचने वाले छठे दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाज बने। उन्होंने 11,817 गेंदों में यह उपलब्धि हासिल की, जो किसी भी गेंदबाज द्वारा अब तक का सबसे तेज आंकड़ा है। उनके नाम फिलहाल 308 टेस्ट विकेट हैं। पहली पारी में उन्होंने 11 ओवर में 26 रन देकर 3 विकेट लिए। इस मैच में रबाडा के 72 रन पर 9 विकेट से पहले, एशिया में टेस्ट में आठ या उससे अधिक विकेट लेने वाले दक्षिण अफ्रीका के आखिरी तेज गेंदबाज डेल स्टेन थे जिन्होंने 2014 में गॉल में श्रीलंका के खिलाफ 9/99 से गेंदबाजी की थी। यह भारतीय उपमहाद्वीप में उनकी आखिरी टेस्ट जीत भी है।

अब दक्षिण अफ्रीका को जीत के लिए 107 रनों का लक्ष्य दिया गया है। पहले बल्लेबाजी करने के बाद बांग्लादेश केवल 106 रन ही बना सका, जिसमें महमूदुल हसन 30 रन बनाकर शीर्ष स्कोरर रहे। रबाडा, वियान मुल्डर और केशव महाराज ने तीन-तीन विकेट लिए। अपनी पहली पारी में दक्षिण अफ्रीका ने काइल वेरिन (114) के शतक और मुल्डर (54) के अर्धशतक की बदौलत 202 रनों की बढ़त हासिल की, वे 307 रन पर आउट हो गए और 105 रन की बढ़त हासिल कर ली तथा दक्षिण अफ्रीका को जीत के लिए 106 रन का लक्ष्य दिया गया।

संक्षिप्त समाचार

पिंपरी चिंचवड़ के भोसरी इलाके में बड़ा हादसा

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के पिंपरी चिंचवड़ के भोसरी इलाके में एक दर्दनाक हादसा हुआ है। गुरुवार को निर्माणाधीन पानी की टंकी का एक हिस्सा अचानक गिर गया, जिससे तीन मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई और सात अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के समय मजदूर निर्माण कार्य में जुटे थे। प्रशासन और राहत टीमों ने तेजी से मौके पर पहुंचकर घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उनका इलाज चल रहा है। शुरुआती जांच में यह सामने आया है कि सुरक्षा मानकों की अनदेखी की वजह से यह हादसा हुआ। स्थानीय पुलिस और नगर निगम के अधिकारी मामले की जांच कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने घटना पर दुख व्यक्त करते हुए पीड़ितों के परिवारों को हरसंभव सहायता का आश्वासन दिया है।

बाबा सिद्दीकी हत्याकांड मामले में पुणे से तीन और गिरफ्तार

पुणे, एजेंसी। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता बाबा सिद्दीकी के हत्याकांड मामले में ताबड़तोड़ गिरफ्तारियां चल रही हैं। इसी सिलसिले में बुधवार देर शाम पुणे से तीन लोगों की गिरफ्तारी हुई है। दरअसल, महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री बाबा सिद्दीकी की बांद्रा में तीन लोगों ने 12 अक्टूबर को गोली मारकर हत्या कर दी थी। एनसीपी नेता पर हमला उस वक्त किया गया था, जब वे अपने बेटे जीशान सिद्दीकी के कार्यालय के पास थे। उनकी हत्या की जिम्मेदारी गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के गिरोह ने ली है। इस मामले में पुलिस कई लोगों को गिरफ्तार किया है। इसी सिलसिले में महाराष्ट्र से पुणे से तीन और लोगों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार हुए आरोपी पुणे के रहने वाले हैं। जिनकी पहचान शिवणे के निवासी रूपेश राजेंद्र मोहोल (22), उत्तम नगर निवासी करण राहुल साल्वे (19) और शिवम अरविंद कोहाड़ (20) के रूप में हुई है। इससे पहले मुंबई क्राइम ब्रांच ने बुधवार को एक शख्स को हरियाणा के कैथल से गिरफ्तार किया था। गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम अमित उर्फ नाथी बताया जा रहा है, जो कलायत के बाता गांव का निवासी है।अमित पर पहले से कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। जानकारी के मुताबिक, बाबा हत्याकांड मामले में जीशान अख्तर की पहचान चौथे मुख्य आरोपी के रूप में हुई है। जीशान बाबा की हत्या करने के लिए बाकी तीनों शूटर्स को बाहर से डायरेक्शन दे रहा था। वह फरार है। अमित पर आरोप है कि उसने आरोपी जाशीन अख्तर को करनाल में एक मकान किराए पर लेकर ठहराया था। बाबा सिद्दीकी हत्याकांड से केवल दो महीने पहले 15 दिन से अधिक दोनों आरोपी एक साथ रहे थे। इस मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस आरोपी के अन्य कनेक्शनों की जांच में जुट गई है। गौरतलब है कि बाबा सिद्दीकी की हत्या मामले में 19 अक्टूबर को मुंबई पुलिस ने उनके साथ मौजूद सुरक्षा गार्ड को निलंबित कर दिया था। बाबा सिद्दीकी की सुरक्षा में तैनात कांस्टेबल श्याम सोनावणे ने वारदात के वक्त किसी भी प्रकार की कार्रवाई नहीं की। पुलिस के अनुसार, कांस्टेबल श्याम सोनावणे ने न तो आरोपियों को रोकने की कोशिश की और न ही बाबा सिद्दीकी को बचाने की। इस मामले में आंतरिक जांच भी चल रही है।

विजयपुरा में नुमाइश मैदान में झूले से गिरकर महिला की मौत

बेंगलुरु, एजेंसी। कुछ दोस्तों के साथ नुमाइश मैदान गई थी। पुलिस के अनुसार, पीड़िता का झूले पर लगा 'सेफ्टी बार' टूट गया और उसने जो सेफ्टी बेल्ट पहनी थी वह भी अलग हो गयी, जिसके कारण वह ऊंचाई से नीचे गिर गई। विजयपुरा एक नुमाइश मैदान में 'रेंजर' झूले से गिरने के बाद 21 वर्षीय एक महिला की सिर में चोट लगने से मौत हो गई। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि यह घटना रविवार शाम करीब सात बजे हुई।

बेहाली उपचुनाव टिकट को लेकर विवाद, विपक्षी एकता में आई दरार !

गुवाहाटी, एजेंसी। झकांग्रेस के नेतृत्व वाला विपक्षी मंच असम संयुक्त मोर्चा (अ.ख.म) टूट के कगार पर है. बुधवार को प्रदेश कांग्रेस प्रमुख भूपेन बोरा के असम संयुक्त मोर्चा के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिए जाने के बाद से मोर्चा की स्थिति डावांडोल दिख रही है. भूपेन बोरा के इस्तीफे के साथ ही यह तय हो गया है कि कांग्रेस ने असम संयुक्त मोर्चा से नाता तोड़ लिया है.

कांग्रेस पार्टी ने असम संयुक्त मोर्चा को बचाने की पहल की, जो कांग्रेस के नेतृत्व वाली विपक्षी एकता का साझा मंच है. असम में 13 नवंबर को होने वाले उपचुनावों के दौरान चार विधानसभा सीटों के साथ बेहाली की उम्मीदवारी के कारण इसे भंग होने से बचाया जा रहा है. विपक्षी मंच को एकमत करने के प्रयास में, एआईसीसी ने बेहाली से अपना उम्मीदवार नहीं उतारने का फैसला किया और एएसओएम से सीपीआई (एमएल) के अपने समर्थित उम्मीदवार के बजाय कोई दूसरा उम्मीदवार उतारने को कहा है. लेकिन इस कदम का कोई नतीजा नहीं निकला और आखिरकार बोरा को मोर्चा के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना

पड़ा.

बोरा ने अपना त्यागपत्र मोर्चा के सचिव और असम जातीय परिषद के अध्यक्ष लुरिनज्योति गोगोई को भेजा है. साथ ही उन्होंने अपने त्यागपत्र की एक प्रति कांग्रेस के राष्ट्रीय नेतृत्व को भी भेजी है. अपने त्यागपत्र में बोरा ने कहा है कि, उम्मीदवारी को लेकर उन पर काफी दबाव है. असम की पांच सीटों में से बेहाली उपचुनाव के लिए कांग्रेस ने उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है.

लोकसभा में विपक्ष के उपनेता और कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने वकालत की थी कि, कांग्रेस को बेहाली से अपना उम्मीदवार खड़ा करना चाहिए. असम में 2026 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से बाहर करने के उद्देश्य से गठित असम संयुक्त मोर्चा पिछले कुछ दिनों से मुश्किल में है. वह इसलिए क्योंकि कांग्रेस ने उम्मीदवारी को लेकर अपने पत्ते मंच के सामने नहीं खोले हैं. इस बीच असम संयुक्त मोर्चा द्वारा गठित पांच सदस्यीय चयन समिति ने सीपीआई (एमएल) नेता बिबेक दास को मंच का उम्मीदवार बनाया और उनके नाम को मंजूरी के लिए प्रमुख हितधारक कांग्रेस के समक्ष प्रस्तावित किया.

माना जा रहा है कि, इस कदम को कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन बोरा का समर्थन प्राप्त था, जो असम सोमा को बरकरार रखने के लिए उत्सुक थे. लेकिन गौरव गोगोई, जिनकी राष्ट्रीय नेतृत्व की नजरों में अहमियत बढ़ गई है, ने जयंति बोरा को आगे बढ़ाया, जो एक नेता हैं और जिन्होंने निर्वाचन क्षेत्र से भगवा टिकट से वंचित होने के कारण भाजपा छोड़ दी थी. कांग्रेस की राज्य इकाई ने अपने दो प्रमुख नेताओं को टिकट आवंटन को लेकर दो अलग-अलग कोनों में देखा और चीजें और अधिक धुंधली हो गईं.

यहां तक कि, असम संयुक्त मोर्चा ने भी कांग्रेस को मंगलवार सुबह 10 बजे तक अपना रुख स्पष्ट करने की समय सीमा दी थी. अंत में, गठबंधन को बरकरार रखने के हित में, कांग्रेस ने पूरी चुनावी उम्मीदवार प्रक्रिया में एक मोड़ का प्रस्ताव रखा. यह बेहाली में विपक्षी मंच से एक उम्मीदवार को मैदान में उतारने के लिए तैयार थी. लेकिन उम्मीदवार को बदलने के लिए कहा. कांग्रेस के उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार, असम कांग्रेस के प्रभारी जितेंद्र सिंह ने भी मंगलवार सुबह इस संबंध में विपक्षी गठबंधन को एक पत्र लिखा. पत्र में कहा गया है कि संयुक्त मोर्चा उम्मीदवार तो दे सकता है, लेकिन वह बिबेक दास नहीं होना चाहिए।

बेंगलुरु एयरपोर्ट पर लाउंज एक्सेस पाने के लिए महिला ने डाउनलोड किया ऐप, क्रेडिट कार्ड से उड़े 87000 रुपये

बेंगलुरु , एजेंसी। आज के समय में तरह-तरह के स्कैम सामने आने लगे हैं। ताजा मामला बेंगलुरु एयरपोर्ट से सामने आया है। बता दें कि बेंगलुरु एयरपोर्ट पर एक महिला अपनी फ्लाइट के लिए पहुंची थी। फ्लाइट पकड़ने से पहले महिला ने लाउंज में एक्सेस करने की कोशिश की लेकिन वह नाकाम रही।चूंकि महिला के पास क्रेडिट कार्ड नहीं था, इसलिए उसने प्रवेश पाने के लिए एक क्रेडिट कार्ड की फोटो दिखाई। इस दौरान महिला को एक लाउंज स्टाफ ने सुरक्षा कारणों के चलते एक ऐप डाउनलोड करने और अपने चेहरे की स्क्रीनिंग करवाने के लिए कहा। महिला ने सभी निर्देशों का पालन किया, लेकिन क्रेडिट कार्ड बिल मिलने के बाद ही उसे धोखाधड़ी का पता चला। 29 सितंबर को लाउंज पास ऐप डाउनलोड करने के बावजूद, महिला ने लाउंज सुविधाओं का इस्तेमाल नहीं किया। इसके बजाय उसने अपनी उड़ान से पहले स्टारबक्स में कॉफी पी।अपनी यात्रा के कुछ दिनों बाद, लोगों ने उसे बताया कि वे उससे फोन पर संपर्क नहीं कर पा रहे हैं। शुरू में, महिला को लगा कि शायद एयरटेल के नेटवर्क के कारण ऐसा हो रहा है, जिसे लेकर कई महीनों से उसे समस्या हो रही थी। अब वायरल हो रहे वीडियो में महिला ने कहा कि पिछले कुछ महीनों से एयरटेल के बुरे कनेक्शन के कारण, मैंने मान लिया कि यह खराब सिग्नल के कारण है। फिर किसी ने मुझसे कहा कि कोई पुरुष तुम्हारा फोन क्यों उठा रहा है। लेकिन उस समय वह अस्पताल में पारिवारिक स्थिति को लेकर व्यस्त थीं, इसलिए उन्होंने इस बात को नजरअंदाज कर दिया। लेकिन उन्हें तब पता चला कि उनके क्रेडिट कार्ड से 87,000 रुपये से अधिक की राशि काट ली गई है और उसे फोनपे अकाउंट में ट्रांसफर कर दिया गया है।

अब उन्हें संदेह है कि घोटालेबाजों ने ऐप के माध्यम से उनके फोन को हैक कर लिया, कॉल फॉरवर्डिंग को इनेबल किया और संभवतः अनधिकृत लेनदेन को पूरा करने के लिए ओटीपी को इंटरसेप्ट किया।

उसने बताया, यह लाउंज पास ऐप जिसे उन्होंने मुझे डाउनलोड करने के लिए कहा था, स्क्रीन शेयरिंग। वे मेरे फोन में गए, मेरी सेटिंग्स में गए, उन्होंने कॉल-फॉरवर्डिंग ऑन कर दी, इसलिए मुझे कोई कॉल नहीं आई। मुझे नहीं पता कि मेरे कितने ओटीपी उन तक पहुँचे हैं।

दोस्त ही निकले दुश्मन, गाजियाबाद के प्रॉपर्टी डीलर का कुत्ते के पट्टे से घोंटा गला, फिर कार समेत जलाया

ग्रेटर नोएडा/दादरी , एजेंसी। गाजियाबाद के गोविंदपुरम में मंगलवार शाम को प्रॉपर्टी डीलर संजय यादव की हत्या करने के बाद दोनों आरोपी दोस्त सात घंटे तक कार में शव लेकर घूमते रहे। रात में दादरी क्षेत्र के नगला नैनसुख गांव के समीप मुख्य सड़क से अंदर झाड़ियों में उन्होंने कार में आग लगाकर शव जला दिया, ताकि लोगों को यह हादसा लगे। पुलिस ने बताया कि गोविंदपुरम स्थित एक आरोपी के मकान में विशाल राजपूत और जीत चौधरी ने प्रॉपर्टी डीलर संजय यादव के साथ बैठकर बीयर पी। इसके बाद आरोपियों ने मंगलवार शाम को चार बजे मकान से कुत्ते का पट्टा उठाया और गला घोंटकर संजय यादव की हत्या कर दी।

आरोपियों ने इसके बाद संजय के शव को उसी की फॉर्च्यूनर कार में डाल लिया। वे सात घंटे तक कार में शव लेकर इधर-उधर घूमाते रहे। आरोपी कार को लेकर गाजियाबाद के गोविंदपुरम से करीब 31 किलोमीटर दूर दादरी क्षेत्र में रात करीब 11 बजे नगला नैनसुख गांव के समीप पहुंचे और कार को मुख्य सड़क से अंदर झाड़ियों की तरफ ले गए। यहां आरोपियों ने कार में आग लगा दी। उन्होंने संजय यादव का शव भी उसमें जला दिया।

आरोपियों ने पुलिस को बताया कि वे कार में शव को डिग्गी में डालकर लाए थे। उसके ऊपर कंबल डाल लिया था, लेकिन घटना के समय संजय का शव चालक सीट पर रख दिया था, ताकि लगे गाड़ी में आग जलने पर चालक जिंदा जल गया। आरोपियों का मकसद घटना को हादसे का रूप देना था। कार में आग लगाते समय एक आरोपी भी थोड़ा झुलस गया। वहीं, सवाल उठ रहा है कि गाजियाबाद से लेकर गौतमबुद्ध नगर की सीमा में आरोपी फॉर्च्यूनर कार में प्रॉपर्टी डीलर का शव लेकर घूमते रहे, लेकिन कहीं भी पुलिस ने कार को चेकिंग के लिए नहीं रोका, जबकि शव गाड़ी की डिग्गी में पड़ा था। सोशल मीडिया पर फॉर्च्यूनर कार का जलने का वीडियो वायरल हुआ। वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि कार में आग टंकी की तरफ से लगी थी। इसके बाद धीरे-धीरे आग ने पूरी गाड़ी को चपेट में ले लिया और गाड़ी जलकर राख हो गई। बताया जा रहा है कि आरोपी बोतल में भी पेट्रोल लेकर आए थे। बाइक का पेट्रोल छिड़क कर लाइटर से कार में आग लगाई गई।

ग्रेटर नोएडा के एडीसीपी अशोक कुमार ने बताया कि दादरी पुलिस ने प्रॉपर्टी डीलर के परिजनों की शिकायत पर शुरुआत में जीरो एफआईआर दर्ज की। पुलिस ने आरोपी विशाल राजपूत और जीत चौधरी को गिरफ्तार कर घटना का खुलासा किया। इस केस की विस्तृत जांच गाजियाबाद पुलिस द्वारा की जाएगी। गाजियाबाद के गोविंदपुरम में हत्या की घटना को अंजाम दिया गया था। हत्या करने के बाद आरोपी शव को दादरी क्षेत्र में लेकर आए थे।

अठन्नी भारी पड़ गई... पोस्ट ऑफिस ने कस्टमर को नहीं दिए 50 पैसे, अब देने होंगे 15 हजार रुपये

चेन्नई, एजेंसी। भारतीय डाक सेवा को एक उपभोक्ता को पचास पैसे राउंड आफ (पूर्णांक) करना महंगा पड़ा। उसके बदले में उपभोक्ता फोरम ने उपभोक्ता को रिफंड लौटाने के साथ ही इस सरकारी विभाग पर 15 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है। हर्जाने के तौर पर दस हजार रुपये मानसिक परेशानी, गलत व्यापारिक तरीकों और सेवा में कमी के चलते वसूले गए हैं। कांचीपुरम जिले में एक उपभोक्ता फोरम ने डाक विभाग को पांच हजार रुपये बतौर अदालती कार्यवाही पर हुए खर्च के लिए देने को कहा है। शिकायतकर्ता ए.मनाशा के अनुसार, उसने 13 दिसंबर, 2023 को 30 रुपये नकद देकर पोझिचालुर पोस्ट ऑफिस से एक रजिस्टर्ड डाक भेजनी थी, लेकिन उसकी रसीद पर केवल 29.50 रुपये की रकम दिखा रही थी। लिहाजा, उसने वह पूरी रकम यूपीआई के जरिये देने की पेशकश की, लेकिन उसमें भी कुछ तकनीकी कारणों से डाक के भुगतान को डिक्लाइन दिखा रहा था। शिकायतकर्ता ने अपनी शिकायत में कहा कि प्रतिदिन लाखों लेन-देन होते हैं, अगर पूरी धनराशि लेकर भी कम दिखाई जाती रही तो सरकार को राजस्व का बहुत नुकसान होगा। उन्होंने इसे अवैध करार देते हुए इससे उन्हें गंभीर मानसिक परेशानी की बात कही। वहीं, डाक विभाग ने उपभोक्ता फोरम को बताया कि उस समय कुछ तकनीकी कारणों से डिजिटल भुगतान स्वीकार नहीं हो रहा था। इसलिए उनसे कैश लिया गया था। उन्होंने बताया कि पोस्टल साफ्टवेयर में स्वत ही 50 पैसे राउंड आफ हो रहे थे, जबकि वह राशि काउंटर एकाउंट सबमिशन में अलग से दिखा रही थी, इसलिए उनकी शिकायत स्वीकार करने योग्य नहीं है। उधर, डाक विभाग निवेशकर्ताओं के लिए खुशखबरी लेकर आया है। दरअसल, डाक विभाग एसआईपी (सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) की सुविधा भी देगा। डाक विभाग ने इसको लेकर ऐप व पोर्टल तैयार कर लिया है। कहा जा रहा है कि इस साल के अंत तक ये सुविधा दी जा सकती है। डाक विभाग ने ग्राहकों को एक और सुविधा दी है। इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक (आईपीपीबी) और डा कघर में संचालित खातों का आपस में लिंकअप करके किसी भी समय बड़ी धनराशि का भुगतान कर सकेंगे।

उत्तर कोरिया ने सियोल के राष्ट्रपति भवन परिसर में एक बार फिर कचरे से भरे गुब्बारे गिराए

प्योंगयाग, एजेंसी। राष्ट्रपति यून और उनकी पत्नी किम कियोन ही की आलोचना वाले पर्चे भी थे। समाचार पत्र में बताया गया कि सियोल के योंगसान जिले में ये पर्चे बिखरे हुए मिले थे और यहीं यून का राष्ट्रपति कार्यालय है। उत्तर कोरिया ने एक बार फिर दक्षिण कोरिया के सियोल स्थित राष्ट्रपति भवन परिसर में बृहस्पतिवार को कचरे से भरे गुब्बारे गिराए। दक्षिण कोरिया के अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

उत्तर कोरिया ने मई के अंत में दक्षिण कोरिया की ओर कचरे से भरे गुब्बारे भेजना शुरू किया था, जिसके बाद से उसने अब दूसरी बार इस तरह के गुब्बारे भेजे। दक्षिण कोरिया की राष्ट्रपति सुरक्षा सेवा ने बताया कि उत्तर कोरिया की ओर से राष्ट्रपति भवन परिसर में बृहस्पतिवार को कचरे से भरे गुब्बारे गिराए गए, हालांकि इनमें कोई खतरनाक वस्तु नहीं थी। यह तत्काल पता नहीं चल पाया कि उत्तर कोरियाई गुब्बारे के गिरने के समय राष्ट्रपति यून सुक-योल परिसर में मौजूद थे या नहीं।

विशेषज्ञों का कहना है कि उत्तर कोरिया के पास खास स्थानों को निशाना बनाकर गुब्बारे गिराने के लिए संभवतः अत्याधुनिक तकनीक का अभाव है। दक्षिण कोरिया के 'डोंग-ए इल्बो' समाचार पत्र में बृहस्पतिवार को प्रकाशित खबर में बताया गया कि उत्तर कोरिया ने सियोल स्थित राष्ट्रपति भवन परिसर में कचरे से भरे गुब्बारे गिराए।

जस्टिन ट्रूडो गंवा सकते हैं पद, सांसदों ने दे दिया 4 दिन का अल्टीमेटम

ओटावा, एजेंसी। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। अब खबर है कि लिबरल पार्टी के नेताओं ने ही उनके इस्तीफे की मांग कर दी है। साथ ही पार्टी के नेता का पद छोड़ने के लिए ट्रूडो को डेडलाइन भी थमा दी गई है। खास बात है कि यह ऐसे समय पर हो रहा है, जब भारत और कनाडा के रिश्ते तल्ख हो गए हैं। ट्रूडो ने एक मामले की जांच में भारत के उच्चायुक्त रहे संजय कुमार वर्मा को पर्सन ऑफ इंटरेस्ट बताया था।

समाचार एजेंसी ने सीबीसी न्यूज के हवाले से बताया है कि लिबरल पार्टी में ट्रूडो को हटाए जाने की कवायद तेज हो गई है। हाल ही में बंद कमरे में हुई बैठक के दौरान सांसदों ने ट्रूडो के सामने अपने परेशानियां रखीं। खबर है कि ट्रूडो अपनी ही पार्टी में असंतोष का सामना कर रहे हैं। सांसदों ने उन्हें भविष्य पर फैसला लेने के लिए 28 अक्टूबर की तारीख दे दी है।

खबरें हैं कि 24 सांसदों ने ट्रूडो को लिबरल चीफ के पद से हटाने के लिए हस्ताक्षर किए हैं। बुधवार को हुई बैठक के दौरान ब्रिटिश कोलंबिया से सांसद पैट्रिक वीलर ने ट्रूडो के इस्तीफे के पक्ष में दस्तावेज पेश किया। इसमें बताया गया था कि जब अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया था, तब डेमोक्रेट्स को बढ़त मिलती दिखी थी। दस्तावेज में कहा गया है कि ऐसा ही लिबरल पार्टी के मामले में भी हो सकता है। रिपोर्ट के अनुसार, 3 घंटे लंबी चली बैठक में किसी भी कैबिनेट मंत्री ने ट्रूडो से पद छोड़ने की

अपील नहीं की। वहीं, कहा जा रहा है कि कुछ सांसद ट्रूडो के समर्थन में भी आए। माना जाता है कि कनाडा में सियासी घमासान की एक वजह भारत के साथ तनाव भी हो सकते हैं। बीते साल ट्रूडो ने संसद में खालिस्तानी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के तार भारत सरकार से जुड़े होने की आशंका जताई थी। इसके बाद से ही दोनों देशों के रिश्ते तल्ख हो गए थे।

अमेरिका में भारतीयों को बड़ा तोहफा, दीवाली पर छुट्टी का ऐलान

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में दीवाली पर भारतीयों को बड़ा तोहफा मिला है। यहां पहले राज्य ने दीवाली पर आधिकारिक छुट्टी का किया ऐलान कर भारतीय अमेरिकी नागरिकों को खुश कर दिया है। पेंसिल्वेनिया के गवर्नर जोश शापिरो ने सोमवार को एक कानून पर हस्ताक्षर किए, जिससे दिवाली को पेंसिल्वेनिया में आधिकारिक अवकाश के रूप में मान्यता मिली।गवर्नर शापिरो ने कहा, इस बिल पर हस्ताक्षर करके, हम दिवाली के महत्व को पहचानने के साथ-साथ पेंसिल्वेनिया में एशियाई अमेरिकी समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और योगदान का जश्न मना रहे हैं। यह कानून राज्य सेनाटे में सेनेटर ग्रेग रॉथमैन (आर) और सेनेटर निकिल सावल (डी) द्वारा प्रस्तावित किया गया था। शापिरो के कार्यालय के अनुसार, दिवाली को दक्षिण एशियाई संस्कृति में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक माना जाता

है। रॉथमैन ने कहा, दिवाली को आधिकारिक राज्य अवकाश के रूप में मान्यता देने से हमारी पेंसिल्वेनिया की सांस्कृतिक विविधता का जश्न मनाया जाएगा।

उन्होंने कहा कि दिवाली, जिसे रोशनी का त्योहार कहा जाता है, मुख्य रूप से भारत और दक्षिण एशिया में मनाया जाता है। यह पाँच दिनों तक चलने वाला त्योहार है, जिसमें मुख्य समारोह तीसरे दिन होता है। उन्होंने कहा कि इस त्योहार के दौरान लोग अपने प्रियजनों के साथ समय बिताते हैं और अच्छाई की बुराई पर, ज्ञान की अज्ञानता पर और आंतरिक प्रकाश की आध्यात्मिक अंधकार पर विजय का जश्न मनाते हैं। दिवाली की उत्सव में पटाखे छोड़ना, दीपक जलाना और मिट्टी के दीयों को सजाना शामिल है। सावल ने कहा, हम सभी को अपनी संस्कृतियों को पहचानने और सम्मानित करने का हक है।

तुर्की आतंकी हमले का सीसीटीवी फुटेज आया सामने, जवाब में 32 कुर्द आतंकवादियों के ठिकानों पर किया हमला

अंकारा, एजेंसी। तुर्की में हुए एक बड़े आतंकी हमले में पांच लोगों की जान चली गई और कई अन्य घायल हो गए। हथियारबंद हमलावरों ने अंकारा के पास तुर्की एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (टीयूएसएएस) के मुख्यालय को निशाना बनाया। गृह मंत्रालय ने बताया कि 5 की मौत हो गई है और 22 लोग घायल हुए हैं, जिनमें से तीन की हालत गंभीर है और उन्हें गहन देखभाल दी जा रही है।

यह हमला तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोआन की 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ चर्चा के समय हुआ। अल जजीरा के अनुसार एर्दोआन ने इस घटना की निंदा करते हुए इसे घृणित आतंकवादी हमला बताया। पूरी घटना सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई, जिसमें हमले से कुछ मिनट पहले हथियारबंद बंदूकधारी टीयूएसएएस कार्यालयों के पास पहुंचे। आतंकी हमले से हिलने के कुछ घंटों बाद, तुर्की ने कहा कि उसने इराक और सीरिया में कुर्दिश उग्रवादी ठिकानों पर हमले शुरू कर दिए हैं। ये हमले तब किए गए जब अंकारा ने आतंकवादी हमले के लिए उग्रवादी समूह को दोषी ठहराया, जिसमें तुर्की एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज परिसर में पांच लोग मारे गए थे। बुधवार को हुए इस हमले में विस्फोट और गोलीबारी दिखाने वाले क्लिप सोशल मीडिया पर छाए हुए हैं। एक वीडियो में, एक बंदूकधारी मुख्यालय की पार्किंग में घुसता हुआ दिखाई दे रहा है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@ pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129